DESIGNED ACCORDING TO
NEP 2020 GUIDELINES

Neo Star

अंशांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

Introducing
CHAPTERWISE
VIDEO LECTURES

7

• डॉ० गीता रानी
• शोभा जैन

Series Code : 1502

digibank

For Instructions turn the book
or visit : www. vardhmanbooks.com

Neo Star

अयांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

7

लेखिकाएँ

डॉ० गीता रानी

एम० ए० (हिंदी) गोल्ड मेडलिस्ट

पी-एच० डी०

शोभा जैन

(एम.एड.)

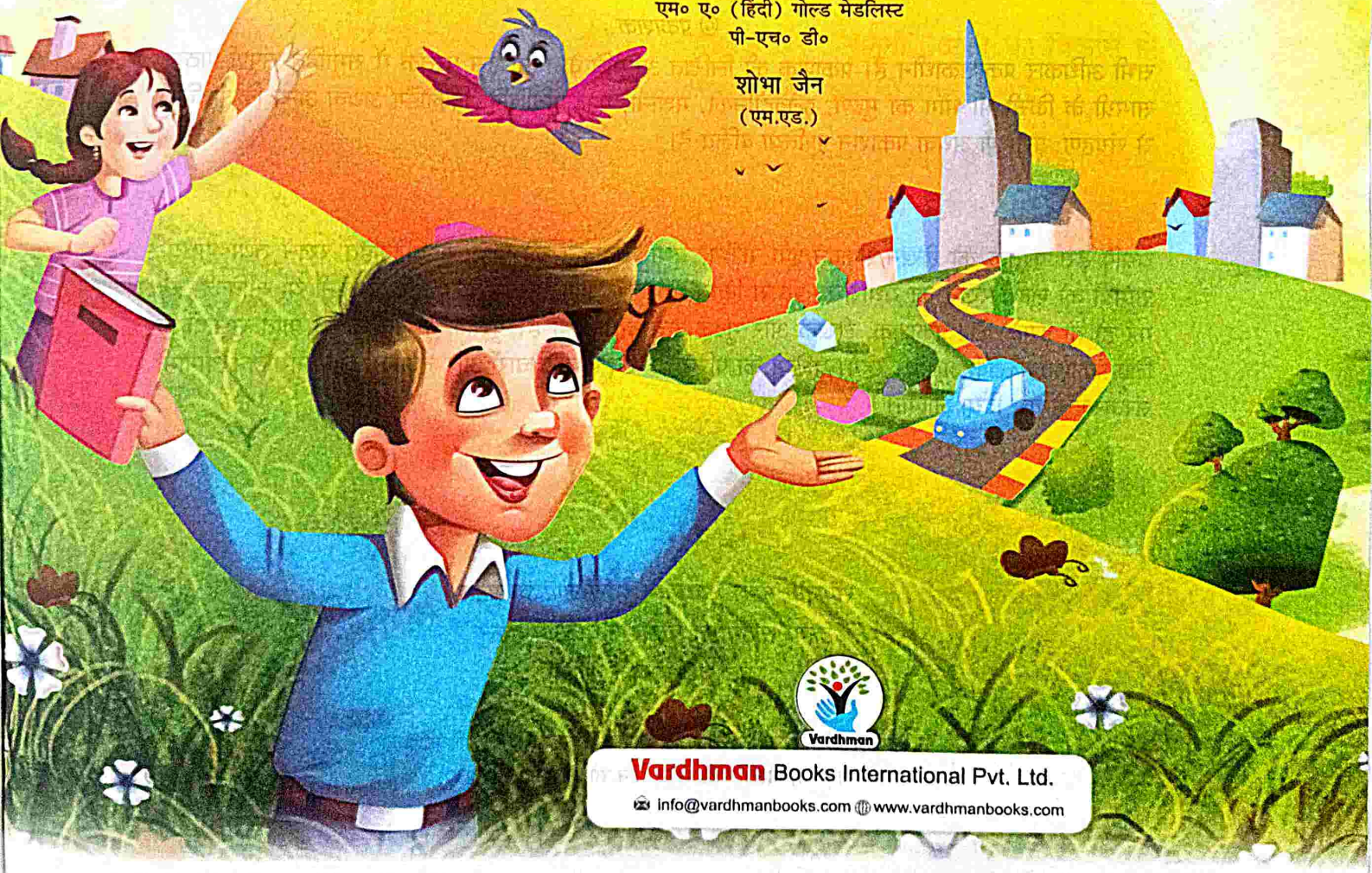

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

info@vardhmanbooks.com www.vardhmanbooks.com

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Branch Office : Plot No. 16, Sector 10-C, IInd floor,
Vasundhara, Delhi/NCR—201012
info@vardhmanbooks.com
www.vardhmanbooks.com
Toll Free No. 1800-121-9968

© प्रकाशक :

सभी अधिकार प्रकाशकाधीन हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक में समाहित संपूर्ण पाठ्य-सामग्री के किसी भी भाग का मुद्रण, इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य किसी विधि से संग्रहण, प्रसारण अथवा प्रकाशन पूर्णतया वर्जित है।

यद्यपि इस पुस्तक को लेखन/संपादन/प्रूफ रीडिंग, तथा चित्रांकन की दृष्टि से त्रुटिरहित रखने तथा पाठ्य-सामग्री को शुद्ध रखने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथापि भूलवश कोई त्रुटि, मशीनी या यांत्रिकी, रह गई हो तो इसके लिए प्रकाशक, लेखक और मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। पुस्तक के सुधार हेतु प्राप्त सुझावों के लिए प्रकाशक/लेखक आभारी रहेंगे। त्रुटियों का परिमार्जन एवं प्राप्त विचारों और सुझावों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा।

संपादक मंडल : वर्धमान बुक्स संपादक मंडल
टाइप सेटिंग एवं चित्रांकन वर्धमान बुक्स
मुद्रक वर्धमान प्रिंट लाइन

रजिस्टर्ड ऑफिस : प्लॉट नं. 2, मोहकमपुर इंडस्ट्रियल एरिया,
फेज़-II, दिल्ली रोड, मेरठ (एन.सी.आर.)-250002

आमुख

प्रस्तुत हिंदी पाठमाला अयांश बालकों के मानसिक विकास की प्रक्रिया को रचनात्मक रूप से विविध स्तरों पर अग्रसर करने में एक महत्वपूर्ण शृंखला है।

इसे पूर्णतया संशोधित 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के अनुरूप पाठ्यक्रम पर आधारित किया गया है। पाठमाला में हिंदी साहित्य की विविध विधाओं जैसे— कविता, एकांकी, कहानी, संस्मरण, पत्र, जीवनी, डायरी, चित्रकथा, लोककथा आदि का समावेश किया गया है। राष्ट्र, समाज और संस्कृति के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति भी विद्यार्थियों को सजग करने की चेष्टा इसमें निहित है।

ज्ञानवर्धन के साथ-साथ रोचकता और चित्रात्मकता इन पुस्तकों को अभिप्राय: पूर्ण बनाते हैं। भाषा की बारीकियों को सहज रूप से समझाने के उद्देश्य से व्याकरण को स्वाभाविक व रोचक रीति से समाहित किया गया है।

भाषा के सभी कौशलों जैसे— 'पढ़ना', 'लिखना', 'बोलना' और 'सुनना', आदि का विकास हो सके, इस उद्देश्य को इस पाठमाला की रचना के दौरान विशेष लक्ष्य में रखा गया है।

प्रश्नों को मौखिक, लिखित, बहुविकल्पीय, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय आदि में विभाजित करके पाठ का पूर्ण निहित अर्थ सुस्पष्ट रूप में समझने की विद्यार्थियों की पात्रता का विकास व मूल्यांकन किया गया है। साथ ही विविध प्रकार से विषय पर चिंतन-मनन करने तथा नए-नए बिंदुओं पर विचार करने की क्षमता को भी विकसित करने का प्रयास है।

पुस्तक बालकों में चिंतन-मनन की क्षमता को निश्चित की विकसित करेगी। साथ ही उनकी अनुभूति क्षमता भी गहन हो सकेगी।

स्वयं ही संवेदना की आंदोलित भावभूमि हमारे दावों का समर्थन करेगी। आदरणीय अध्यापक बंधुओं और विद्वत्जनों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

—लेखिकाएँ व प्रकाशक

विषय-सूची

1.	है नमस्कार उनको	*(कविता)*	5
2.	सयानी बुआ	*(हास्य-व्यंग्य)*	9
*	अनोखे शिष्य : गांधी जी	*(पठन हेतु)*	17
3.	दीपावली	*(ललित निबंध)*	21
4.	ग्राम-शोभा	*(निबंध)*	26
*	गुणों की पहचान	*(पठन हेतु)*	32
5.	देने का सुख	*(संस्मरण)*	35
6.	संस्कृति की पहचान	*(निबंध)*	40
7.	ठंडा रेगिस्तान : लद्दाख	*(संस्मरण)*	46
*	कालिंदी	*(पठन हेतु)*	54
8.	कर्तव्य और सत्यता	*(हास्य-व्यंग्य)*	60
9.	हल्दीघाटी का युद्ध	*(कविता)*	67
10.	अगर नाक न होती	*(हास्य-व्यंग्य)*	72
11.	प्यार की नींव	*(चिंतन-मनन)*	79
*	सुख की पहचान	*(पठन हेतु)*	85
12.	भीतर का प्रकाश	*(कहानी)*	88
13.	पूस की रात	*(निबंध)*	93
*	माँ और सरदी के दिन	*(पठन हेतु)*	102
14.	सुदामा चरित	*(कविता)*	103
15.	सोना	*(रेखाचित्र)*	108
16.	संगीत स्वामी हरिदास	*(नाटक)*	114
17.	वीर अब्दुल हमीद	*(कहानी)*	122
*	पूर्व मध्यावधि प्रश्न-पत्र		131
*	मध्यावधि प्रश्न-पत्र		133
*	उत्तर मध्यावधि प्रश्न-पत्र		135

अध्याय

1.

है नमस्कार उनको .....

यद्यपि शिष्टाचार के नाते हम सभी को नमस्कार करते हैं, किंतु वास्तव में जिनके हृदय शुद्ध व पवित्र हैं, वे ही नमस्कार के योग्य हैं।

है नमस्कार उनको, जिनका मन पावन है,
जिसमें बहती है प्रेम धार,
चित्त मृदुल और हृदय उदार,
हर प्राणी से है जिन्हें प्यार
करुणा से जो हैं ओत-प्रोत
उनसे ही लगती ये सृष्टि मनभावन है
है नमस्कार उनको, जिनका मन पावन है।

जो निर्बल के हित साधन में आ जुटते हैं,
जो सत्य की रक्षा हेतु मर-मिटते हैं।
जीते-जी भले उन्हें न कुछ सत्कार मिले
पर उनको देव सहायक और अवतार मिलें।
वह स्वयं प्रभु की महिमा का शुभ गायन है।
है नमस्कार उनको, जिनका मन पावन है।

छल, कपट, द्वेष, पाखंड से कोसों दूर रहें
सद्भावना शुभ और मैत्री से भरपूर रहें,
जो हँसकर शत्रु को भी क्षमा करें,
संसार के सुख-साधन से जो न मोह करें।
है भीतर जो आलोक उसे वह पा जाएँ,
तीनों ही लोक तब सम्मुख उनके झुक जाएँ।
मैं भी उनकी कृपा दृष्टि का अभिलाषी हूँ
दिखते साधारण पर वे सच्चे नृप-राजन हैं
है नमस्कार उनको, जिनका मन पावन है।

—डॉ० गीता रानी

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को स्पष्ट करें कि पवित्र भावों का जीवन को ऊँचा उठाने में कितना अधिक महत्व है, महान पुरुषों के उदाहरण देकर इस बात की पुष्टि करें।

शब्दार्थ

पावन - पवित्र; सृष्टि - संसार, ब्रह्मांड; चित्त - मस्तिष्क; मृदुल - कोमल, मुलायम; गायन - गीत गाना; द्वेष - बैर भावना; आलोक - प्रकाश; राजन - राजा।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) यहाँ किन्हें नमस्कार किया गया है?

(ख) पावन हृदय वालों का चित्त कैसा होता है?

(ग) निर्बल के हित साधन के लिए कौन आगे आते हैं?

(घ) सच्चे राजा यहाँ किसे कहा गया है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) इस कविता में इच्छा प्रकट की गई है-

(अ) धनवान होने की

(ब) यशस्वी होने की

(स) पवित्र मन के व्यक्तियों के कृपा पात्र होने की

(द) स्वस्थ रहने की

(ख) सृष्टि पवित्र मन वालों के कारण ही लगती है-

(अ) भयानक

(ब) मनभावन

(स) सूक्ष्म

(द) विस्तृत

(ग) पवित्र मन वालों के सहायक होते हैं-

(अ) नेता (ब) लेखक

(स) सभी (द) देव और अवतार

(घ) पवित्र मन वाले मर मिटते हैं-

(अ) शान पर (ब) आन पर

(स) धन पर (द) सत्य की रक्षा हेतु

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

रिक्त स्थान पर कविता के शब्द लिखिए-

(क) दिखते साधारण पर वे _____
_____ मन पावन है।

(ख) जो निर्बल के हित _____
_____ मर मिटते हैं।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पवित्र हृदय वालों के किन-किन लक्षणों का उल्लेख कविता में किया गया है?

(ख) शत्रुओं और संसार के सुखों के प्रति पावन हृदय वालों का क्या दृष्टिकोण होता है?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए-

(i) छल, कपट, दंभ, पाखंड से कोसों दूर रहें,
सद्भावना शुभ और मैत्री से भरपूर रहें।

(ii) है भीतर जो आलोक उसे वह पा जाएँ
तीनों ही लोक सम्मुख तब उनके झुक जाएँ।

भाषा-ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए

(क) छल,	कपट,	मिथ्याचार।
(ख) शुभ,	मंगल,	स्वस्ति।
(ग) शत्रु,	दुश्मन,	अरि।
(घ) आलोक,	प्रकाश,	उजाला।

2. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए

(क) राजन _____ (ख) गायन _____

(ग) उदार _____ (घ) जुटते _____

(ङ) दूर _____ (च) भावन _____

3. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) शत्रु	(i) दंड
(ख) क्षमा	(ii) दुर्भावना
(ग) सद्भावना	(iii) असाधारण
(घ) साधारण	(iv) मित्र

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** यदि बालकों जैसा निश्छल व्यवहार सभी का हो, तो आप कैसा अनुभव करेंगे? क्या जीवन सरलता से व्यतीत कर पाना आपके लिए कठिन है? अपनी भावनाएँ व्यक्त कीजिए।
- मन की पवित्रता प्रत्येक स्थिति में शुभकारी व मंगलदायक हो। इसे कैसे धारण किया जा सकता है? विचार कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- क्या तेज़-तर्रार लोग ही जीवन में उन्नति कर सकते हैं? क्या भौतिक वस्तुएँ ही एकमात्र सुख का साधन है अथवा मनुष्य की भावनाओं को आप सुख-दुख का कारण समझते हैं? चिंतन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- अनुमान से सद्गुणों एवं दुर्गुणों की तालिकाएँ पूरी कीजिए–

सद्गुण	दया	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____	_____
दुर्गुण	क्रूरता	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____	_____

अध्याय

2. सयानी बुआ

प्रायः कठोर नियंत्रण करने वाला व्यक्ति अनुशासन की दुहाई देता है। ऐसे में उसके नियंत्रण में रहने वालों को कितना मानसिक कष्ट होता है, इसका वर्णन इस कहानी में किया गया है।

सयानी बुआ का नाम वास्तव में ही सयानी था या उनके सयानेपन को देखकर लोग उन्हें सयानी कहने लगे थे, सो तो मैं आज भी नहीं जानती, पर इतना अवश्य कहूँगी कि जिसने भी उनका यह नाम रखा वह अवश्य नामकरण विद्या का पारखी रहा होगा।

बचपन में ही वे समय की जितनी पाबंद थी, अपना सामान सँभालकर रखने में जितनी पटु थी, और व्यवस्था की जितनी कायल थी, उसे देखकर चकित हो जाना पड़ता था। कहते हैं, जो पेंसिल वह एक बार खरीदती थी, वह जब तक इतनी छोटी न हो जाती कि उनकी पकड़ में न आए, तब तक उससे काम लेती थी।

क्या मजाल कि वह कभी खो जाए या बार-बार नोक टूटकर समय से पहले ही समाप्त हो जाए। जो रबड़ उन्होंने चौथी कक्षा में खरीदी थी, उसे नवीं कक्षा में आकर समाप्त किया।

उम्र के साथ-साथ उनकी आवश्यकता से अधिक चतुराई भी प्रौढ़ता धारण करती गई और फिर तो बुआ जी के जीवन में इतनी अधिक घुल-मिल गई कि उसे अलग करके बुआ जी की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। उनकी एक-एक बात पिता जी हम लोगों के सामने उदाहरण के रूप में रखते थे, और सुनकर हम सभी खैर मनाया करते थे कि भगवान करे, वह ससुराल में ही रहा करें, वरना हम जैसे अस्त-व्यस्त और अव्यवस्थित जनों का तो जीना ही दुर्लभ हो जाए।

ऐसी ही सयानी बुआ के पास जाकर पढ़ने का प्रस्ताव जब मेरे सामने रखा गया तो कल्पना कीजिए, मुझ पर क्या बीती होगी, मैंने साफ इंकार कर दिया कि मुझे आगे पढ़ना ही नहीं पर पिताजी मेरी पढ़ाई के विषय में इतने सतर्क थे कि उन्होंने समझाकर, डाँटकर और प्यार-दुलार से मुझे राजी कर लिया। सच में, राजी तो क्या कर लिया, समझिए अपनी इच्छा पूरी करने के लिए बाध्य कर दिया और भगवान का नाम गुहारते-गुहारते मैंने घर से विदा ली और उनके यहाँ पहुँची।

इसमें संदेह नहीं कि बुआ जी ने बड़ा स्वागत किया। पर बचपन से उनकी ख्याति सुनते-सुनते उनके जिस रौद्र रूप ने मन को अभिभूत कर रखा था, उसमें उनका वह प्यार कहाँ तिरोहित हो गया, मैं जान ही न पाई। हाँ, बुआ जी के पति, जिन्हें हम भाई साहब कहते थे, बहुत ही अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे। और सबसे अच्छा कोई घर में लगा तो उनकी पाँच वर्ष की पुत्री, अन्नू।

लेकिन मैंने देखा कि परिवार के सभी लोगों पर एक विचित्र आतंक-सा छाया हुआ है- सब पर मानों बुआ जी का व्यक्तित्व हावी है। सारा काम वहाँ इतनी व्यवस्था से होता, जैसे सब मशीनें हों, जो कायदे में बँधी, बिना रुकावट अपना काम किया करती हैं। ठीक पाँच बजे सब लोग उठ जाते, फिर एक घंटा बाहर मैदान में टहलना होता, उसके बाद चाय-दूध होता। उसके बाद अन्नू को पढ़ने के लिए बैठना पड़ता था। भाई साहब भी तब अखबार और ऑफिस की फाइलें आदि देखा करते। नौ बजते ही नहाना शुरू होता। जो कपड़े बुआ जी निकाल दें, वही पहनने होते। फिर कायदे से आकर मेज़ पर बैठ जाओ और खाकर काम पर जाओ।

घर के इस नीरस और यंत्रचालित कार्यक्रम में अपने आपको फिट करने में मुझे कितना कष्ट उठाना पड़ा और कितना अपने आपको काटना-छाँटना पड़ा, यह मेरा अंतर्यामी ही जानता है। सबसे अधिक तरस आता था अन्नू पर। वह इस नन्हीं-सी उमर में प्रौढ़ हो गई थी। न बच्चों का-सा उल्लास, न कोई चहचहाहट। एक अज्ञात भय से वह घिरी रहती थी। घर के उस वातावरण में कुछ ही दिनों में मेरी भी सारी हँसी-खुशी मारी गई।

यों बुआ जी की गृहस्थी जमे पंद्रह वर्ष बीत चुके थे, पर उनके घर का सारा सामान देखकर लगता था, मानों सब कुछ अभी कल ही खरीदा हो। गृहस्थी जमाते समय जो काँच और चीनी मिट्टी के बर्तन उन्होंने खरीदे थे, वे आज भी ज्यों के त्यों थे, जबकि रोज़ उनका उपयोग होता था। वे स्वयं खड़ी होकर सारे बर्तन साफ़ करवाती थीं। क्या मज़ाल, कोई एक चीज़ भी तोड़ दे। एक बार नौकर ने एक सुराही तोड़ दी थी। उस छोटे-से छोकरे को उन्होंने इस कसूर पर बहुत पीटा था। तोड़-फोड़ से उन्हें सख्त नफ़रत थी, यह बात उनकी बर्दाश्त के बाहर थी।

उन्हें बड़ा गर्व था अपनी इस सुव्यवस्था पर। वे अकसर भाई साहब से कहा करती थीं कि यदि वे इस घर में न आती, तो न जाने बेचारे भाई साहब का क्या हाल होता।

मैं मन ही मन में कहा करती थी कि और चाहे जो भी हाल होता, हम सब मिट्टी के पुतले न होकर कम-से-कम इंसान तो अवश्य हुए होते।

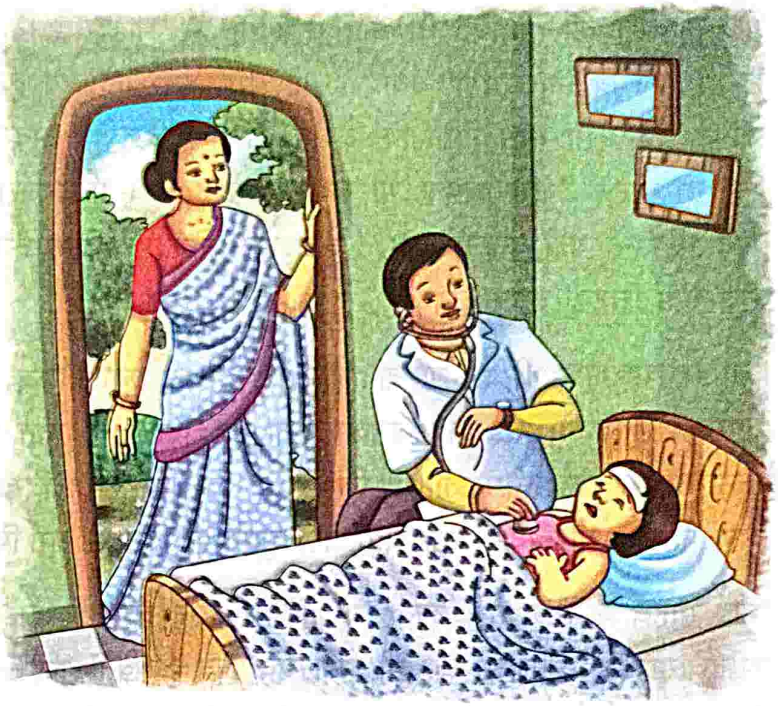

बुआ जी की अत्यधिक सतर्कता और खाने-पीने के इतने कंट्रोल के बावजूद भी अन्नू को बुखार आने लगा। सब प्रकार के उपचारों पर भी पूरा महीना बीत गया, पर उसका बुखार न उतरा। बुआ जी की परेशानी का पार नहीं, अन्नू एक दम पीली पड़ गई। उसे देखकर मुझे लगता, मानों उसके शरीर में ज्वर के कीटाणु नहीं, बुआ जी के भय के कीटाणु दौड़ रहे हैं, जो उसे ग्रसते जा रहे हैं, और वह उनसे पीड़ित होकर भी भय के मारे कुछ कह नहीं सकती, बस सूखती जा रही है।

आखिर डॉक्टरों ने कुछ प्रकार की परीक्षाओं के बाद राय दी कि बच्ची को पहाड़ पर ले जाया जाए, और जितना अधिक उसे प्रसन्न रखा जा सके, अच्छा है। सब कुछ उसके मन के अनुसार हो, यही उसका सही इलाज है। पर, सच पूछो तो बेचारी का मन बचा ही कहाँ था? भाई साहब के सामने एक विकट समस्या थी। बुआ जी के रहते यह संभव नहीं था, क्योंकि अनजाने ही उनकी इच्छा के सामने वह प्रमुख बन बैठती थीं। भाई साहब ने शायद सारी बात डॉक्टर के सामने रख दी, तभी डॉक्टर ने कहा कि माँ का साथ रहना ठीक नहीं होगा। बुआ जी ने सुना तो बहुत आनाकानी की, लेकिन डॉक्टर की राय के विरुद्ध जाने का साहस वे कर नहीं सकीं, सो मन मारकर वहीं रहीं।

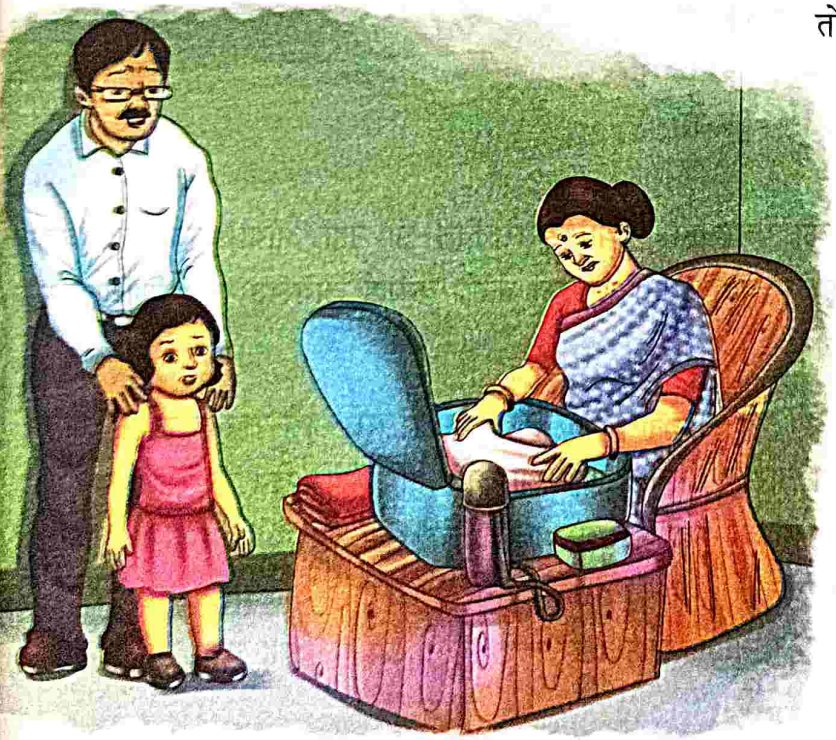

जोर-शोर से अन्नू के पहाड़ पर जाने की तैयारी शुरू हुई। पहले दोनों के कपड़ों की लिस्ट बनी, फिर जूतों की, मोजों की, गरम कपड़ों की, ओढ़ने-बिछाने के सामान की, बर्तनों की। हर चीज़ रखते समय वे भाई साहब को सख्त हिदायत देती थी कि एक भी चीज़ खोनी नहीं चाहिए- "देखो यह फ्रॉक मत खो देना, सात रुपये मैंने इसकी सिलाई दी है। यह प्याले मत तोड़ देना, वरना पचास रुपये का सेट बिगड़ जाएगा। और हाँ, गिलास को तुम तुच्छ

समझते हो, उसकी परवाह ही नहीं करोगे, पर देखो, यह पंद्रह बरस से मेरे पास है और कहीं खरोंच तक नहीं है, तोड़ दिया तो ठीक न होगा।''

प्रत्येक वस्तु की हिदायत के बाद वे अन्नू पर आईं वह किस दिन, किस समय क्या खाएगी, उसका मीनू बना दिया। कब कितना घूमेगी, क्या पहनेगी, सब कुछ निश्चित कर दिया। मैं सोच रही थी कि यहाँ बैठे-बैठे ही बुआ जी ने इन्हें ऐसा बाँध दिया कि बेचारे अपनी इच्छा के अनुसार क्या खाक करेंगे। सब कह चुकी, तो ज़रा आर्द्र स्वर में बोलीं-''कुछ अपना भी ख्याल रखना, दूध-फल बराबर खाते रहना।'' हिदायतों की इतनी लंबी सूची के बाद भी उन्हें यही कहना पड़ा, ''जाने तुम लोग मेरे बिना कैसे रहोगे, मेरा तो मन ही नहीं मानता। हाँ, बिना भूले रोज़ एक चिट्ठी डाल देना।''

आखिर वह क्षण भी आ पहुँचा, जब भाई साहब एक नौकर और अन्नू को लेकर चले गए। बुआ जी ने अन्नू को खूब प्यार किया, रोईं भी। उनका रोना मेरे लिए नई बात थी। उसी दिन पहली बार लगा कि उनकी भयंकर कठोरता में कहीं कोमलता भी छिपी है। जब तक ताँगा दिखाई देता रहा, वह उसे देखती रहीं, उसके बाद कुछ क्षण निर्जीव-सी होकर पड़ी रहीं। पर, दूसरे ही दिन से घर फिर वैसे ही चलने लगा।

भाई साहब का पत्र रोज़ आता था, जिसमें अन्नू की तबियत के समाचार रहते थे। बुआ जी भी रोज़ एक पत्र लिखती थीं, जिसमें अपनी उन मौखिक हिदायतों को लिखित रूप में दोहरा दिया करती थी। पत्रों की तारीख में अंतर रहता था, बात शायद सबमें वही रहती थी। मेरे तो मन में आता कि कह दूँ, बुआ जी, रोज़ लिखने का कष्ट क्यों करती हो? भाई साहब को लिख दीजिए कि एक पत्र गत्ते पर चिपकाकर पलंग के सामने लटका लें और रोज़ सवेरे उठकर पढ़ लिया करें। लेकिन इतना साहस था नहीं कि यह बात कह सकूँ।

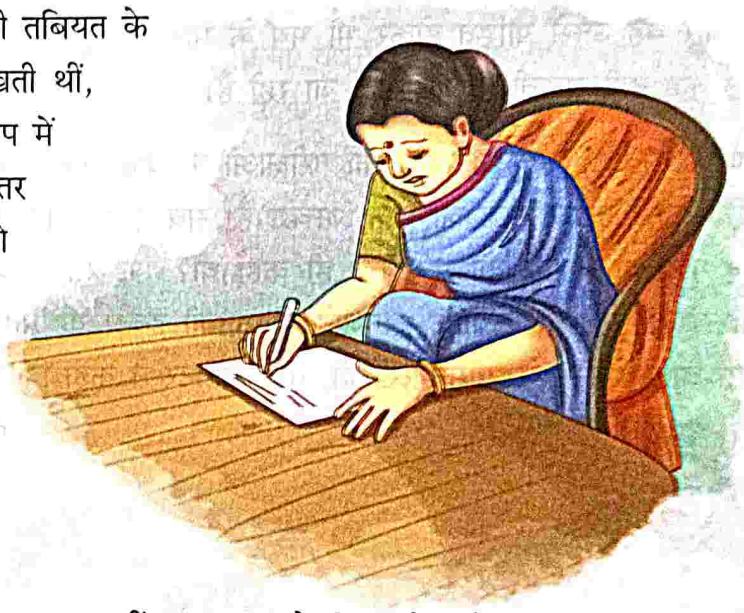

करीब एक महीने के बाद एक दिन भाई साहब का पत्र नहीं आया। दूसरे दिन भी नहीं आया। बुआ जी बड़ी चिंतित हो उठी। उस दिन उनका मन किसी भी काम में नहीं लगा। घर की कसी-कसाई व्यवस्था कुछ शिथिल-सी मालूम होने लगी। तीसरा दिन भी निकल आया।

अब तो बुआ जी की चिंता का पार नहीं रहा। रात को वह मेरे कमरे में आकर सोईं, पर सारी रात दु:स्वप्न देखती रहीं और रोती रहीं, मानों उनका वर्षों से जमा हुआ नारीत्व पिघल पड़ा था और अपने पूरे वेग के साथ बह रहा था। वह बार-बार कहती कि उन्होंने स्वप्न में देखा है कि भाई साहब अकेले चले आ रहे हैं, अन्नू साथ नहीं है और उनकी आँखें भी लाल हैं। और, वह फूट-फूटकर रो पड़तीं। मैं तरह-तरह से उन्हें आश्वासन देती, लेकिन वह तो कुछ सुन ही नहीं रही थीं। मेरा मन भी कुछ अन्नू के ख्याल से कुछ बुआ जी की यह दशा देखकर बड़ा दुखी हो रहा था।

तभी नौकर ने भाई साहब का पत्र लाकर दिया। बड़ी व्यग्रता से काँपते हाथों से उन्होंने उसे खोला और पढ़ने लगी। मैं भी साँस रोककर बुआ जी के मुँह को देख रही थी कि एकाएक पत्र फेंककर सिर पीटती बुआ जी चीखकर रो पड़ी। मैं धक्क रह गई। आगे कुछ सोचने का साहस ही नहीं होता था। आँखों के आगे अन्नू की भोली सी, नन्हीं-सी तस्वीर घूम गई। तो क्या अब अन्नू सचमुच ही संसार में नहीं है? यह सब कैसे हो गया? मैंने साहस करके भाई साहब का पत्र उठाया। लिखा था-

प्रिय सयानी,

समझ में नहीं आता, किस प्रकार तुम्हें पत्र लिखूँ। किस मुँह से तुम्हें यह दुखद समाचार सुनाऊँ। फिर भी रानी, तुम इस चोट को धैर्यपूर्वक सह लेना। जीवन में दुख की घड़ियाँ भी आती हैं और उन्हें साहसपूर्वक सहने में ही जीवन की महानता है। यह संसार नश्वर है। जो बना है, वह एक न एक दिन मिटेगा ही, शायद इस तथ्य को सामने रखकर हमारे यहाँ कहा गया है कि संसार की माया से मोह रखना दुख का मूल है। तुम्हारी इतनी हिदायतों के और अपनी सारी सतर्कता के बावजूद भी मैं उसे नहीं बचा सका, इसे अपने दुर्भाग्य के अतिरिक्त और क्या कहूँ? यह सब कुछ मेरे ही हाथों होना था। .....

आँसू भरी आँखों के कारण शब्दों का रूप अस्पष्ट से अस्पष्टतर होता जा रहा था और मेरे हाथ काँप रहे थे। अपने जीवन में यह पहला अवसर था, जब मैं इस प्रकार किसी की मृत्यु का समाचार पढ़ रही थी। मेरी आँखें शब्दों को पार करती हुई जल्दी-जल्दी पत्र के अंतिम हिस्से पर जा पड़ी- ..... धैर्य रखना, मेरी रानी, जो कुछ हुआ उसे सहने की और भूलने की कोशिश करना। कल चार बजे तुम्हारे पचास रुपये वाले सेट के दोनों प्याले मेरे हाथ से गिरकर टूट गए। अन्नू अच्छी है और शीघ्र ही हम लोग रवाना होने वाले हैं ..... ।

एक मिनट तक मैं हतबुद्धि-सी खड़ी रही, समझ ही नहीं पाई, यह क्या से क्या हो गया। यह दूसरा सदमा था। ज्यों ही कुछ समझी, मैं जोर से हँस पड़ी। किस प्रकार मैंने बुआ जी को सत्य से अवगत कराया, वह सब मैं कोशिश करके भी नहीं लिख सकूँगीं। लेकिन वास्तविकता जानकर बुआ जी भी रोते ही रोते हँस पड़ी। पाँच आने की सुराही तोड़ देने पर नौकर को बुरी तरह पीटने वाली बुआ जी पचास रुपये वाले सेट के प्याले टूट जाने पर भी हँस रही थीं, दिन खोलकर हँस रही थीं, मानों उन्हें स्वर्ग की निधि मिल गई हो।

—मन्नू भंडारी

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों से चर्चा करें कि क्या कठोर अनुशासन ही सब कार्य को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए आवश्यक है अथवा स्वेच्छा से भी सुव्यवस्था बनाई जा सकती है।

शब्दार्थ

नामकरण - नाम रखना; पटु - होशियार; अव्यवस्थित - ऊट-पटाँग ढंग से; तिरोहित - गायब; कंट्रोल - नियंत्रण; पारखी - परख करने वाला; प्रौढ़ता - गंभीरता; सतर्क - सावधान; अज्ञात - अनजाना; निर्जीव - बेजान।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) बुआ जी को लोग सयानी क्यों कहते थे?

(ख) लेखिका को बुआ जी के घर में कौन अच्छा लगा?

(ग) लेखिका को अन्नू के बुखार न उतरने की क्या वजह लगती थी?

(घ) डॉक्टरों ने अन्नू के विषय में क्या राय दी?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लेखिका ने बुआ जी के घर जाने की बात

(अ) टाल दी ⬡ (ब) खुशी से मान ली ⬡

(स) पर शोर मचाया ⬡ (द) मजबूरी में मान ली ⬡

(ख) लेखिका को लगा कि अन्नू के शरीर में-

(अ) ज्वर के कीटाणु हैं ⬡ (ब) भय के कीटाणु हैं ⬡

(स) टाइफाइड के कीटाणु हैं ⬡ (द) मलेरिया के कीटाणु हैं ⬡

(ग) पत्र पाकर बुआ जी-

(अ) रो पड़ीं ⬡ (ब) बेहोश हो गईं ⬡

(स) खुश हो गईं ⬡ (द) गाने लगीं ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पिता जी से सयानी बुआ के उदाहरण सुनकर लेखिका व उनके भाई-बहन क्या कामना करते थे?

(ख) पहाड़ पर जाते समय बुआ जी ने अपने पति को क्या-क्या हिदायतें दीं?

(ग) पत्र का अंतिम भाग सुनकर बुआ जी पर क्या प्रभाव हुआ?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) "संसार की माया से मोह रखना दुख का मूल है।"

(ख) "उन्हें बड़ा गर्व था अपनी इस सुव्यवस्था पर। वे अकसर भाई साहब से कहा करती थीं कि यदि वे इस घर में न आतीं, तो न जाने बेचारे भाई साहब का क्या हाल होता। मैं मन ही मन में कहा करती कि और चाहे जो भी हाल होता, हम सब मिट्टी के पुतले न होकर इंसान तो अवश्य हुए होते।"

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए

(क) निरजिव _____ (ख) अतीरीक्त _____

(ग) सतय _____ (घ) लीखीत _____

(ङ) सतरकता _____ (च) दुरभाग्य _____

2. वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए

(क) शासन करने वाला शासक

(ख) दया करने वाला _____

(ग) अत्याचार करने वाला _____

(घ) कृपा करने वाला _____

(ङ) काम में निष्ठा रखने वाला _____

(च) काम से जी चुराने वाला _____

3. नीचे दिए गए शब्दों को उचित शीर्षक में लिखिए

कंट्रोल, लिस्ट, हिदायत, सेट, खाक, निर्जीव, सूची, सख्त, सतर्कता, अत्यधिक, तारीख, फ्रॉक

हिंदी _____ _____ _____ _____

अंग्रेज़ी _____ _____ _____ _____

उर्दू _____ _____ _____ _____

रचना के क्षण

भाव-भूमि– आपके परिवार में विभिन्न स्वभावों के व्यक्ति होंगे। आप किसके प्रति कैसा भाव रखते हैं और क्यों? बताइए-

(क) माता _____

_____

(ख) पिता _____

_____

(ग) भाई _____

_____

(घ) बहन _____

_____

(ङ) दादा _____

_____

(च) दादी या अन्य कोई _____

_____

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए कि वे बच्चे जो किसी हॉस्टल आदि में वार्डन आदि के कठोर नियंत्रण में रहते होंगे, वे कैसा अनुभव करते होंगे।
- जब आपको कोई स्वतंत्रतापूर्वक काम नहीं करने देता, तो आप कैसा अनुभव करते हैं? वर्णन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- **'बच्चों के मानसिक विकास में परिवार की भूमिका'** इस विषय पर एक वार्ता का आयोजन कीजिए।
- सैनिको से भेंटवार्ता कीजिए और जानिए कि उन्हें कितनी कड़ाई से अनुशासन का पालन करना पड़ता है। यदि वे इसका उल्लघंन करते हैं, तो उसके क्या परिणाम होते हैं?

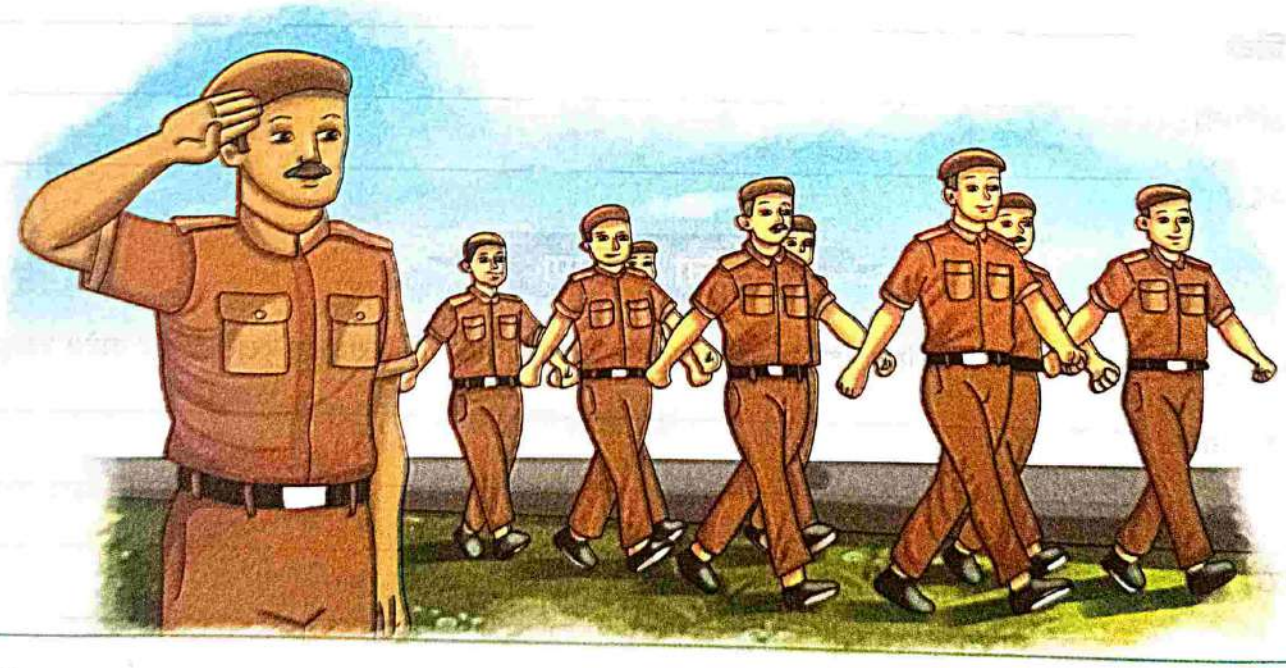

पठन हेतु

अनोखे शिष्य : गांधी जी

5 मई सन् 1944 का दिन

'भारत छोड़ो' आंदोलन का जमाना।

गांधी पुणे के आगा खान महल में नजरबंद।

आगा खान महल में उन्होंने अपने प्रिय सचिव महादेव भाई देसाई को खोया। आगा खान महल में उन्होंने अपनी बासठ बरस की प्रिय जीवनसंगिनी कस्तूरबा की पवित्र बलि स्वतंत्रता की वेदी पर चढ़ाई।

इन दो घटनाओं ने उनके तन और मन को पूरी तरह झकझोर डाला था। सारे देश के भविष्य की चिंता का भार तो बना ही रहता था। ऐसे में उन पर मलेरिया का आक्रमण हुआ। तेज़ बुखार रहने लगा। गांधी जी बहुत कमज़ोर हो गए।

गांधी जी की बीमारी और कमज़ोरी से अंग्रेज़ सरकार घबरा गई। कहीं गांधी जी भी जेल में ही न चल बसें। अगर ऐसा हुआ, तो देश में विद्रोह की आग फिर भड़केगी और उसे बुझाना असंभव होगा।

सरकार ने गांधी जी को मुक्त करने का फ़ैसला लिया। 5 मई, सन् 1944 को शाम को एकाएक जेल निरीक्षक कर्नल भंडारी ने उनके कमरे में प्रवेश किया। गांधी जी को प्रणाम करके बोले, "महात्मा जी, कल सुबह आठ बजे आपको, आपके साथियों के साथ बिना शर्त रिहा कर दिया जाएगा।"

"आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं?" गांधी जी ने आश्चर्य से पूछा।

कर्नल भंडारी- "मैं सच कह रहा हूँ। आप चाहे, तो तबीयत सुधरने तक पुणे में रह सकते हैं।"

"लेकिन तब मेरे रेल किराए का क्या होगा?" मजाक के लहजे में गांधी जी ने पूछा।

"किराया पुणे छोड़ते समय आपको मिल जाएगा।"

"बहुत अच्छा।"

कर्नल भंडारी ने गांधी जी को प्रणाम करते हुए कहा, "मेहरबानी करके अब फिर न आइए। देखिए न, चिंता से मेरे बाल कैसे सफ़ेद पड़ गए हैं?"

गांधी जी खिलखिलाकर हँस पड़े।

कर्नल भंडारी के जाने के बाद उन्होंने अपनी पोती मनु गांधी को बुलाया और कहा, "मनड़ी, सामान बाँधना शुरू कर दे। कल सुबह आठ बजे हम सब मुक्त हो जाएँगे।"

मनु गांधी एक-एक चीज़ समेटने लगी। उनकी नजर एक कोने में रखी दादा की चप्पलों पर पड़ी। "अरे, चप्पल तो बापू के टूटे हुए हैं! कल वे पहनेंगे क्या?"

लेकिन रात में क्या हो?

सुबह दादा से पूछे बिना ही वे बाहर जाकर चप्पल मरम्मत के लिए मोची को दे आईं। मज़दूरी आठ आने तय की।

लौटी तो देखा कि बापू चप्पल खोज रहे हैं। मनु बहन को देखते ही पूछा- "मेरे चप्पल कहाँ हैं, मनु?"

"मरम्मत के लिए मोची को दे आई हूँ बापू।"

"मज़दूरी कुछ तय की या महात्मा गांधी की जय।"

"नहीं बापू, आठ आने मज़दूरी तय की है।"

गांधी जी गंभीर हो गए- "लेकिन ये आठ आने देगा कौन? न मेरे पास एक कौड़ी है, न तेरे पास। तब क्या इस बुढ़ापे में जेल अधीक्षक से भीख माँगू?"

मनु बहन के चेहरे पर चिंता की रेखाएँ घिर आईं। पैसे कहाँ से दूँगी, इसका तो विचार ही नहीं किया। तब क्या चप्पल वापस ले आऊँ?

लेकिन मोची क्या सोचेगा?

इतने में दादा बोल उठे, "चप्पल तू वापस ले आ, मनु। मैं टूटे चप्पलों से काम चला लूँगा।"

मनु बहन रूआँसी हो गई। सहमती-सहमती मोची के पास पहुँची।

"चप्पल अभी नहीं बने हैं बहन।" मोची बोला।

मनु बहन ने भगवान का उपकार माना, अच्छा ही हुआ,

बन जाते, तो आठ आने कैसे चुकाती?"

मोची से उन्होंने कहा, "तो वापस दे दे भाई, मुझे नहीं बनवाने चप्पल।"

"वाह, वापस कैसे दे दूँ? यही तो मेरी पहली बोहनी है।" यह एक नई मुसीबत खड़ी हुई। फिर भी जी कड़ा करके वे बोली- "चप्पल गांधी के हैं। वे वापस माँगते हैं।"

"तब तो मेरे भाग खुल गए। चप्पल मैं वैसे ही बना दूँगा, लेकिन वापस तो नहीं करूँगा।" मोची खुश होकर बोला।

"अब क्या हो?"

आखिर मनु बहन समझा-बुझाकर मोची को अपने दादा के पास ले गई।

दादा दूध-सी स्वच्छ गद्दी पर बैठे अंग्रेज़ मुलाकातियों से भारत और संसार के भविष्य की चर्चा कर रहे थे। पोती ने सारा किस्सा दादा को सुनाया।

गांधी जी ने मोची से कहा, "तुम मुझे चप्पलों की मरम्मत करना सिखाओगे? आओ, यहाँ मेरे पास बैठो। तुम मेरे गुरु बनो, मैं तुम्हारा चेला बनूँगा।"

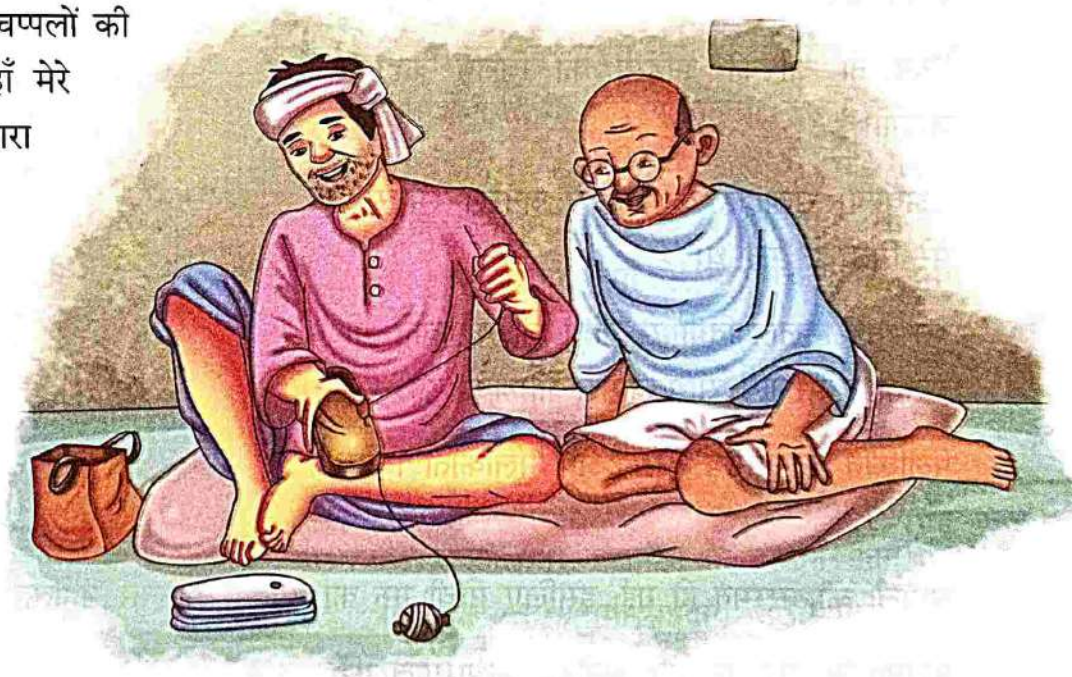

मोची चकराया। गांधी बापू चप्पलों की मरम्मत करेंगे?

"आओ, आओ संकोच मत करो।"

मोची साफ़-सुथरी गद्दी पर महात्मा गांधी की बराबरी में कैसे बैठे? वह खुले फर्श पर बैठने लगा। गांधी जी ने आग्रह से उसे अपने पास बैठाया।

मोची का संकोच मिटा। उसने थैली से औज़ार निकाले। वह बापू को मरम्मत की कला सिखाने लगा, जैसे किसी नौसिखिए को सिखा रहा हो। उस बेचारे को क्या पता कि उसका यह चेला किसी जमाने में अच्छे चप्पल बना लेता था।

मुलाकातियों को कौतूहल हुआ। तब सारी बात गांधी जी ने समझाई। वे चकित हो गए। यहाँ सामने बैठा चप्पलों की मरम्मत सीख रहा पुरुष ही भारत का सर्वोच्च नेता और विश्व का सबसे बड़ा महापुरुष है। कितना सरल! कितना नम्र! एक मैले-कुचैले अनपढ़ मोची को गुरु बनाकर वैसी ही लगन से चप्पल बनाना सीख रहा है, जैसी लगन से अध्यात्मविद्या का कोई नम्र साधक अपने गुरु से गूढ़ रहस्य का मर्म सीखता है।

मुलाकातियों के आश्चर्य को बढ़ाते हुए गांधी जी ने कहा, "दक्षिण अफ्रीका में मैंने अपने जर्मन मित्र कैलन बैक से चप्पल बनाने की कला सीखी थी।"

"अच्छा!"

"मैं काफ़ी अच्छे चप्पल बना लेता था। अपने हाथ की एक जोड़ी चप्पलें मैंने जनरल स्मट्स को भेंट की थीं।"

"अपने कट्टर राजनीतिक विरोधी को?"

एक मुलाकाती ने प्रश्न किया।

"मैं तो जनरल को अपना मित्र ही मानता था। सत्याग्रही का कोई शत्रु होता ही नहीं। हाँ, जनरल ज़रूर मुझे अपना कट्टर दुश्मन मानते थे। लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जनरल ने मेरे द्वारा दिए गए चप्पलों के जोड़े को अपने कीमती उपहारों में स्थान दिया था।"

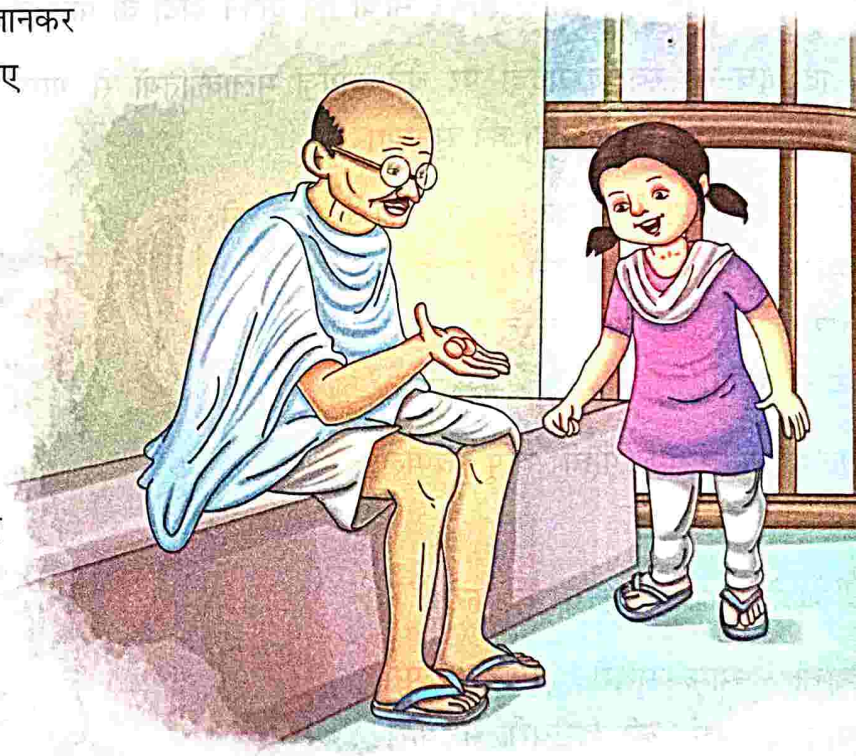

"यह तो आपकी अहिंसा की विजय कही जाएगी।"

"अवश्य। सत्याग्रह के अंत में जनरल स्मट्स मेरे मित्र बन गए थे।"

इस तरह मुलाकातियों से गांधी जी की बातें भी चलती रहीं, साथ-साथ चप्पल भी बनते रहे।

मुलाकात का समय पूरा हुआ। मुलाकाती विदा हुए।

चप्पलों की मरम्मत हो गई, इसलिए मोची गुरु का उपकार मानकर महात्मा ने उसे विदा किया।

महात्मा के मुख पर कोई अनोखी आभा फैल गई।

मानों आठ आने बचाकर उन्होंने राष्ट्र की आठ लाख की दौलत बचा ली हो।

मनु गांधी मुग्ध भाव से सारी घटना की मूक साक्षी बनी रहीं।

—सोमेश्वर पुरोहित

अध्याय

3. दीपावली

दीपावली की शोभा व उल्लास की जितनी चर्चा की जाए, उतनी ही कम है। इसके इतने लंबे समय से चले आने के पीछे क्या रहस्य है, इसका वर्णन यहाँ किया गया है।

दीपावली इस साल भी आ गई। हर साल ही आती है। न जाने किस साल भले आदमी के मन में किस शुभ मुहूर्त में दीपकों के उत्सव की बात आई थी। पंडितों ने इस पर्व का इतिहास खोजने का प्रयत्न किया है। भक्तों का विश्वास कुछ और है, पंडितों के अनुसंधान कुछ और, मगर उत्सव है पुराना। बुद्धदेव के जीवनकाल में यह उत्तर भारत में अवश्य मनाया जाता था और सबूत मिला है कि गुप्तकाल में भी मनाया जाता था। मतलब यह है कि कम-से-कम ढाई-तीन हज़ार वर्षों के मानवचित्त के उमंग और उल्लास की कहानी इस पर्व के साथ जुड़ी है। इतना क्या कम है? दो सौ पीढ़ियों तक जो पर्व मनुष्य के चित्त को आनंद से उद्वेलित कर सका है, यह क्या मामूली पर्व है? राज्यों और राजवंशों के उत्थान-पतन होते रहे, बड़े-बड़े धर्म-संप्रदाय उठते-गिरते रहे, चंचला लक्ष्मी का प्रसाद न जाने कितने लोगों को प्राप्त हुआ और कितने उससे वंचित हो गए, पर दीपमाला का उत्सव नहीं रुका। साधारणत: यह विश्वास किया जाता है कि यह लक्ष्मीपूजा का दिन है। बंगाल में दूसरी परंपरा है। वहाँ इस तिथि को काली जी की पूजा होती है। काली पूजा वहाँ आश्विन मास की पूर्णिमा के दिन होती है। उसे कोजागार पूर्णिमा कहते हैं। पर पूजा लक्ष्मी की हो या काली की, दीपमाला सर्वत्र जगमगा उठती है। देवी-देवता और उनकी पूजा गौण है, मनुष्यचित्त का उल्लास प्रधान है और यह उत्सव उल्लास का ही है।

वैसे यह पर्व इतने दिनों तक जीता रहा, निश्चय ही उसके दीर्घ इतिहास में ऐसे अवसर आए होंगे कि जब शक्तिशाली समझे जाने वाले लोगों को यह उत्सव पसंद नहीं आया होगा। शक्तिशाली राजाओं की संकुचित भृकुटियों का शिकार कभी न कभी इस उत्सव को होना पड़ा होगा, पर हुआ नहीं। मनुष्य की सम्मिलित सामाजिक मंगलेच्छा को दबाना क्या संभव है? राज्य बदल जाएँगे, राजमुकुट पुराने हो जाएँगे, मठ ढह जाएँगे, संप्रदाय नष्ट हो जाएँगे; बची रहेगी मनुष्य की सामूहिक मंगलेच्छा।

आज से हज़ारों वर्ष पहले मनुष्य ने निश्चय किया था कि वह दरिद्रता की अवस्था में नहीं रहेगा, वह सामाजिक रूप से समृद्ध रहेगा। एक व्यक्ति नहीं, एक परिवार नहीं, एक जाति भी नहीं, बल्कि समूचा मानव समाज समृद्धि चाहता है, अमंगल का अंत चाहता है, उल्लास और उमंग चाहता है। दीपावली उसी सामूहिक मंगलेच्छा का दृश्यमान मूर्त रूप है। समूचा समाज आज दरिद्रता के अभिशाप से मुक्ति चाहता है। अभाव के शिकंजे से छूटना चाहता है। दीपावली उसके इस संकल्प की जलती हुई दीपशिखा है। राजवंश आए और गए, बड़े-बड़े समृद्धिशाली नगर बने और बिगड़े, किंतु मनुष्य की यह चिरप्रार्थित आकांक्षा नहीं पूरी हुई। आज भी यह लक्ष्मी जी की पूजा कर रहा है। परंतु पूजा करता है, दरिद्रता की पीठ पर बैठकर। आज भी वह महाकालिका की पूजा करता है, आतंक और भय से कंपित हृदय लेकर। कब यह पूजा सफल होगी? कब महामाया का वह प्रसन्न मुख प्रकट होगा, जिसे देखकर मनुष्य, मनुष्य की मार से बच सकेगा?

चारों ओर जब अभाव का करुण हाहाकार सुनाई दे रहा है, दीपावली अपना मंगल संदेश लेकर आई है। कई हज़ार वर्ष पहले मनुष्य ने सामूहिक रूप से समृद्ध होने का संकल्प किया था। वह संकल्प आज भी जी रहा है। क्यों न मनुष्य अब इच्छा के बाद प्रयत्न शुरू करे? सामाजिक मंगलेच्छा को आज तक कोई नहीं दबा सका। वह न मरी, न बूढ़ी हुई, जबकि न जाने कितनी व्यक्तिगत आकांक्षाएँ मरकर भूत हो गईं, कितने व्यक्तिगत प्रयत्न हमेशा के लिए

समाप्त हो गए। दीपावली यह संदेश लेकर आ रही है कि मनुष्य की इच्छा भी नश्वर है, प्रयत्न भी नश्वर है, परंतु सामाजिक मनुष्य की इच्छा और प्रयत्न भी अमर होंगे। अब व्यक्तिगत प्रयत्नों का जमाना लद गया। उसकी पूरी परीक्षा हो चुकी। अब सामाजिक मनुष्य की मंगलेच्छा जिएगी और सामाजिक मनुष्य को सब प्रकार के अभावों और बंधनों से मुक्त करने की साधना ही जिएगी।

—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

अध्यापन संकेत **विद्यार्थियों को दीपावली की प्रथा के चले आने के प्रयोजन को स्पष्ट कीजिए।**

शब्दार्थ

अनुसंधान - खोज; मंगलेच्छा - शुभ की इच्छा; कंपित - काँपते हुए; नश्वर - नष्ट हो जाने वाला; चंचला - चंचल रहने वाली; उत्थान-पतन - उन्नति-गिरावट; चिरप्रार्थित - दीर्घकाल से की जाने वाली प्रार्थना; अभाव - कमी; दृश्यमान - दिखाई देने वाला।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) दीपावली की परंपरा के विषय में पंडित और भक्तों के विचार में क्या असमानता है?

(ख) दीपावली का पर्व लगभग कितने वर्षों से चले आने का अनुमान है?

(ग) बंगाल में दीपावली पर किसकी पूजा होती है?

(घ) मनुष्य का कौन सा संकल्प आज भी जी रहा है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लक्ष्मी को लेखक ने यहाँ कहा है–

(अ) चंचला ⬡ (ब) सबसे बड़ी देवी ⬡

(स) अदृश्य देवी ⬡ (द) वर देने वाली देवी ⬡

(ख) हज़ारों वर्ष पूर्व मनुष्य ने तय किया कि वह–

(अ) पूजा करेगा (ब) दरिद्र नहीं रहेगा

(स) दीप जलाता रहेगा (द) विश्व में शांति फैलाएगा

(ग) हमेशा बची रहेगी–

(अ) धरती (ब) मानवता

(स) हरियाली (द) सामूहिक मंगलेच्छा

(घ) समृद्धि चाहता है–

(अ) एक व्यक्ति (ब) समूचा मानव समाज

(स) निर्धन (द) राजनेता

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) इस पाठ के लेखक कौन हैं?

(ख) समाज आज किस अभिशाप से मुक्ति चाहता है?

(ग) लेखक के अनुसार यह पर्व किनकी संकुचित भृकुटियों का शिकार हुआ होगा?

(घ) लेखक ने किसे सामूहिक मंगलेच्छा का दृश्यमान मूर्तरूप कहा है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय स्पष्ट कीजिए–

'राजमुकुट पुराने हो जाएँगे, मठ ढह जाएँगे, संप्रदाय नष्ट हो जाएँगे, बची रहेगी मनुष्य की सामूहिक मंगलेच्छा।'

(ख) लेखक के अनुसार दीपावली क्या संदेश लेकर आ रही है?

(ग) मनुष्य की सदा से क्या इच्छा रही है और उसके लिए कौन से प्रयत्न किए जाने की बात लेखक ने कही है?

भाषा-ज्ञान

1. समझकर लिखिए

(क) मंगलेच्छा — मंगल + इच्छा

(ख) दीपशिखा — _____ + _____

(ग) राजवंश — _____ + _____

(घ) चिरप्रार्थित — _____ + _____

(ङ) कोषागार — _____ + _____

2. दिए गए शब्दों में प्रत्यय लगाकर नया शब्द बनाइए

(क) समाज — इक — सामाजिक

(ख) नगर — _____ — _____

(ग) दिन — _____ — _____

(घ) समूह — _____ — _____

(ङ) परंपरा — _____ — _____

3. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) नश्वर	(i) अमंगल
(ख) मंगल	(ii) विस्तृत
(ग) संकुचित	(iii) समृद्धि
(घ) व्यक्तिगत	(iv) अमर
(ङ) दरिद्रता	(v) सामूहिक

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आपको पर्वों और साधारण दिनों में क्या अंतर अनुभव होता है? आपने बचपन से दीवाली की शोभा व उत्साह का अनुभव किया है। आपकी सबसे यादगार दीपावली कौन सी है? वर्णन कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- सोचिए, यदि पर्व न होते, तो जीवन कैसा लगता? क्या आप पर्वों के पीछे छिपी मैत्री व सद्भाव की भावना का विस्तार अनुभव करते हैं? चिंतन-मनन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- पर्वों के पीछे परंपरा से चली आई पौराणिक कहानियों को ढूँढ़कर व सुनकर जानिए और दीपावली के चले आने के पीछे की कथा का वर्णन कीजिए।
- दीपावली पर अपने हाथों से बनाकर बधाई पत्र (ग्रीटिंग कार्ड) अपने मित्रों व रिश्तेदारों को भेजिए।

अध्याय

4. ग्राम-शोभा

गाँव प्रकृति की निर्मल छटा बिखेरते हैं। यहाँ कवि ने गाँव की अनुपम शोभा का वर्णन चित्रात्मक शैली में किया है।

फैली खेतों में दूर तलक,
मखमल की कोमल हरियाली।
लिपटी जिससे रवि की किरणें,
चाँदी की-सी उजली जाली।।

तिनकों के हरे-हरे तन पर,
हिल हरित रंग है रहा झलक।
श्यामल भूतल पर झुका हुआ,
नभ का चिर निर्मल नील फलक।।

रोमांचित-सी लगती वसुधा,
आई जौ-गेहूँ में बाली।
अरहर सनई की सोने की।
किंकणियाँ हैं शोभाशाली।।

उड़ती भीनी तैलाक्त गंध,
फूली सरसों पीली-पीली।
लो हरित धरा से झाँक रही,
नीलम की कली तीसी नीली।।

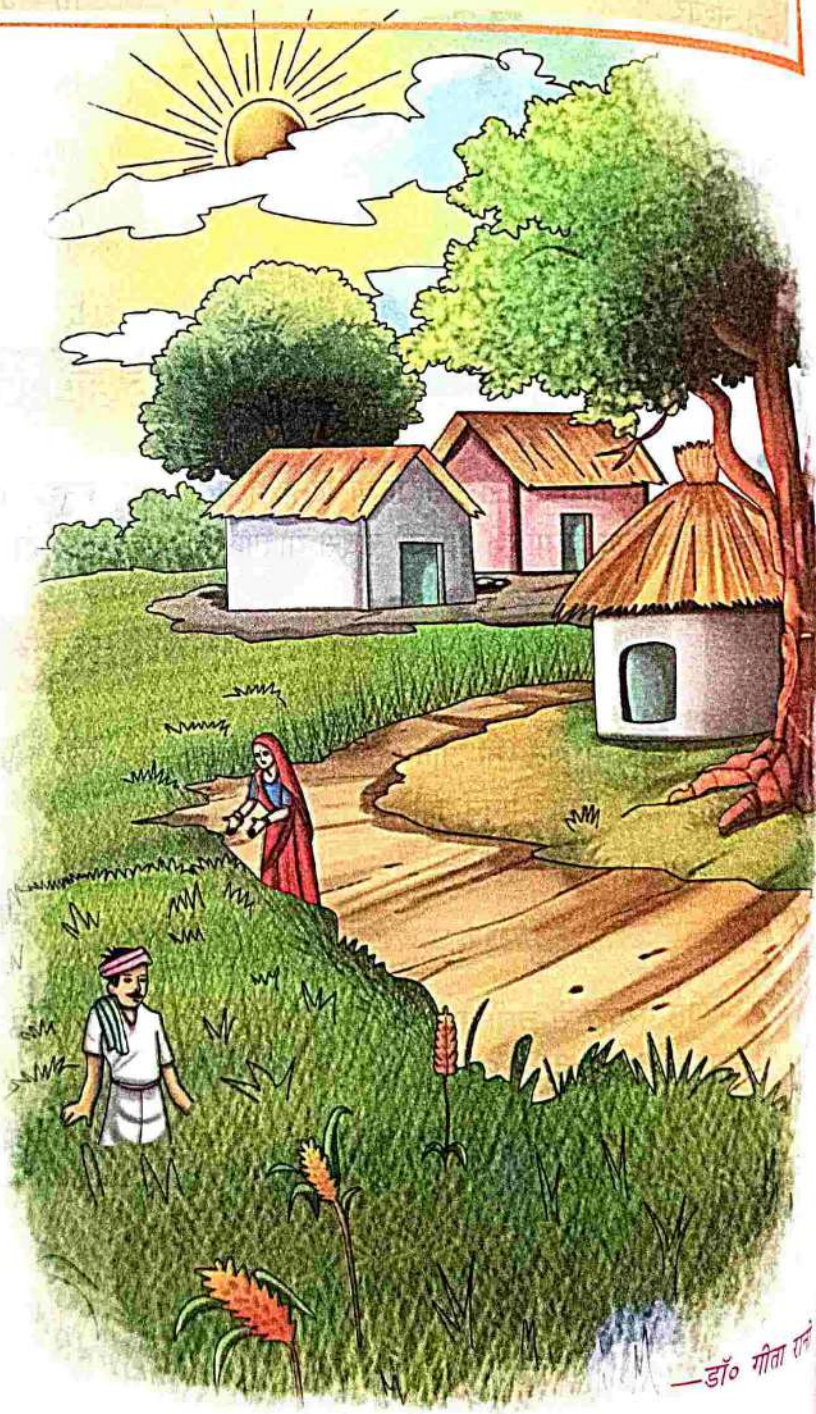

—डॉ॰ गीता रान

रंग-रंग के फूलों में रिल मिल,
हँस रही संखिया मटर खड़ी।
मखमली पेटियों-सी लटकी,
छीमियाँ, छिपाए बीच लड़ी।।

फिरती हैं रंग-रंग की तितली,
रंग-रंग के फूलों पर सुंदर,
फूले फिरते हैं फूल स्वयं,
उड़-उड़ वृंतों से वृंतों पर।।

अब रजत-स्वर्ण मंजरियों से,
लद गई आम्र तरु की डाली।
झर रहे ढाँक, पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली!

महके, कटहल, मुकुलित जामुन।
जंगल में झरबेरी झूली।
फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम
आलू, गोभी, बैंगन, मूली।।

पीले मीठे अमरूदों में,
अब लाल-लाल चित्तियाँ पड़ीं।
पक गए सुनहरे मधुर बेर,
अँवली से तरु की डाल जड़ीं!

लहलह पालक, महमह धनिया
लौकी औ' सेम फली, फैलीं।
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिर्चों की बड़ी हरी थैली।।

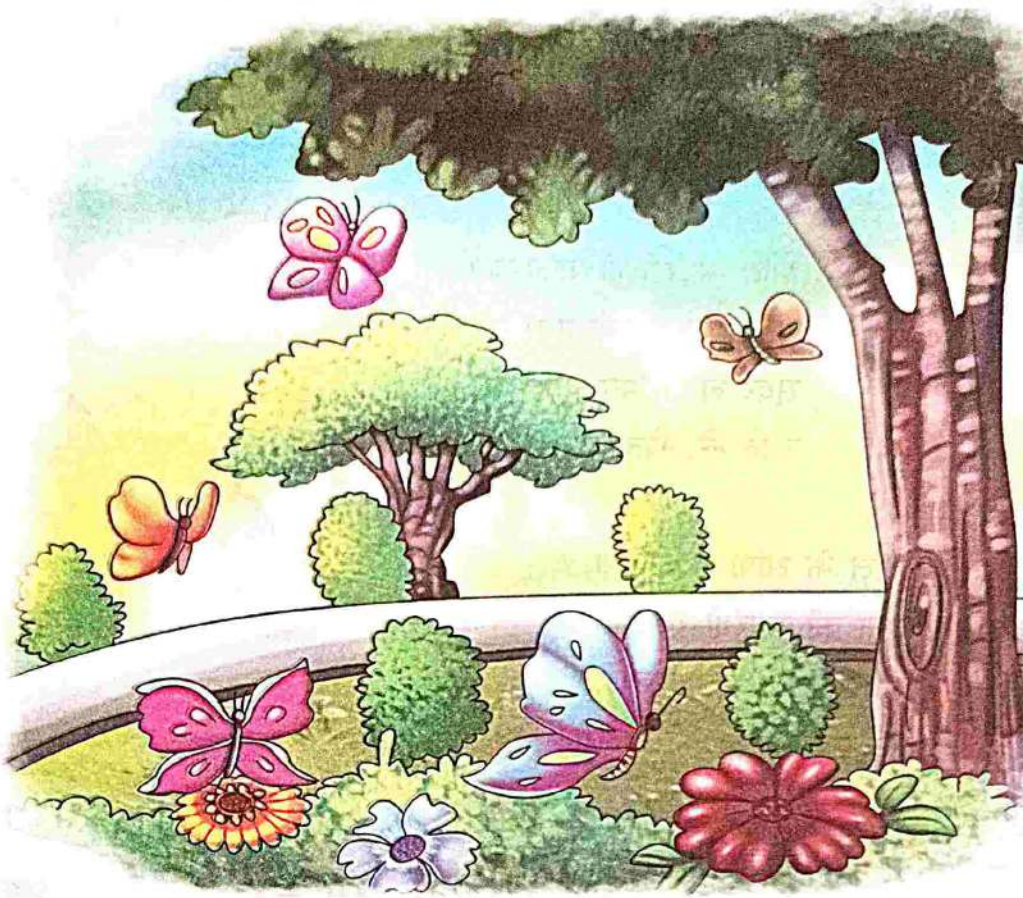

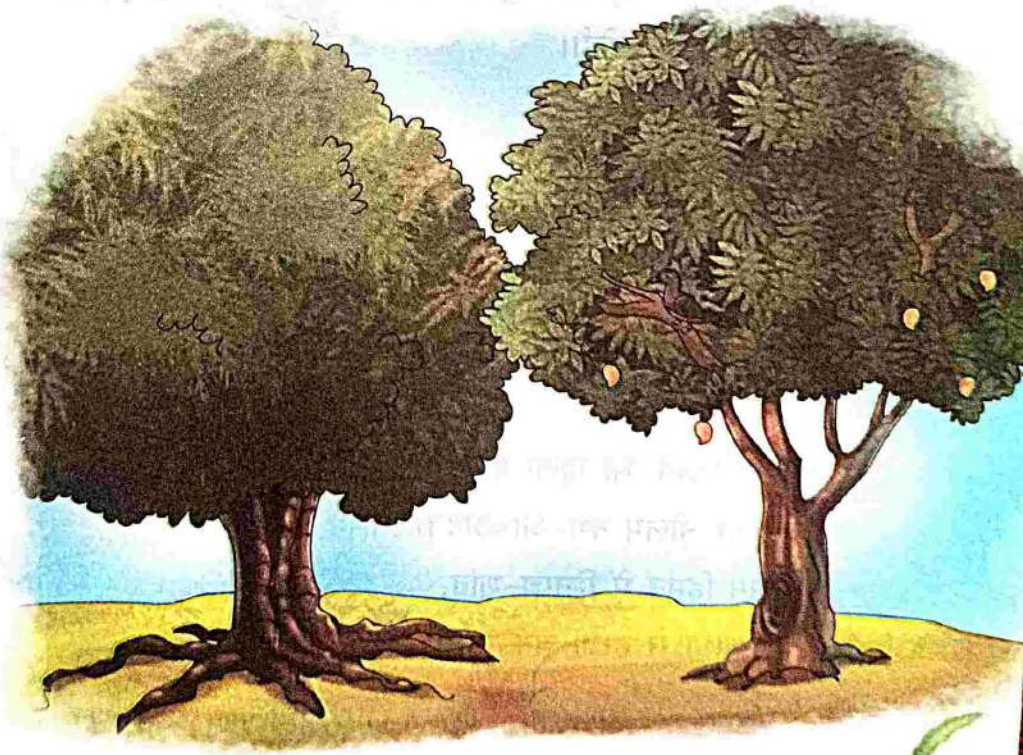

बगिया के छोटे पेड़ों पर,
सुंदर लगते छोटे छाजन।
सुंदर गेहूँ की बालों पर,
मोती के दाँतों से हिमकन।।

प्रातः ओझल हो जाता जग,
भू पर आता ज्यों उतर गगन।
सुंदर लगते फिर कुहरे से,
उठते-से, खेत, बाग, गृह, वन।।

बालू के साँपों से अंकित,
गंगा की सतरंगी रेती।
सुंदर लगती सरपत छाई,
तट पर तरबूज़ों की खेती।।

अंगुली की कंघी से बगुले,
कलगी सँवारते हैं कोई।
तिरते जल में सुरखाब पुलिन पर,
मगरौठी रहती सोई।।

हँसमुख हरियाली हिम-आतप,
सुख से अलसाए-से सोए।
भीगी अँधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में से खोए।।

मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम,
जिस पर नीलम नभ-आच्छादन।
निरुपम हिमंत में स्निग्ध-शांत,
निज शोभा से हरता जन-मन।।

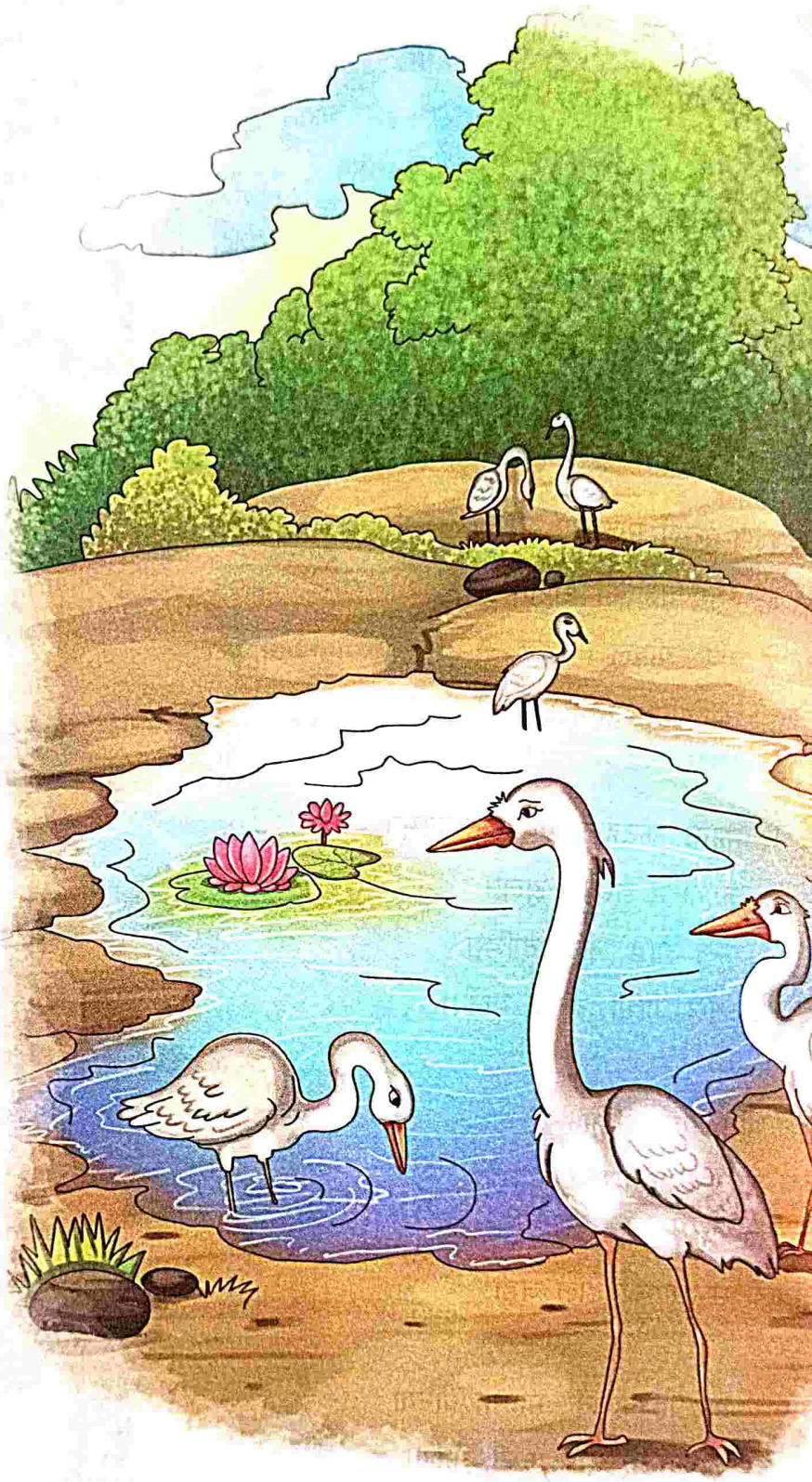

—सुमित्रानंदन पंत

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को प्रकृति के प्रति प्रेम व आदर करना सिखाएँ और उन्हें गाँवों के प्रदूषण रहित माहौल में कुछ दिन व्यतीत करने की प्रेरणा दें।

शब्दार्थ

हरित - हरा; भूतल - पृथ्वी का तल; रोमांचित - रोंगटे खड़े होना; वसुधा - पृथ्वी; किंकणियाँ - तगड़ियाँ; रजत-स्वर्ण मंजरिया - सोने-चाँदी जैसे मंजरियाँ; तैलाक्त - तेल से सनी; हिमकन - ओस की बूँदें; मुकुलित - खिली; पुलिन - तट; संखिया - गहरा हरा; मरकत - पन्ना; दाड़िम - अनार।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) खेतों में दूर-दूर तक क्या फैला है?

(ख) चाँदी की जाली की कल्पना कवि ने किससे की है?

(ग) हरित धरा से कौन झाँक रहा है?

(घ) कौन-कौन से पेड़ झर रहे हैं?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) टमाटर को कवि ने कहा है-

(अ) खट्टे ( ) (ब) हरे ( )

(स) मखमली ( ) (द) लाल-लाल ( )

(ख) कवि को गेहूँ की बालों पर हिमकन लगते हैं-

(अ) अंगारों जैसे ( ) (ब) मोती जैसे ( )

(स) फूलों जैसे ( ) (द) हीरों जैसे ( )

(ग) 'भू' पर 'गगन' कब उतरता प्रतीत होता है?

(अ) सायं ( ) (ब) प्रातः ( )

(स) दोपहर ( ) (द) रात ( )

(घ) गाँव को कवि ने कहा है-

(अ) मरकत का डिब्बा

(ब) पिछड़ा प्रदेश

(स) प्रकृति का वरदान

(द) भारत का हृदय

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) किसके तट पर तरबूज़ों की खेती कवि को सुंदर लगती है?

(ख) ग्राम जन-मन को किस प्रकार हरता है?

(ग) कौन-कौन सी सब्ज़ियों और फलों को गाँव से सटे जंगल में कवि ने फलते-फूलते देखा है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) इस कविता का उद्देश्य क्या है?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए–

अब रजत-स्वर्ण मंजरियों से,
लद गई आम्र तरु की डाली।
झर रहे ढाक पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली।।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए

(क) हरियाली _____

(ख) झलक _____

(ग) बाली _____

(घ) खड़ी _____

(ङ) फूली _____

(च) पड़ी _____

2. निम्नलिखित शब्दों का उनके समानार्थी शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) छोटे	(i) वाटिका
(ख) बगिया	(ii) पुष्प
(ग) दल	(iii) काया
(घ) फूल	(iv) लघु
(ङ) तन	(v) समूह

3. कविता में शब्द आया है— शोभाशाली। इसी प्रकार 'शाली' प्रत्यय जोड़कर लिखिए—

(क) भाग्य + _____ = _____

(ख) बल + _____ = _____

(ग) वैभव + _____ = _____

(घ) महिमा + _____ = _____

(ङ) गौरव + _____ = _____

रचना के क्षण

- भाव-भूमि– प्रकृति के सुंदर दृश्यों का पास से अवलोकन कीजिए और लिखिए कि किस प्राकृतिक दृश्य को देखकर आपके मन में कौन से भाव उठे?

कल्पना व चिंतन

- प्रकृति के दृश्यों के बिना हमारी पृथ्वी कैसी हो जाएगी? कल्पना कीजिए। यदि आप शहर की भीड़भाड़ और प्रदूषण से उकता गए हैं, तो कल्पना कीजिए कि आप स्वयं को प्रकृति के किस रूप के बीच में विचरने की इच्छा करेंगे–

(क) पर्वतों और झरनों के बीच।

(ख) नदियों के तट पर।

(ग) जंगलों में तथा गाँवों में।

क्रिया-कलाप

- किसी सुंदर प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाइए।
- 'प्रदूषण रहित पृथ्वी' इस विषय पर एक गोष्ठी आयोजित कीजिए।

पठन हेतु

गुणों की पहचान

एक बादशाह ने एक दिन अपने मंत्री से कहा, "मुझे अपने लिए एक नेक व परिश्रमी आदमी की ज़रूरत है। कोई तुम्हारी निगाह में चढ़े, तो लाना।"

बहुत दिनों की जाँच-पड़ताल के बाद मंत्री को एक आदमी अच्छा लगा। उसने उसकी नौकरी छुड़ा दी और उन्नति का आश्वासन दे, बादशाह के सामने पेश किया। बहुत देर तक तो बादशाह को अपनी बात ही याद न आई, बाद में बोले, "हाँ, उस समय शायद कोई बात मन में थी, पर अब तो कोई बात नहीं है।"

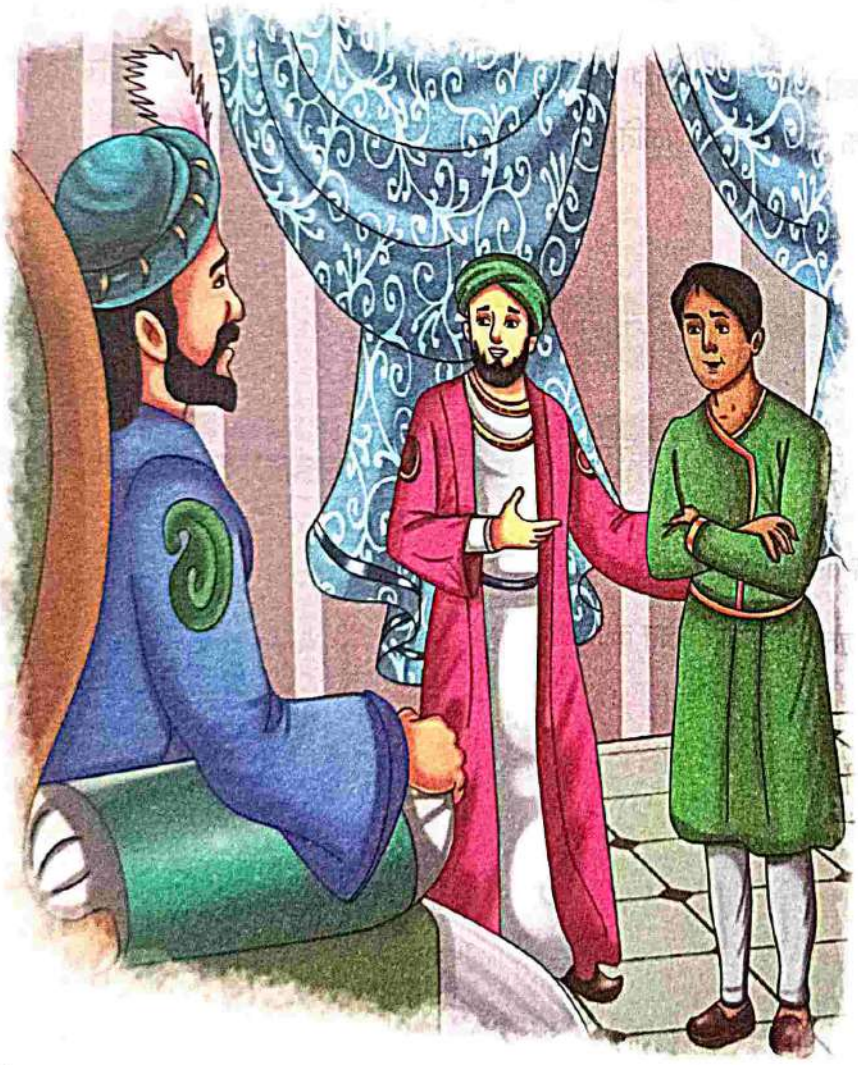

मंत्री ने कहा, "हुज़ूर, मैंने इसे हज़ारों में से छाँटा है और बढ़िया नौकरी से छुड़ाकर इसे लाया हूँ।"

बादशाह ने ज़रा सोचकर कहा, "हमारे पास तो इस समय कोई विशेष काम नहीं है, पर तुम बहुत कह रहे हो, तो हम अपने निजी कार्यालय में इसे चपरासी रख सकते हैं। वेतन केवल पंद्रह रुपये मिलेगा।"

मंत्री को बुरा लगा, पर उस युवक ने कहा, "मेरे लिए बड़ा वेतन यह है कि मुझे अपने बादशाह की सेवा करने का मौका मिलेगा।"

और वह इसके लिए तैयार हो गया। मंत्री जब उसे कार्यालय में छोड़ने गया, तो वहाँ धूल-ही-धूल थी क्योंकि बादशाह वहाँ न कभी जाते थे और न ही वहाँ कुछ काम होता था। मंत्री दुखी हुआ, पर युवक खुश था। उसने मंत्री के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट की।

लगातार कई दिनों तक कार्यालय को साफ़ किया और उसे शाही कार्यालय का रूप दिया। उस दफ़्तर में एक छोटी-सी कोठरी थी। युवक ने उसकी जाँच-पड़ताल की, तो पता चला कि पिछले सालों में बादशाह के पास जो निजी पत्र आए थे, उनके लिफ़ाफ़ों का ढेर उस कोठरी में था। उसमें से बहुत-से लिफ़ाफ़ों पर सोने की पच्चीकारी थी और रत्न जड़े थे। ये वे लिफ़ाफ़े थे, जो विवाह आदि के शुभ अवसरों पर दूसरे बादशाहों और अमीर-उमरावों के यहाँ से आए थे। युवक ने कारीगर लगाकर सब कीमती सामान लिफ़ाफ़ों से उतरवा लिया और बाजार में बेच दिया। जिससे कई हज़ार रुपयों की आमदनी हुई। उनमें से कुछ रुपयों से तो उसने कार्यालय के लिए सामान खरीदा और बाकी सरकारी खज़ाने में जमा कर दिया। जहाँ वह सामान बिका, उसकी भी रसीद उसने ली और जहाँ से खरीदा गया, उसकी भी।

राजा का निजी कार्यालय सचमुच शाही कार्यालय हो गया। कुछ ईर्ष्यालु चुगलखोरों ने बादशाह से उसकी शिकायत की कि वह रुपया लुटा रहा है। एक दिन बादशाह गुस्से में भरे कार्यालय गए। साफ़-सुथरा कार्यालय देखकर दंग रह गए, फिर भी उन्होंने तेज आवाज़ में पूछा, "तुमने यह सजावट किसके रुपये से की?"

"कार्यालय के रुपये से हुजूर!" कहकर उसने रद्दी लिफ़ाफ़ों की कहानी सुनाई और खजाँची से गवाही दिलाई कि कार्यालय का सामान खरीदने के बाद बचा हुआ रुपया खज़ाने में जमा किया गया है। बादशाह सच जानकर रीझ गए और उस युवक को उन्होंने अपने राज्य का वित्तमंत्री बना दिया। दूसरे मंत्री इससे परेशान हुए, क्योंकि वहाँ स्वयं बेईमानी करता था, न ही किसी को करने देता था। जो भी मंत्री बादशाह के पास जाता, किसी न किसी बहाने उस युवक की शिकायत करता, जिससे कि वह बादशाह की नज़रों में गिर जाए।

एक दिन रात में दो बजे बादशाह ने अपने सेनापति को बुलाकर कहा, "हमारे सब मंत्रियों को उनके घरों से उठाकर इस कमरे में ले आओ, लेकिन वे जिस हालत में हों, उसी हालत में लाए जाएँ। समझ लो, हमारे हुक्म को! अगर कोई पलंग पर सो रहा हो, तो उसे पलंग सहित ज्यों का त्यों लाया जाए और कोई कालीन पर बैठा चौपड़ खेल रहा हो, तो उसे कालीन समेत लाया जाए।"

कोई एक घंटे में सब मंत्री बादशाह के बड़े कमरे में आ गए। आठ में से सात मंत्री नशे में थे। उनमें से कुछ जुआ खेल रहे थे, जबकि उस समय वित्तमंत्री एक चौकी पर बैठे दीये की रोशनी में कोई सरकारी कागज़ देख

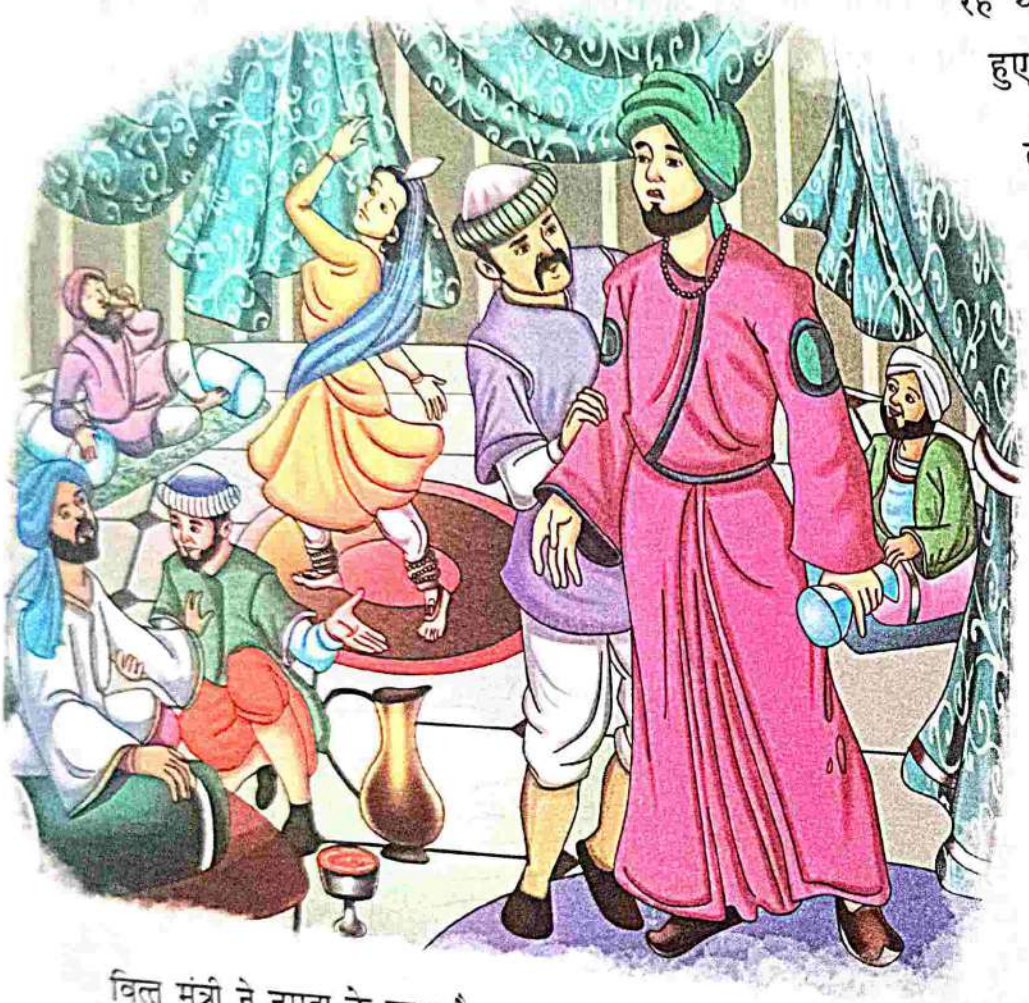

रहे थे। यह देख सब मंत्री बहुत लज्जित हुए।

तब बादशाह ने वित्तमंत्री ने पूछा, "जनाब, रात के दो बजे किस कागज में उलझे हुए थे?"

उसने उत्तर दिया, "हुजूर, दूर के इलाके से इस साल का जो राज-कर आया है, उसमें पिछले साल से एक पैसा कम है, तो बार-बार देख रहा था कि जोड़ में भूल है या सचमुच पैसा कम है।"

बादशाह ने अपनी जेब से एक पैसा फेंककर कहा, "लो, अब हिसाब ठीक कर दो और जाओ आराम करो!"

वित्त मंत्री ने नम्रता के साथ पैसा वापस करते हुए कहा, "हुजूर, पैसा तो मैं भी डाल सकता था, पर यदि कम है और उसके लिए पूछताछ न हुई, तो इससे अफसरों में ढील और बेईमानी पैदा होगी।"

बादशाह यह सुनकर बहुत खुश हुए और उन्होंने इस युवक को अपना प्रधानमंत्री बना लिया।

—कन्हैयालाल मिश्र, 'प्रभाकर'

अध्याय

5. देने का सुख

कुछ प्राप्ति पर हर्षित होना तो प्रायः हम सभी का अनुभव है, किंतु कुछ देने का सुख अलौकिक व दिव्य होता है। लेखक ने यहाँ उसी का वर्णन किया है।

भिखारी कभी सुखी नहीं रहता। उसे केवल भीख ही मिलती है। वह भी दया और तिरस्कार से युक्त। लेकिन हम सब भिखारी हैं। जो कुछ हम करते हैं, उसके बदले में हम कुछ चाह रखते हैं। हम लोग व्यापारी हैं। हम जीवन के व्यापारी हैं। गुणों के व्यापारी हैं। धर्म के व्यापारी हैं। अफ़सोस हम प्यार के भी व्यापारी हैं।

यदि तुम व्यापार करने चलो, तो वह लेन-देन का सवाल है। इसलिए तुम्हें क्रय और विक्रय के नियमों का पालन करना होगा। भाव में चढ़ाव-उतार होता ही रहता है और कब व्यापार में चोट आ लगे, यही तुम सोचते रहते हो। देखा जाए, तो व्यापार आइने में मुँह देखने के समान है। उसमें तुम्हारा प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। तुम अपना मुँह बनाते हो, तो आइने का मुँह भी बन जाता है। तुम हँसते हो, तो आइना भी हँसने लगता है। यही है खरीद-बिक्री और लेन-देन।

लेकिन अकसर हम फँस जाते हैं। क्यों? इसलिए नहीं कि हम कुछ देते हैं; वरन् इसलिए कि हम कुछ पाने की अपेक्षा करते हैं। हमारे प्यार के बदले हमें दुख मिलता है। इसलिए नहीं कि हम प्यार करते हैं, वरन् इसलिए कि हम इसके बदले में भी प्यार चाहते हैं। जहाँ चाह नहीं है, वहाँ दुख भी नहीं है। वासना, चाह- यही दुखों की जननी है। चाह और वासनाओं का परिणाम अंततः दुख ही होता है।

अतएव, सच्चे दुख और यथार्थ सफलता का सबसे बड़ा रहस्य यह है कि वही मनुष्य सबसे यशस्वी है, जो बदले में कुछ नहीं चाहता, जो बिल्कुल निःस्वार्थ है। यह तो एक विरोधाभास-सा लगता होगा, क्योंकि तुम्हारी नज़र में जो निःस्वार्थ हैं, वे इस जीवन में ठगे जाते हैं, उन्हें चोट पहुँचाई जाती है? ऊपरी तौर पर देखो, तो यह बात सच

मालूम होती है। ईसा मसीह नि:स्वार्थ थे, पर उन्हें भी सूली पर चढ़ाया गया। यह सच है, किंतु यह भी सच है कि उनकी नि:स्वार्थता एक महान विजय का कारण थी। है। उस विजय से करोड़ों जीवों पर यथार्थ सफलता के वरदान की वर्षा हुई।

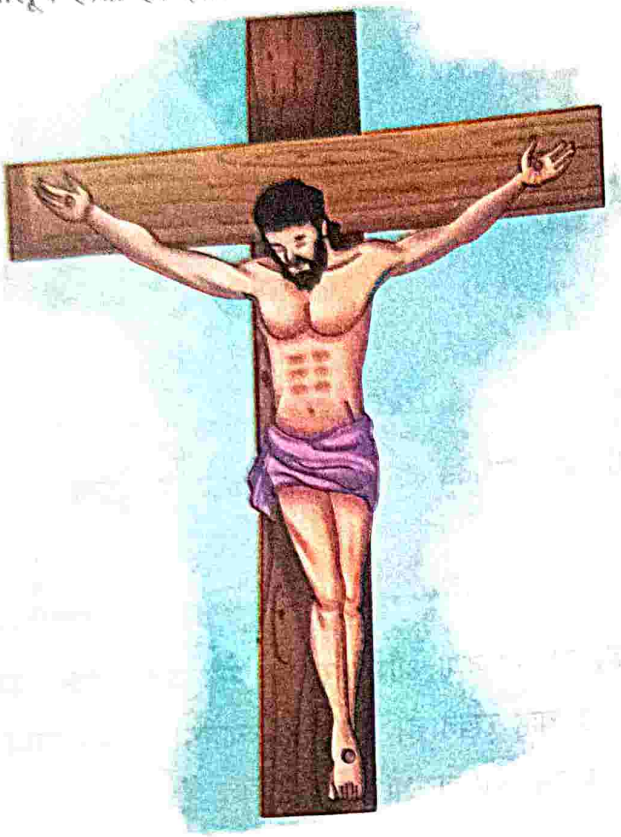

कुछ भी न माँगो, बदले में कोई चाह न रखो। तुम्हें जो कुछ देना हो, उसे दे दो। वह तुम्हारे पास वापस आ जाएगा। जब भी वापस आए, लेकिन आज ही उसका विचार मत करो। वह हज़ार गुना होकर वापस आएगा। पर तुम अपनी दृष्टि उस पर मत रखो। देने की ताकत पैदा करो। दे दो और बस काम खत्म हो गया। यह बात जान लो कि संपूर्ण जीवन दानस्वरूप है। प्रकृति तुम्हें देने के लिए बाध्य करेगी। इसलिए स्वेच्छापूर्वक दो।

इस संसार में तुम जोड़ने के लिए आते हो, मुट्ठी बाँधकर तुम चाहते हो लेना, लेकिन प्रकृति तुम्हारा गला दबाती है और तुम्हें मुट्ठी खोलने को मजबूर करती है। तुम्हारी इच्छा हो या न हो, तुम्हें देना ही पड़ेगा। जिस क्षण तुम कहते हो कि मैं नहीं दूँगा, तुम्हें प्रकृति की चोट सहनी पड़ती है। दुनिया में आए हुए प्रत्येक व्यक्ति को अंत में खुद को भी दे देना ही पड़ेगा।

प्रकृति के इस नियम के विरुद्ध बरतने का मनुष्य जितना अधिक प्रयत्न करता है, उतना ही अधिक वह दुखी होता है। हममें देने की हिम्मत नहीं है, प्रकृति की यह उदात्त माँग पूरी करने के लिए हम तैयार नहीं हैं और यही है हमारे दुख का कारण। जंगल साफ़ हो जाते हैं, पर बदले में हमें प्रकृति का कोप भोगना पड़ता है। हमें उष्णता मिलती है। सूर्य समुद्र से पानी लेता है, इसलिए कि वह वर्षा करे। तुम भी लेन-देन के यंत्र मात्र हो। तुम इसीलिए लेते हो कि तुम दे सको। बदले में कुछ भी मत माँगो।

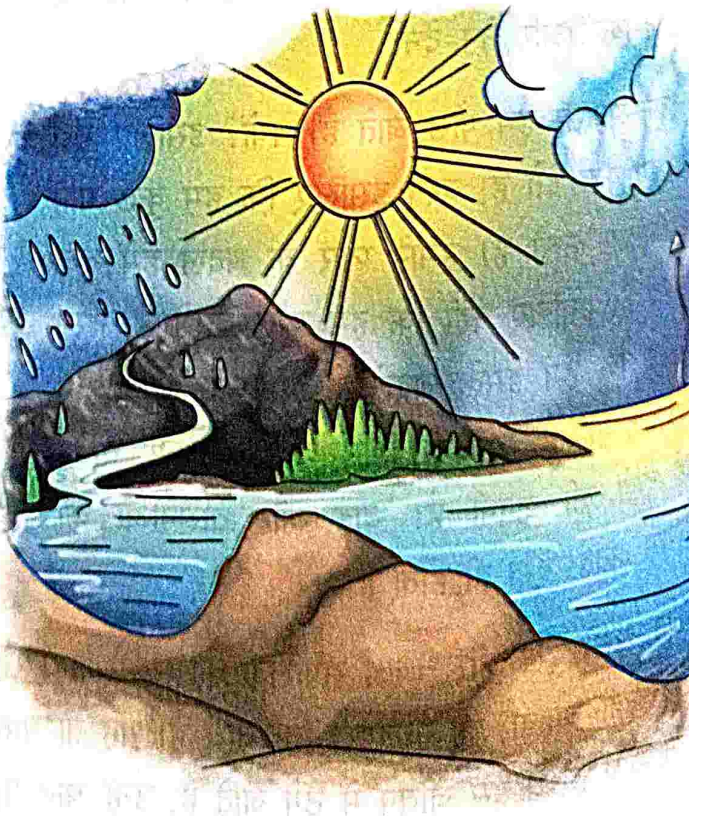

तुम जितना भी अधिक दोगे, उतना ही अधिक तुम्हें वापस मिलेगा। जितनी जल्दी इस कमरे की हवा तुम खाली करोगे, उतनी ही जल्दी यह बाहरी हवा से भर जाएगा। पर यदि तुम सब दरवाज़े खिड़कियाँ बंद कर लो, तो अंदर की हवा अंदर ही रहेगी और बाहरी हवा कभी अंदर नहीं आएगी।

अंदर की हवा दूषित, गंदी और विषैली बन जाएगी। नदी खुद को समुद्र में लगातार खाली किए जा रही है और वह फिर से भरती आ रही है। नदी से सीखो, समुद्र की ओर गमन बंद मत करो।

भिखारी मत बनो। अनासक्त रहो। जीवन का यह एक कठिन कार्य है। पर विपत्तियों के संबंध में बेकार ही सोचते मत रहो। कल्पना शक्ति द्वारा विपत्तियों का चित्र खड़ा करने से भी तुम्हें उनका सच्चा ज्ञान नहीं होता, जब तक कि तुम उनका प्रत्यक्ष अनुभव न करो। चाहे हमें अपने कार्य में असफलता मिले, फिर भी हमें अपना हृदय थामकर रखना होगा।

अनासक्त होने का अपना निश्चय हम प्रतिदिन दोहराते हैं। हम अपनी दृष्टि पीछे डालते हैं और अपनी आसक्ति और प्रेम के पुराने विषयों की ओर देखते हैं और अनुभव करते हैं कि उनमें से प्रत्येक ने हमें कैसे दुखी बनाया अपने प्यार के कारण हम किस प्रकार निराशा के गर्त में पड़ गए, सदा दूसरों के हाथों में गुलाम ही रहते आए और नीचे ही नीचे खिंचते गए। हम फिर से नया निश्चय करते हैं- आज से मैं खुद पर अपनी हुकूमत चलाऊँगा, मैं अपना स्वामी बनूँगा। पर समय आता है और हम फिर बंधन में पड़ जाते हैं। पक्षी जाल में फँस जाता है, छटपटाता है, फड़फड़ाता है। यही है हमारा जीवन। नब्बे प्रतिशत लोग प्राय: निराशावादी बन जाते हैं और प्रेम तथा सच्चाई में विश्वास करना छोड़ देते हैं। जो कुछ दिव्य एवं भव्य है, उस पर से भी उनका विश्वास उठ जाता है। लेकिन जब तक शरीर रोग के अनुकूल न हो, रोग नहीं होता। हमें वही मिलता है, जिसके हम पात्र हैं। आओ, हम अपना अभिमान छोड़ दें और समझ लें कि हम पर आई हुई कोई भी विपत्ति ऐसी नहीं है, जिसके हम पात्र न थे। फ़िजूल चोट कभी नहीं पड़ती इसका हमें ज्ञान होना चाहिए।

तुम आत्म निरीक्षण कर देखो, तो पाओगे कि ऐसी एक भी चोट तुम्हें नहीं लगी, जो स्वयं तुम्हारी ही की न हो। आधा काम तुमने किया और आधा बाहरी दुनिया ने और इस तरह तुम्हें चोट लगी। यह विचार हमें शांत बना देगा और साथ ही, इस निरीक्षण से आशा का आवाज़ आएगी – बाह्य जगत पर मेरा नियंत्रण भले न हो, पर मेरा अंतर्जगत मेरे अधिकार में है। मेरे अधिकार में जो दुनिया है, उसे मैं नहीं छोड़ूँगा फिर देखूँगा कि मुझे चोट कैसे लगती है? यदि मैं स्वयं पर सच्चा प्रभुत्व पा जाऊँ, तो मुझे चोट कभी न लग सकेगी।

—स्वामी विवेकानंद

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों को समझाएँ कि वे इतने समर्थ बनें कि अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक प्राणी को कुछ-न-कुछ दे सकें, भले ही वह तन की सेवा हो, धन या मन की।

शब्दार्थ

तिरस्कार - अपमान; व्यापारी - कुछ खरीदकर लाभ की आशा में उसे बेचने वाला; क्रय - खरीदना; विक्रय - बेचना; प्रतिबिंब - परछाई; वासना - लालसा; यथार्थ - वास्तविकता; निःस्वार्थ - अपना लाभ न चाहने वाला; बाध्य - मजबूर; उदात्त - उच्चकोटि की; अनासक्त - किसी के प्रति भी मोह न होना; प्रभुत्व - स्वामित्व।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक ने भिखारी किसे कहा है और क्यों?

(ख) हम लोग फँस क्यों जाते हैं?

(ग) वासना का क्या परिणाम होता है?

(घ) सबसे बड़ा यशस्वी कौन है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) हमें जो देना हो-

(अ) उसे सबको दिखाना चाहिए

(ब) उसका बदला माँगना चाहिए

(स) उसे बिना शर्त दे देना चाहिए

(द) सोच-सोचकर देना चाहिए

(ख) हम जो कुछ दूसरों को देते हैं-

(अ) वह मिट जाता है

(ब) वह लुट जाता है

(स) वह नुकसान कहा जाएगा

(द) हज़ार गुना होकर लौट आता है

(ग) जंगल काट देने पर-

(अ) वह फिर उग आता है

(ब) हमें उष्णता सहनी पड़ती है

(स) किसी की हानि नहीं होती

(द) लाभ होता है

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) हमें स्वेच्छापूर्वक क्यों दे देना चाहिए?

(ख) देने से इंकार करने पर प्रकृति क्या करती है?

(ग) आत्मनिरीक्षण करने पर हम क्या पाएँगे?

(घ) हम स्वयं को चोट से कैसे बचा सकते हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

जब तक शरीर रोग के अनुकूल नहीं होता, रोग नहीं होता। हमें वही मिलता है, जिसके हम पात्र हैं। फ़िजूल चोट कभी नहीं पड़ती, इसका हमें ज्ञान होना चाहिए।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए

(क) भीख माँगने वाला _____

(ख) व्यापार करने वाला _____

(ग) सौदा करने वाला _____

(घ) लिखने वाला _____

(ङ) दान देने वाला _____

(च) पढ़ने वाला _____

2. निम्नलिखित शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए

(क) आत्म-निरीक्षण _____ + _____

(ख) निराशावादी _____ + _____

(ग) असफलता _____ + _____

(घ) निःस्वार्थ _____ + _____

(ङ) विरोधाभास _____ + _____

3. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए

(क) अनुकूल _____

(ख) अनासक्त _____

(ग) प्रत्यक्ष _____

(घ) अंतर्जगत _____

(ङ) यथार्थ _____

(च) तिरस्कार _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** क्या कभी आपने किसी को बिना किसी कामना के कुछ दिया है? यदि हाँ, तो तब आपके मन में क्या भाव आए, व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने ही पास हर सुख व वस्तु रखना चाहेगा, तो क्या होगा? कल्पना कीजिए।

क्रिया-कलाप

- स्वामी विवेकानंद जी के विचारों पर लिखी कोई पुस्तक पढ़िए।
- पुस्तकालय से लेकर विवेकानंद जी की जीवनी पढ़िए।

अध्याय

6. संस्कृति की पहचान

संस्कृति के कारण ही मनुष्य पशुओं से उन्नत कहलाता है। मनुष्य अपनी संस्कृति में निरंतर परिमार्जन करता रहता है। इसी विषय पर विद्वान लेखक ने यहाँ अपने विचार प्रकट किए हैं।

संस्कृति और सभ्यता - ये दोनों दो शब्द हैं और उनके मायने भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी भी उन्नति करता है, दया, माया और परोपकार सीखता है, गीत, नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता हासिल करता है। एक वह भी समय था, जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था; जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह से वास करता था; जब उसे खेती करना भी नहीं आता था और वह कंदमूल या जंगली जीवों का गोश्त खाकर गुज़ारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था; वह या तो नंगा रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर अपनी लाज छिपाता था।

इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं, लेकिन इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, घर बनाकर रहने और

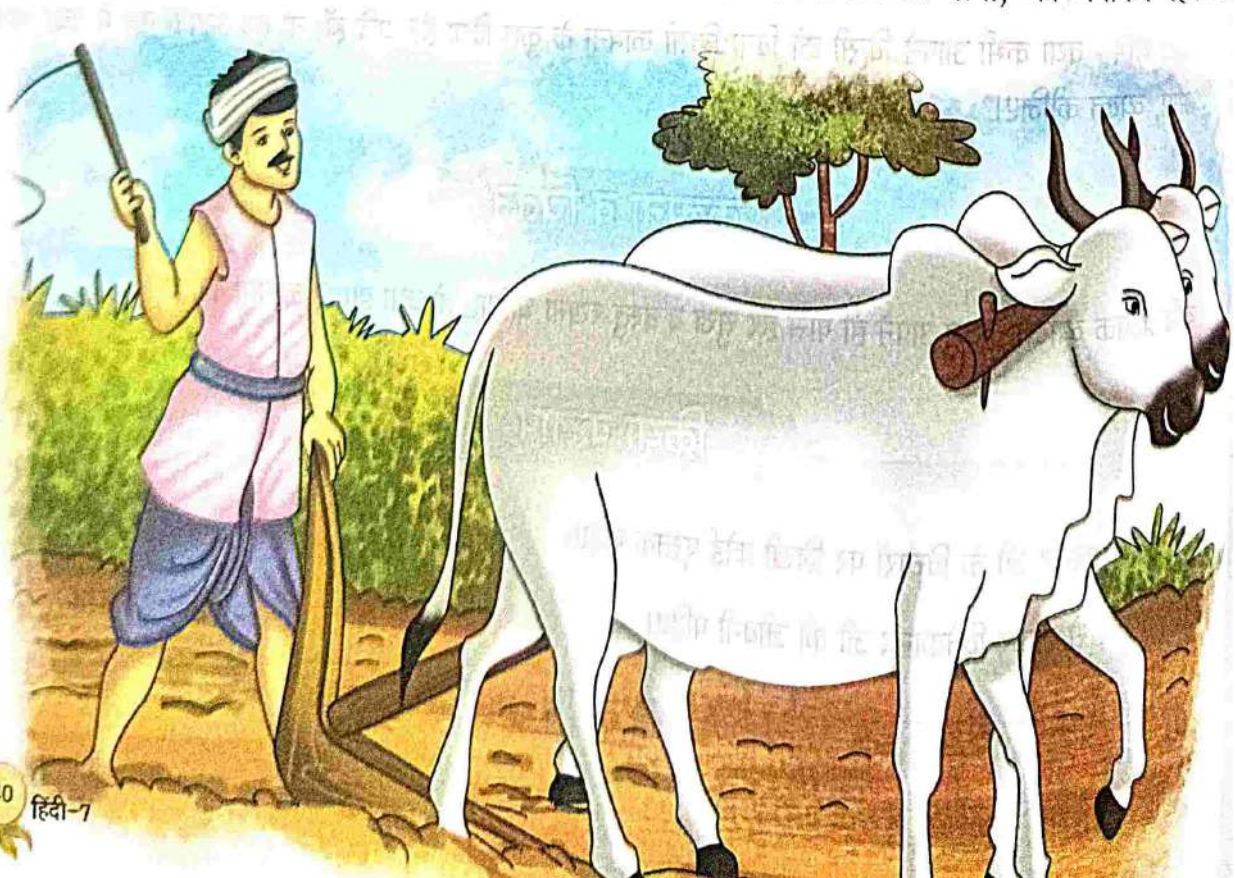

कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता में आने लगा। आज भी रेलगाड़ी, मोटर, और हवाई जहाज़, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति इन सबसे कहीं अलग है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। अच्छे भोजन का सामान हम सभ्यता के जरिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं, वह हमारी संस्कृति कहलाती है। प्रत्येक सभ्य आदमी सुसंस्कृत भी होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता; क्योंकि अच्छी से अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तबियत से नंगा हो सकता है और नंगा होना संस्कृति के खिलाफ की बात है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह है, जो हमारे पास है; लेकिन संस्कृति वह गुण है, जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं, गाय, भैंस, बैल, घोड़े, हाथी, मोर और हवाई जहाज़ भी होते हैं, मगर ये सारी वस्तुएँ हमारी सभ्यता के सबूत हैं, जिनसे यह जाना जा सकता है कि ज़िंदगी की मोटी और बाहरी सुविधाएँ हमने कहाँ तक हासिल की हैं? लेकिन संस्कृति इतने मोटे तौर से दिखलाई नहीं देती; वह हमारी प्रत्येक पसंद तथा आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं- यह हमारी संस्कृति बताती है; कपड़ा तैयार करना सभ्यता का काम है, लेकिन उसका रंग-रूप कैसा हो-यह हमारी संस्कृति बताती है; हथियार गढ़ना सभ्यता का काम है, लेकिन उस हथियार से किसी को मारना ठीक है या नहीं, यह बताना संस्कृति का काम है।

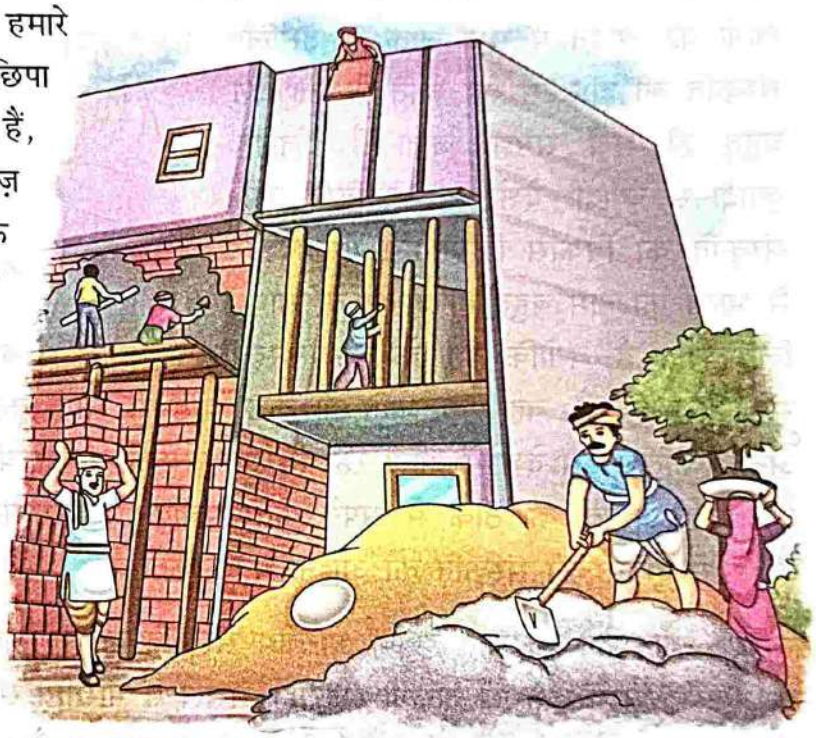

आज दुनिया में बड़े-बड़े बम और दूसरे हथियार बन रहे हैं क्योंकि सभ्यता के मामले में दुनिया बहुत आगे बढ़ गई है, लेकिन संस्कृति पुकार-पुकारकर कह रही है कि इन बमों और हथियारों को काम में मत लाओ क्योंकि इससे दुनिया बर्बाद हो जाएगी।

एक बात और है कि आदमी के भीतर जो छह विकार (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर) हैं, वे प्रकृति के दिए हुए हैं। मगर, ये विकार अगर बेरोक छोड़ दिए जाए, तो आदमी इतना गिर जाएगा कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाएगा। इसलिए आदमी इन विकारों पर रोक लगाता है और कोशिश करता है कि उसमें विकारों को बढ़ना नहीं घटना चाहिए, गुस्से को ज्यादा नहीं कम होना चाहिए और लोभ, मोह, मद, मत्सर को भी एक हद में रहना चाहिए। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है।

संस्कृति का काम आदमी के दोष को कम करना, उसके गुण को अधिक बनाना है। आदमी भी एक तरह का जानवर ही है, लेकिन जानवर के गुण यानी पशुत्व को छोड़कर वह जितना ही आगे बढ़ता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही अच्छी होती जाती है।

संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। एक जाति का धार्मिक रिवाज़ दूसरी जाति का रिवाज़ बन जाता है और एक देश की आदत दूसरे देश के लोगों की आदत में समा जाती है। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है, जिसने ज़्यादा-से-ज़्यादा देशों या जातियों की संस्कृति का विकास किया हो। ऐसे देशों में भारत का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है; क्योंकि यहाँ के लोग संस्कृति के मामले में बड़े उदार रहे हैं। यही नहीं, बल्कि, हम जिसे अपनी संस्कृति कहते हैं, वह एक जाति या कुछ थोड़े-से लोगों की संस्कृति नहीं है, बल्कि बहुत पुराने समय से जो अनेक जातियाँ इस देश में आती रही हैं। उन सबकी संस्कृतियों के प्रभाव हमारी भारतीय संस्कृति पर पड़ते रहे हैं और उन्हीं प्रभावों को ठीक से अपने भीतर पचाकर हमारी संस्कृति इतनी विशाल और उदार हो गई है कि आज वह सारी दुनिया की संस्कृति का आईना बन सकती है।

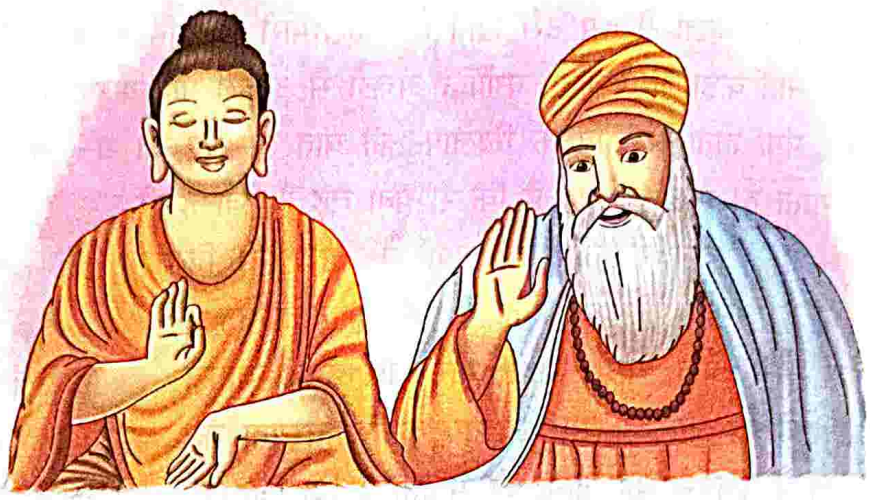

यह भी ध्यान देने की बात है कि भारतीय संस्कृति का जब-जब किसी विदेशी संस्कृति से मिलन हुआ, तब-तब हमारी संस्कृति में एक नई ताज़गी आ गई। असल में भारतीय संस्कृति में बसंत ऋतु बड़े पैमाने पर चार बार आई है और इन चारों मौकों पर हमारी फुलवारी में जो लहलहाहट पैदा हुई, जो फूल खिले, वे हमारी संस्कृति को आज भी ताज़ा बनाए हुए हैं। इन चार अध्यायों में पहला अध्याय वह है, जब आर्य इस देश में आए और द्रविड़ जाति से मिलकर उन्होंने उस संस्कृति की नींव डाली, जिसे हम हिंदू अथवा भारतीय संस्कृति कहते हैं। दूसरा अध्याय वह है, जबकि यह संस्कृति कुछ पुरानी हो गई और उसके खिलाफ़ महात्मा बुद्ध और महावीर ने विद्रोह किया, जिसके फलस्वरूप बहुत-सी रूढ़ियाँ दूर हुईं और यह संस्कृति एक बार फिर से नवीन हो गई। तीसरा अध्याय वह है, जब इस देश में मुसलमान आए और हिंदू-धर्म का इस्लाम से संबंध हुआ और चौथा अध्याय वह है जब भारत की मिट्टी पर हिंदुत्व और इस्लाम दोनों का संबंध ईसाई धर्म और यूरोप के विज्ञान और बुद्धिवाद से हुआ।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों को सभ्यता और संस्कृति का अंतर भली प्रकार समझाकर बताएँ।

शब्दार्थ

मायने - अर्थ; मत्सर - ईर्ष्या; उदार - विशाल हृदय वाले; तरक्की - उन्नति; पशुत्व - जानवरपन; सूक्ष्म - महीन।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) सभ्यता क्या है?

(ख) संस्कृति किसे कहते हैं?

(ग) आदमी के अंदर कौन-कौन से विकार हैं?

(घ) किस व्यक्ति की संस्कृति ऊँची मानी जाती है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) सभ्यता है–

(अ) बाहरी वस्तुएँ (ब) क्रोध जीतना

(स) प्रेम करना (द) ईमानदार होना

(ख) संस्कृति का काम है–

(अ) नृत्य करना (ब) भाषण देना

(स) अनाज उपजाना (द) व्यक्ति के दोषों को कम करना

(ग) संस्कृति बढ़ती है–

(अ) शक्ति से (ब) नेताओं द्वारा

(स) आदान-प्रदान से (द) राजनीति द्वारा

(घ) भारत के लोग संस्कृति के मामले में रहे हैं–

(अ) संकीर्ण (ब) बदकिस्मत

(स) उदार (द) विचित्र

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) संस्कृति और सभ्यता में क्या अंतर है?

(ख) पहले पहल व्यक्ति किस ढंग से जीवन-यापन करता था?

(ग) कौन-कौन सी वस्तुओं का उल्लेख लेखक ने सभ्यता के अंतर्गत किया है?

(घ) भारतीय संस्कृति में नई ताज़गी कब-कब आई?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) भारतीय संस्कृति के किन चार अध्यायों का उल्लेख पाठ में किया गया है?

(ख) भारतीय संस्कृति में बुद्ध और महावीर का क्या योगदान रहा है?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए-

संस्कृति धन नहीं है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह है, जो हमारे पास है; लेकिन संस्कृति वह गुण है, जो हममें छिपा हुआ है।

भाषा-ज्ञान

1. शब्दों में से उपसर्ग या प्रत्यय अलग कीजिए

(क) हिंदुत्व	हिंदू	+	(त्व)	(त्व)
(ख) बुद्धिवाद		+		( )
(ग) लहलहाहट		+		( )
(घ) भारतीय		+		( )
(ङ) अधिकता		+		( )

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए

(क) लेखक बड़ी विद्वान है।

(ख) लोग सभ्यता के पीछे दौड़ रही है।

(ग) केवल धन सुख नहीं दे सकती।

(घ) संस्कृति मनुष्य का असली पहचान है।

3. निम्नलिखित शब्दों को उनके समानार्थी शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) खिलाफ़	(i) बगावत
(ख) विद्रोह	(ii) नज़रिया
(ग) सुविधा	(iii) अभिमान
(घ) दृष्टिकोण	(iv) आराम
(ङ) मद	(v) विरुद्ध

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आप एक धनी व्यक्ति से मिलकर या एक गुणी व्यक्ति से मिलकर कैसा अनुभव करते हैं? आपकी रुचि किसमें अधिक रहती है? अपने भाव प्रकट कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए, यदि आज भी हम असभ्य होते, तो कैसे जीते? भारतीय संस्कृति ने हमें क्या-क्या दिया है? चिंतन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- 'हमारी संस्कृति' इस विषय पर एक वार्ता आयोजित कीजिए।
- 'हमारी स्वार्थपरता हमारी संस्कृति की जड़ें खोखली कर रहीं है', इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

अध्याय

7. ठंडा रेगिस्तान : लद्दाख

भारत भौगोलिक दृष्टि से भी अपने में इतनी विविधताएँ समेटे है कि इसे देखकर आश्चर्य होता है। आइए, जानें लद्दाख के विषय में ....

पहली बार जब मैं सितंबर 1955 में कश्मीर घाटी में स्थित कंगन में मीरा बगौल आश्रम में गया था, तो उसी समय से लद्दाख जाने का स्वप्न देखा करता था। मैं जब सोनमर्ग की ओर जा रहा था, तो रास्ते में मील के पत्थरों पर कारगिल लिखा देखकर मन में कई प्रकार की कल्पनाएँ उठती थी। मेरा एक सपना तिब्बत जाने का था, वह तो पूरा नहीं हुआ, लेकिन तिब्बत से मिलता-जुलता प्रदेश तो है लद्दाख, इसलिए वहाँ तो कभी भी जा सकता हूँ, इसका मुझे विश्वास था।

मई 1981 में, जब हम कश्मीर-कोहिमा चिपको पैदल यात्रा पर निकलने वाले थे, तो हम लेह या कारगिल से पदयात्रा प्रारंभ करना चाहते थे, लेकिन लद्दाख के संसद सदस्य पी. नमग्याल ने कहा, "लद्दाख जाकर क्या करोगे? वहाँ तो पेड़ ही नहीं हैं। कम-से-कम एक महीना तो वहाँ से श्रीनगर पहुँचने में ही लग जाएगा। फिर छोटी-छोटी बस्ती वाले गाँव हैं। लेकिन वे भी बहुत दूर-दूर।" हमें यात्रा श्रीनगर से प्रारंभ करनी पड़ी। यात्रा का पहला चरण चंबा (हिमाचल प्रदेश) में पूरा हुआ और वहाँ से लद्दाख के लिए लाहौल स्थित क्षेत्र में बस से चला गया। रोहतांग दर्रा पार करते ही एक नई दुनिया के दर्शन हुए, जिसमें नदी और पहाड़ तो थे, लेकिन पेड़ नहीं।

पिछले साल सितंबर में मैं जब मनाली गया, तो किसी ने बताया कैलांग से लेह तक बस सेवा प्रारंभ होने वाली है। इसमें देरी थी, इसलिए 20 सितंबर को श्रीनगर से लेह की ओर जीप से निकल पड़ा। 434 किमी लंबी इस

सड़क का रख-रखाव सीमा सड़क संगठन करता है। सप्ताह में सोमवार के दिन यह सड़क मरम्मत के लिए बंद रहती है। बालटाल से, जहाँ पर यातायात नियंत्रण होता है, हमें आगे बढ़ने की विशेष अनुमति मिल गई। रास्ते से कंगन से आगे नदी के उस पार, जहाँ पहले सघन वन थे, अब उनकी छँटनी हो गई। इसके बीच में एक ओर घुमंतू गुज्जरों के बीच खेती के लिए ज़मीन का वितरण था। ये ज़मीनें प्रायः तीखे ढालों पर हैं, जिस पर वे मक्का उगा रहे हैं और भूक्षरण की गति को तीव्र कर रहे हैं।

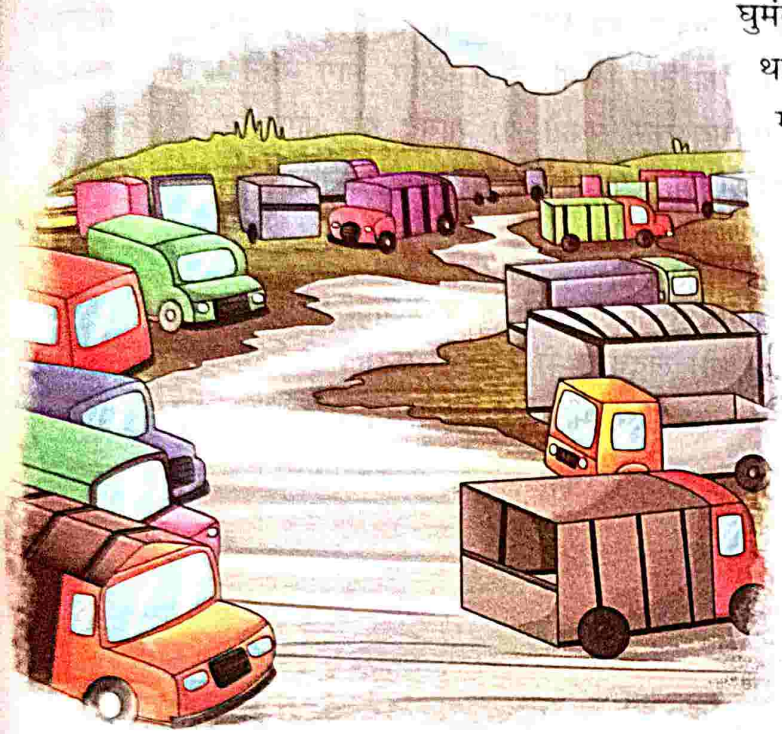

सोनमर्ग का लंबा और चौड़ा घास का मैदान अब लेह की ओर सामान लेकर जाने वाले सैकड़ों ट्रकों का विश्राम स्थल था। पहले यहाँ घोड़े चरते थे। पर्यटकों को थाणीबाज की ओर ले जाते हुए इक्के-दुक्के घोड़े अब भी देखे जा सकते हैं। सोनमर्ग से आगे बालटाल की पड़ताल चौकी है। यहीं से छोटी सिंधु को पार कर एक रास्ता अमरनाथ गुफा को जाता है। यह पहलगाँव वाले परंपरागत रास्ते से कुछ छोटा है, लेकिन कठिन है। बालटाल में घाटी समाप्त हो गई और हमारा रास्ता उन पर जा मिला फिर दर्रे की ओर चढ़ने लगा। 3,450 मीटर की ऊँचाई पर स्थित जोजिला दर्रा लद्दाख को कश्मीर से जोड़ता है। ऊँचे पहाड़ों के बीच गहरी जगहों को ढूँढ़कर पर्वतीय लोगों ने रास्ते बना दिए। इन स्थानों को 'ला' कहते हैं। दर्रे के लिए 'ला' शब्द का उपयोग कश्मीर से लेकर ठंडे अरुणाचल प्रदेश तक होता है। वहाँ भी हमने कश्मीर-कोहिमा चिपको पदयात्रा के दौरान 'ला' पार किया था।

जोजिला मई से अक्टूबर तक ही खुला रहता है, इसके लिए सीमा सड़क संगठन निरंतर कार्यरत रहता है, लेकिन 16 नवंबर, 1986 को यहाँ पर इस शताब्दी की भयंकरतम दुर्घटना हुई, जिसमें सैकड़ों लोग बर्फ़ के तूफ़ान के नीचे दब गए। लेह की ओर से आने वाले ट्रकों का काफ़िला आगे बढ़ा ही था कि यकायक हिमपात होने लगा। वे जानते थे कि बर्फ़ से पहले दर्रा पार नहीं किया, तो छह महीने तक यहीं फँसे रहेंगे। रास्ते की सफ़ाई के लिए लोग इंतज़ार कर रहे थे, ऊपर से बर्फ़ का रेंडर आया और सबके सब वहीं दब गए। अब भी टूटे ट्रकों के अवशेष नाले में पड़े हुए हैं।

जोजिला से पानी की एक धारा कश्मीर की ओर जा रही है, जो छोटी सिंधु से मिलकर आगे झेलम से मिलती है। दूसरी धारा लद्दाख की ओर जाती है और द्रास नाले से होकर सुरू नाले से मिलती है। ये सब मिलकर बड़ी सिंधु नदी बनाते हैं।

दर्रे से कुछ आगे बढ़कर लेह की ओर से आने वाले वाहनों का नियंत्रण करने के लिए मुग्गार में यातायात नियंत्रण चौकी है। यहाँ पर सब वाहन रुके हुए थे। ट्रकों की तीन किमी. लंबी कतार आगे बढ़ने के लिए व्याकुल चालकों की बोलचाल में हम गुस्सा और तेज़ी का अनुभव कर सकते थे। शायद यह प्राणवायु की कमी और ऊँचाई का असर हो। कभी-कभी तो उन्हें दो-तीन दिन भी यहाँ पर रुकना पड़ता है, इसलिए वे खाने-पकाने के बरतन व स्टोव सब कुछ साथ रखते हैं।

अब चारों ओर खल्लाट टीले थे। द्रास नदी या उसके सहायक किसी नाले के पास जहाँ लोगों ने नहर निकालकर सिंचाई का इंतज़ाम किया था, कुछ हरियाली दिखाई देती थी। लद्दाख में एक ही फसल होती है और वह है गेहूँ की फसल। सितंबर के अंत में गेहूँ कट रहे थे। गेहूँ के साथ मटर भी होती है। मजनू (बिलो), और पॉपलर के

पेड़ भी लोगों ने पनपाए हैं। इनसे, ईंधन और जाड़ों में घास के लिए पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। वन विभाग भी यहाँ पेड़ों को पनपा रहा है। हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि रेगिस्तान में चारों ओर ईंधन का भारी अभाव और भूखे पशुओं की भरमार होने के बावजूद भी कोई इन रोपवानियों को छोड़ता नहीं। रास्ते में हम थोड़ी देर मैलबेक गाँव में रुके, जहाँ लद्दाख में प्रवेश करते ही कारगिल के गाँवों में मस्जिद की मीनारें दिखाई देती थीं। यहाँ हमें बौद्ध पूजा स्थल, जिसे स्थानीय लोग चंबा कहते हैं, दिखाई दिया है। पहाड़ पर भगवान बुद्ध की मूर्ति खुदी हुई थी।

यह सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र थी। कारगिल और लेह के बीच 3,700 मी० ऊँचा नामकुला दर्रा है। दोनों ओर रेत के टीले व सीधे खड़े पहाड़ दिखाई देते हैं। यहाँ इतनी ऊँचाई पर भी महिलाएँ भेड़-बकरियाँ चरा रहीं थीं। जहाँ भी थोड़ी-सी नमी के कारण घास का तिनका दिखाई देता, बकरियाँ ढूँढ़-ढूँढ़कर उसे चट कर जातीं। दूसरा दर्रा हमें कौतुला 4,100 मी० ऊँचा मिला। बारह बज रहे थे, इसलिए तेज़ हवा चलनी प्रारंभ हो गई। कौतुला से नीचे सिंधु की घाटी तक 1,200 मी० की उतराई है। बीच में लामा गुरु का सुंदर गाँव और रेतीले टीलों पर बनी मिट्टी की विभिन्न आकृतियाँ वायुक्षरण के कारण बनी हैं। कौतुला से खात्से गाँव (2,900 मी०) तक की उतराई तक जाती हुई सड़क सर्पाकार है। खात्से गाँव के बाहर छोटर तैन (बौद्ध धार्मिक स्तूप) है। गाँव इतना हरा-भरा है कि लगता नहीं कि हम रेगिस्तान के बीच हैं। यहाँ की खूबानियाँ तो मशहूर हैं ही, यहाँ पर सेब भी होते हैं। देखने में बहुत खूबसूरत लेकिन रस और मिठास में कम। कारगिल से सुबह चलकर हम किसी तरह शाम को लद्दाख पहुँच गए। लद्दाख की आबादी पिछले पंद्रह वर्षों में कई गुना बढ़ गई है। यह प्राचीन व्यापार केंद्र जो भारत का ताशकंद और तिब्बत से व्यापारिक संबंध जोड़ता था, अब एक पर्यटक नगर का रूप ले रहा है। लेह की जनसंख्या सन् 1961 के मुकाबले दुगुनी से अधिक हो गई है। 1961 में यहाँ 3,720 लोग रहते थे, जो 1981 में 7,927 हो गए। लेह का स्वरूप भी बदल रहा है पहले यहाँ लोग खेती और पशुपालन पर आश्रित थे, अब पर्यटन उनका मुख्य व्यवसाय हो गया है। सन् 1974 में जब पहले-पहल क्षेत्र पर्यटन के लिए खोला गया तो यहाँ पर केवल 551 पर्यटक आए थे। सन् 1984 में उनकी संख्या 4,200 हो गई। अधिकतर पर्यटक पश्चिम देशों से आते हैं, जो तिब्बत के वर्जित प्रदेश होने के बाद लेह को देखकर संतोष करते हैं।

पश्चिमी ढंग के होटल धड़ाधड़ बन रहे हैं, जिसमें दैनिक खर्चा चार सौ रुपये तक आता है। इसमें खाना-पीना भी शामिल है। इसके अलावा निजी घरों में भी चालीस से सौ रुपये रोज़ देकर पर्यटक रहते हैं। पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण तो यहाँ का जीवन, रेगिस्तान की रंग-बिरंगी पहाड़ियाँ जो हिमशिखरों को छूती हैं और पुरानी इमारतों में टीले पर बना लेह का राजमहल व बौद्ध मठ मुख्य हैं।

पर्यटन जहाँ लेह में रुपये लेकर आया है, उसके साथ कई नई समस्याएँ भी पैदा हो गई हैं। लोगों का जीवन बाजार की अर्थव्यवस्था पर आश्रित हो गया है। प्राय: सभी चीज़ें बाहर से आने लगी हैं। पहले गेहूँ व जौ पैदा करते थे और लोगों की मुख्य खुराक सत्तू और मक्खन मिली नमकीन चाय होती थी, जो इस ठंडे प्रदेश में शरीर

को गरम रखने के लिए आवश्यक है, पर अब तो खेती में सब्ज़ियाँ उगाई जाती हैं, क्योंकि सेना व पर्यटकों के लिए इसकी माँग है। यहाँ 14 किलो तक की एक गोभी और 7 किलो तक की मूली हुई है। सब्ज़ी बेचकर लोग चावल खरीदते हैं। सत्तू के लिए कम ईधन की आवश्यकता पड़ती थी। अब ईंधन की आवश्यकता बढ़ गई है। जम्मू और कश्मीर की सरकार प्रति वर्ष 10,000 क्विंटल जलाऊ लकड़ी यहाँ भेजती थी। कश्मीर घाटी में बढ़ते हुए वन-विनाश को रोकने के लिए इसका परिणाम घटाकर आधा कर दिया है। रसोई गैस का प्रबंध तो कर लिया गया है, लेकिन जाड़े के दिनों में इसकी आपूर्ति नहीं हो सकती। बड़ा स्टॉक रखा नहीं जा सकता और जोजिला का प्रवेश द्वार तो छह महीनों के लिए बंद हो जाता है। गोबर के उपले भी अब जलाने को नहीं मिलते क्योंकि गेहूँ, जौ की खेती समाप्त होने के साथ-साथ चारे का भी अभाव हो गया है। चाय-सत्तू के लिए मक्खन बाहर से मँगाना पड़ता है। प्रति वर्ष एक करोड़ के मक्खन की लद्दाख में और मुख्यत: लेह में खपत होती है। लद्दाख की ऊर्जा की समस्या को हल करने की दिशा में एक प्रयोग लद्दाख पारिस्थितिकी केंद्र द्वारा किया जा रहा है। इस केंद्र की स्थापना 14 वर्ष पूर्व इंग्लैंड में जन्मी एक युवती हेलेन पारिस्थितिकी ने की थी। हेलेन 14 वर्षों से गर्मियों में लेह में ही रहती थी। यह केंद्र वर्ष में 300 दिनों तक चमकने वाली धूप का घरों को गरम रखने और खाना पकाने के लिए प्रयोग करने की दिशा में कार्य कर रहा है। इसके लिए उसे वैकल्पिक नोबल पुरस्कार (हाईट लिवलीहुड अवार्ड) देकर भी सम्मानित किया गया है।

लद्दाख के विकास के सिलसिले में लोग स्वर्गवासी सोलम नोरबो को आदरपूर्वक याद करते हैं। वे लद्दाख में जन्मे पहले इंजीनियर थे। उन्होंने इंग्लैंड में शिक्षा पाई थी और कश्मीर राज्य की सेवा में आ गए। सन् 1947 में उन्होंने लेह में हवाई अड्डा बनाया। उसके बाद लेह-श्रीनगर सड़क बनाई। वे लद्दाख के विकास के आयुक्त रहे और सेवा-निवृत होने पर राजदूत थे। शेख अब्दुल्ला ने उन्हें मंत्री भी बनाया था। लद्दाख में आज जो कुछ भी विकास दिखाई देता है, उसका श्रेय उन्हीं को है।

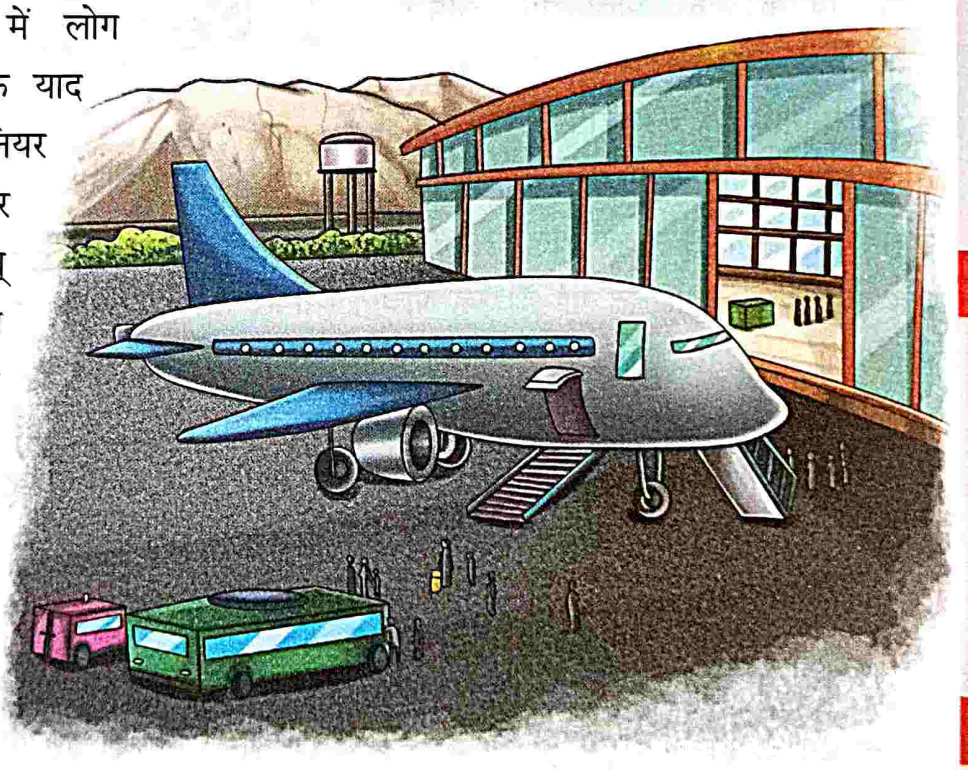

मुझे इस यात्रा के दौरान एक विभूति मिली, जिन्होंने 20 वर्षों में 17 लाख वृक्ष इस ठंडे रेगिस्तान में लगाए। इसमें से 77 प्रतिशत जीवित हैं। ये हैं 57 वर्षीय नवांग सांगे। नवांग सांगे सन् 1954 में लेह में फारेस्टर (वन कार्यकर्ता) नियुक्त हुए। उसके बाद वे फारेस्ट रेंजर हुए। अपने सेवाकाल में उन्होंने जांस्कर, नुब्रा, चांगथांग सर्वत्र पेड़ लगाए। 15 हजार फुट की ऊँचाई पर चांगथांग क्षेत्र में उन्होंने आठ लाख पेड़ लगाए। नवांग सांगे को प्रारंभ में तो लोगों को समझाने में बहुत कठिनाई होती थी। उन्हें विश्वास ही नहीं होता था कि पेड़ होंगे भी, लेकिन नवांग सांगे ने कहा सन् 1947 में तो पुराने बाग थे, जो कबीलियों के आक्रमण के समय तबाह हो गए थे, सेवानिवृत्त

होने के बाद नवांग सांगे अपने घर में खेती करते हैं। एक होटल भी उन्होंने बनाया। नाती-पोती से भरा-पूरा घर है उनका। वे पूजा में अपना समय बिताते हैं। मैंने उनको भगवान बुद्ध के इस उपदेश की हर व्यक्ति को अपने जीवन काल में कम-से-कम पाँच वृक्ष लगाने चाहिए और हर वृक्ष की पाँच साल तक रक्षा करनी चाहिए, याद दिलाई। उनकी आँखें उत्साह से चमक उठीं। उन्होंने वचन दिया कि उनका शेष जीवन अधूरे काम को पूरा करने में लद्दाख के ठंडे रेगिस्तान को हरा-भरा बनाने में लगेगा।

—सुंदरलाल बहुगुणा

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि भौगोलिक दृष्टि से पृथ्वी पर कितने प्रकार के अद्भुत क्षेत्र हैं। पर्यटन के महत्व पर भी चर्चा करें।

शब्दार्थ

सघन वन - घने जंगल; वितरण - बँटवारा; हिमपात - बर्फ़ की वर्षा; काफिला - झुंड; रेत - बालू; खल्लाट - पेड़-पौधों से विहीन; प्राणवायु - ऑक्सीजन; इंतज़ाम - व्यवस्था; वर्जित प्रदेश - परित्यक्त प्रदेश; आदरपूर्वक - सम्मान के साथ; सेवानिवृत्त - अवकाश प्राप्त।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक ने लद्दाख जाने का स्वप्न कब देखा था?

(ख) लद्दाख किस प्रदेश से मिलता-जुलता है?

(ग) दर्रे के लिए स्थानीय भाषा में किस शब्द का प्रयोग होता है?

(घ) जोजिला कब से कब तक खुला रहता है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) लेखक ने इस शताब्दी की भयंकरतम दुर्घटना कहा है-

(अ) बर्फ़ के तूफ़ान लोगों के दबने को

(ब) ज्वालामुखी फटने को

(स) सुनामी को

(द) अकाल पड़ने को

(ख) जोजिला से निकली पानी की एक धारा मिलती है-

(अ) गंगा से (ब) यमुना से

(स) व्यास से (द) झेलम से

(ग) लद्दाख में होने वाली एकमात्र फसल है-

(अ) गन्ने की (ब) गेहूँ की

(स) जौ की (द) बाजरा की

(घ) सोलम नोरबो थे-

(अ) एक कलाकार (ब) एक चिकित्सक

(स) एक दुकानदार (द) एक इंजीनियर

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेह में हवाई अड्डा कब बना?

(ख) आठ लाख पेड़ किसने लगाए थे और कहाँ?

(ग) प्रतिवर्ष कितने मक्खन की खपत लद्दाख में होती है?

(घ) बुद्ध ने वृक्षों के विषय में क्या कहा है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) नवान सांगे का नाम क्यों प्रसिद्ध है, उनकी उपलब्धि बताइए।

(ख) बुद्ध के किस उपदेश की चर्चा पाठ में की गई है?

भाषा-ज्ञान

1. वर्ण विच्छेद करिए

(क) युवती य् + उ + व् + अ + त् + ई

(ख) खपत ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(ग) कठिनाई ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(घ) भगवान ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(ङ) आबादी ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

2. अर्थ लिखकर अंतर स्पष्ट कीजिए-

(क) ओर _____ और _____

(ख) कुल _____ कूल _____

(ग) तक _____ ताक _____

(घ) कमल _____ कमाल _____

3. खोलकर लिखिए

(क) हिमपात _____ + _____

(ख) आदरपूर्वक _____ + _____

(ग) विनयशील _____ + _____

(घ) सेवानिवृत _____ + _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आपने भी किसी दुर्गम स्थान की यात्रा कभी की होगी। यदि की है, तो उसका वर्णन कीजिए। पर्वतीय क्षेत्रों में रहने के विषय में अपने भाव व विचार व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- यदि कभी बर्फ़ के अंधड या समुद्री लहरों में कोई जहाज़ या अन्य वाहन फँस जाए, तो क्या हो? कल्पना कीजिए। प्रकृति में कैसे-कैसे अद्‌भुत क्रिया-कलाप चलते रहते हैं, इस विषय पर चिंतन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- इसी प्रकार के अन्य कुछ यात्रा-वृत्तांत पढ़िए।
- आपने किसी रोमांचकारी फिल्म में ज़िंदगी-मौत से जूझते लोगों के दृश्य देखे होंगे, जैसे- 'टाइटेनिक' आदि। उसका वर्णन अपने शब्दों में कक्षा में सुनाइए।
- 'सुनामी लहर' के विषय में आप क्या जानते हैं? बताइए।

पठन हेतु

कालिंदी

इस नए मकान में जिस दिन हम रहने आए, कालिंदी हमें सीढ़ियों में मिली। पहले ही दिन से उसका व्यवहार हमारे साथ दोस्तों जैसा था। उसका रंग काला था और आँखें हरी-हरी चमकदार। बहुत ही सुंदर लग रही थी वह।

मेरी बहन मीता ने कहा भी था, ''देखो, यह कितनी सुंदर है!''

मैंने आगे बढ़कर उसे गोद में उठा लिया और कहा, ''आज से हम इसे कालिंदी कहेंगे।'' कालिंदी बहुत शांत स्वभाव की आज्ञाकारी बिल्ली थी। दोपहर को जब मैं और मीता स्कूल से लौटते, कालिंदी हमें दरवाज़े पर ही बैठी मिलती। हमें देखकर वह अपनी अगली टाँगों को आगे की ओर खींचकर अँगड़ाई लेती। अपनी छोटी-सी झबरी पूँछ उठाती और हमारे पास आकर अपना मुँह ऊपर की ओर उठा देती। इस समय उसकी आँखें आधी बंद और आधी खुली होतीं। हम उसके इस व्यवहार का मतलब समझते थे। वह चाहती थी कि हम उसे गोदी में उठाकर प्यार से सहलाएँ।

जब माँ हमें खाना खाने के लिए पुकारती, तो कालिंदी भी चुपचाप अपने स्टूल पर जा बैठती। न तो वह खाने पर झपटती, न लालच ही दिखाती, बस पंजों पर अपना सिर रखे बैठी रहती।

माँ उसके प्याले में जब दूध और उबले चावल डाल देती, तब वह आराम से उठती। पूँछ उठाकर बड़ी शान से प्याले की तरफ़ कूद जाती। प्याले के पास पहुँचकर वह गरदन घुमाती और माँ व हमारी तरफ देखकर बार-बार ''म्याऊँ'' बोलती। इसके बाद दूध पीने लगती। मीता को उसकी उस आदत पर बहुत हँसी आती। वह कहती, ''माँ, यह म्याऊँ बोलकर आपको धन्यवाद दे रही है।''

वह अपना मुँह तभी बाहर निकालती, जब उसका प्याला पूरी तरह साफ़ हो जाता।

कालिंदी अपने प्याले में कुछ भी नहीं छोड़ती, बल्कि वह प्याले को चाटकर बिल्कुल साफ़ कर देती।

हम माँ से कहते, ''माँ, कालिंदी बहुत समझदार है।'' बल्कि मुझे तो पक्का विश्वास था कि वह हमारी सभी बातें समझती है।

जब हम स्कूल का काम कर रहे होते, तब कालिंदी हमारे साथ चुपचाप कमरे के कोने में बैठी रहती। इस बीच न तो वह खेलती और न ही कुछ बोलती। बिल्कुल मूर्ति की तरह बैठी रहती। शाम को जब हम लॉन में आराम से

बैठे होते, तब वह हमसे ज़रूर खेलने की कोशिश करती। वह तेज़ी से हमारे चारों तरफ़ घूमती, उछलती, झाड़ियों में छिप जाती। गेंद से खेलने में उसे बड़ा मज़ा आता। छुट्टी के दिन हम दिन-भर घर पर रहते, तो यह उसके लिए बहुत खुशी का दिन होता।

कालिंदी की इन्हीं आदतों के कारण हमारे माँ और पिता जी भी उसे धीरे-धीरे प्यार करने लगे थे। मेरे दोस्त और मीता की सहेलियाँ भी कालिंदी को पसंद करने लगी थी। धीरे-धीरे कालिंदी हमारे घर आने वाले सभी लोगों को पसंद आने लगी। ऑफिस से घर आने पर पिता जी को जब कालिंदी नहीं दिखाई पड़ती, तो वह ज़ोर से कहते, "अरे भई, कालिंदी कहाँ है?" उनका इतना कहना होता कि कालिंदी जहाँ कहीं होती, फ़ौरन दौड़कर पिता जी के सामने आ जाती। वह उनके पाँव से लिपट जाती और अब तक न हटती, तब तक कि वह उसे अच्छी तरह सहला-पुचकार न लें।

हम पिता जी को दिन भर की बातें बताते। इन बातों में कालिंदी की ही बातें होती। पता नहीं कैसे वह जान जाती कि उसकी ही बात हो रही हैं और वह अधखुली आँखों से हमें देखती रहती।

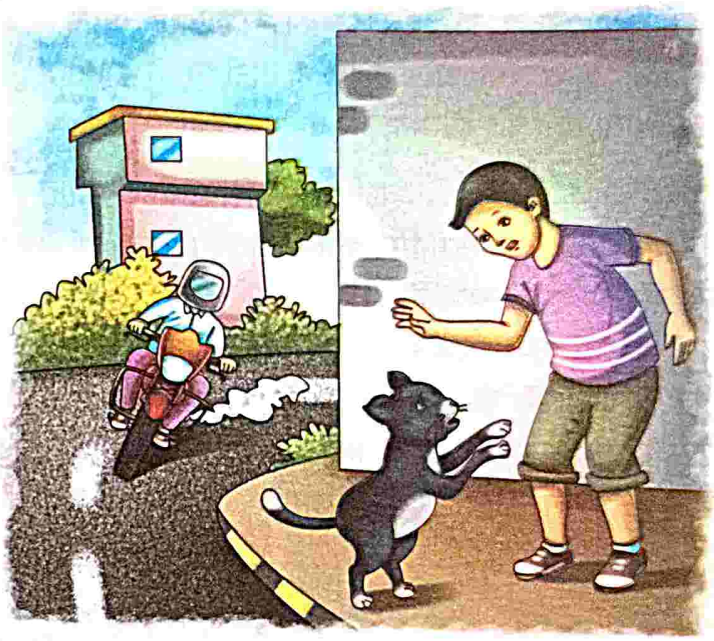

एक दिन मैं फुटपाथ पर खड़ा था। सड़क पार करके मुझे दुकान तक जाना था। सड़क पार करने के लिए ज्यों ही मैंने पहला कदम उठाया कि न जाने कहाँ से कालिंदी दौड़ती हुई आई और मेरे पैरों से लिपट गई। अभी मैं उसे उठा भी न पाया था कि एक मोटर साइकिल बड़ी तेज़ी से मेरे पास से गुज़र गई। मैं समझ गया कि कालिंदी मुझे बचाने के लिए ही मेरे पैरों से लिपटी थी। मैंने माँ को यह बात बताई, तो माँ को बहुत आश्चर्य हुआ।

उन्होंने मुझसे कहा, "समीर, तुम कालिंदी से ही सड़क पार करना सीखो! तुमने देखा कि वह पहले दाएँ देखती है, फिर बाएँ और जब देखती है कि सड़क खाली है, तभी वह सड़क पार करती है।"

"हाँ माँ, कालिंदी ऐसा ही करती है। वह समीर से तो बहुत समझदार है।" मीता ने मुझे चिढ़ाते हुए कहा।

मैं क्या कहता, चुप रहा। मैंने निश्चय किया कि मैं भी कालिंदी की तरह दोनों ओर देखकर ही सड़क पार किया करूँगा। इस तरह सावधानी बरतना अच्छा है।

एक रविवार की बात है। मेरी और मीता की लड़ाई हो गई। लड़ाई का कारण था- एक पेंसिल और रबड़। मीता ने मेरे बॉक्स से दोनों चीज़ें निकाल ली थीं। उसी बात पर मैं मीता से झगड़ पड़ा। धीरे-धीरे झगड़ा बढ़ गया। मैंने मीता का एक हाथ खींचा और घूँसा लगाने के लिए दूसरा हाथ उठाया ही था कि तभी कालिंदी मेरे हाथ पर कूद पड़ी। वह ज़ोर-ज़ोर से 'म्याऊँ-म्याऊँ' कर रही थी। जब मैंने मीता को छोड़ दिया, तब ही वह मेरे हाथ पर से उतरी। उसने मीता को प्यार से देखा। झगड़ने के कारण हम दोनों रो रहे थे। हमें रोता देख, कालिंदी पहले तो मीता के पास दौड़कर गई और फिर मेरे पास लौट आई। ऐसा उसने कई बार किया। मैं कालिंदी की बात समझ

रहा था। वह कह रही थी कि मीता तुम्हारी छोटी बहन है, इसे मारना नहीं चाहिए। मैंने अपने आँसू पोंछे और कालिंदी को गोद में उठा लिया। मीता भी मेरे पास आ गई। उसने भी कालिंदी को प्यार किया। कालिंदी से कहा, "कालिंदी! हम दोनों वायदा करते हैं कि हम आपस में नहीं लड़ेंगे।"

मैं हमेशा सोचता था कि बिल्लियों की दुनिया कैसी होती होगी? आखिर, वह हमें और हम उन्हें प्यार क्यों करते हैं? कालिंदी को पाकर मुझे सभी प्रश्नों के जवाब मिल गए थे। बिल्लियों की दुनिया वही है, जो हमारी है। हम उन्हें प्यार करते हैं, इसलिए वे हमें प्यार करती हैं। यह प्यार और दोस्ती का रिश्ता है।

गर्मी शुरू हो चुकी थी। हमारी छुट्टियाँ होने वाली थी। हमें पता था कि छुट्टियाँ होने पर दादी माँ हमारे पास रहने आ जाएँगी। मेरी दादी माँ बहुत अच्छी हैं। वह अच्छी तरह जानती हैं कि हमें क्या-क्या खाना पसंद है। वह बहुत-सी चीज़ें बनाना जानती हैं। रात में वह कहानियाँ भी सुनाती हैं। उनकी कहानियाँ इतनी मजेदार और लंबी होती हैं कि कहानी सुनते-सुनते हम कब सो जाते हैं, पता ही नहीं चलता।

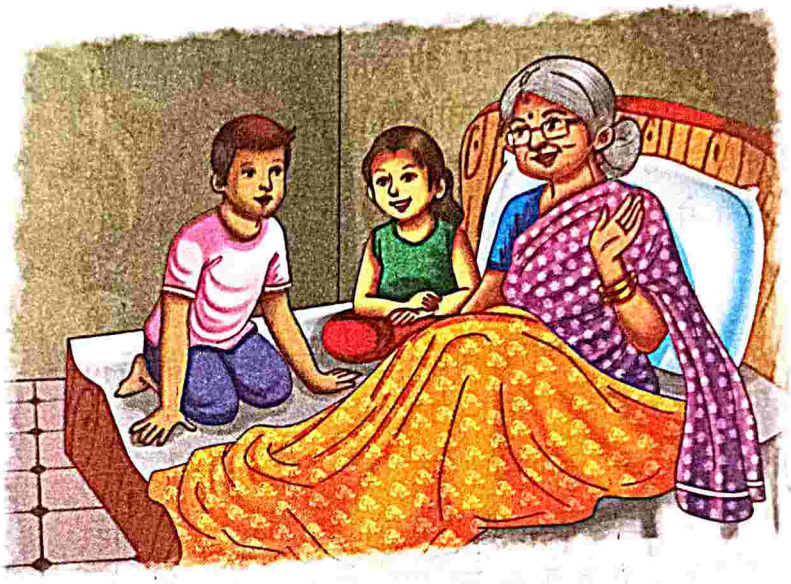

दादी माँ आ गई थी। वह हमारे लिए बहुत-सी किताबें, खिलौने और मिठाइयाँ लाई थी। दादी माँ ने हमको बहुत प्यार किया। मीता तो उनकी गोद में बड़ी देर तक बैठी रही। तभी मुझे कालिंदी की याद आई। मैं झट बाहर आया। कालिंदी को ज़मीन पर छोड़ दिया। "इसका नाम कालिंदी रखा है हमने, है न सुंदर?" मैंने पूछा।

दादी माँ ने बड़ा बुरा मुँह बनाकर कहा, "ये क्या? काली बिल्ली!"

मैं घबरा गया। शायद दादी माँ को कालिंदी पसंद नहीं आई थी। मीता भी दादी माँ के मन की बात समझ गई। हम दोनों ने दादी माँ को कालिंदी की बहुत-सी अच्छी आदतों के बारे में बताया, पर उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ। हमने उन्हें बताया कि कालिंदी हमारा कहना मानती है, किसी चीज़ को नहीं छूती, घर भी गंदा नहीं करती। तभी कालिंदी ने दादी माँ की तरफ प्यार से देखकर 'म्याऊँ' किया। मैंने उसकी म्याऊँ का अनुवाद करके बताया, "दादी माँ, यह आपको नमस्ते कर रही है।" लेकिन दादी माँ ने न तो उसकी तरफ़ देखा और न ही उसकी नमस्ते का जवाब दिया।

दादी माँ ने कुछ रुककर माँ से पूछा, "बहू, यह काली बिल्ली तुम्हारे घर में ही रहती है?"

माँ कुछ कह पातीं, इससे पहले मीता ने कहा, "हाँ, दादी माँ! यह घर तो इसी का है। हम तो इसके घर में रहते हैं!"

"क्या मतलब?"

"जब हम पहले दिन यहाँ आए थे, तो कालिंदी हमें इसी घर में रहती हुई मिली थी। वह पहले से ही यहाँ रह रही थी।" मैंने उन्हें बताया।

दादी माँ ने कालिंदी की तरफ तीखी नज़रों से देखा और बोली, "पर सुबह-सुबह काली बिल्ली देखना तो अपशकुन होता है।"

दादी माँ की इस बात से मैं चिंतित हो गया। मैंने कालिंदी को उठाया और घर के पिछवाड़े ले गया। मीता भी मेरे पीछे-पीछे थी। आम के पेड़ के नीचे बैठकर हमने कालिंदी को समझाया, "देखो कालिंदी, तुम दादी माँ से नाराज़ मत होना। दादी माँ बहुत अच्छी हैं। तुम उन्हें छूना नहीं। बस प्यार करना। कुछ दिनों में वह भी तुम्हें प्यार करने लगेंगी।

छुट्टियों के दिन और घर में दादी माँ का होना हमारे लिए हँसी-खुशी के दिन थे। हम दोनों भाई-बहन आराम से रहते, मज़े से खेलते-कूदते। लड़ाई-झगड़े का तो सवाल ही नहीं था, क्योंकि हमने कालिंदी से वायदा जो किया हुआ था। हम बस दादी माँ को खुश करने में लगे रहते, जिससे दादी माँ का मन कालिंदी की ओर से फिर जाए। हमारे इस व्यवहार का मतलब कालिंदी भी समझती थी। वह भी जैसा हम कहते, वैसा ही करती। हमारा कहना मानती। पिता जी और माँ भी इस बात को जानते थे कि दादी माँ कालिंदी को पसंद नहीं करती, पर वे भी क्या करते? बस, चुप रहते।

बेचारी कालिंदी! वह भी यह बात अच्छी तरह जानती थी कि दादी माँ उसे नहीं चाहती। तभी तो उन्होंने उसका स्टूल, चटाई और प्याला कमरे से निकलवाकर पीछे वाले बरामदे में रखवा दिया था। वैसे कालिंदी घर में इधर-उधर घूमती रहती। पर दादी माँ की आवाज़ सुनते ही अपने बरामदे में चली जाती। वह चुपचाप वहाँ बैठी रहती। रात में जब दादी माँ हमें कहानी सुनाती, तब भी वह अंदर नहीं आती, बाहर ही बैठी रहती। सिर्फ़ उसके कान खड़े हो जाते। वह भी कहानी सुनती रहती।

दादी माँ जब घर से बाहर जाती, तब कालिंदी दौड़ी आती और हमें बाहर लॉन में खेलने के लिए ले जाती। और जैसे ही दादी माँ लौटती, तो उनके पैरों की आहट पाते ही बरामदे में दुबककर बैठ जाती। दादी माँ उसे प्यार करने लगे इसके लिए वह भरसक अच्छा व्यवहार दिखाने की कोशिश करती।

दादी माँ जिस दिन से आई हैं, कालिंदी उस दिन से बरामदे के कोने में दुबककर सोती थी और जब तक दादी माँ की पूजा खत्म नहीं हो जाती, वह सोती ही रहती क्योंकि उनकी कुछ आदतें बहुत ही विचित्र थी। वह सुबह जल्दी उठती और आँख खुलते ही दोनों हथेलियों से आँखों को ढक लेती। आँखें ढके-ढके ही वह पूजाघर तक जाती, वहाँ भगवान की मूर्ति को वह दंडवत् प्रणाम करती, तब आँखें खोलकर सबसे पहले भगवान को देखती। इसके बाद वह नहाती-धोती। नहा धोकर फिर पूजाघर में पूजा करने चली जाती। वह घंटों पूजा करती रहती। पूजाघर में जाने से पहले वह रोज़ माँ को पुकारकर कहती, "बहू, मैं पूजा करने जा रही हूँ, देखना कहीं बिल्ली इधर न आने पाए।"

कालिंदी बरामदे में चक्कर लगाते हुए दादी माँ की बातें सुनती रहती। मीता कालिंदी की तरफ़ से कहती, "दादी माँ, कालिंदी ने आपकी बात सुन ली है। वह आपका कहा मानती है, इसलिए वह आपकी पूजा के समय पूजाघर में नहीं जाती और न ही आपके सामने आती है। वह आपको परेशान नहीं करना चाहती।"

"बेटी, बात ये नहीं है कि मेरा कहा मानती है या नहीं। पर मैं सुबह-सुबह काली बिल्ली का मुँह नहीं देखना चाहती!"

दादी माँ ने कहा।

"पर आप काली गाय को तो खूब देखती हैं, उसकी तो पूजा भी करती हैं।"

दादी माँ मेरी बात का जवाब नहीं देती। पूजा की थाली लिए अपना मुँह दूसरी ओर करके पूजाघर में चली जाती।

हमारे गाँव वाले घर में जहाँ दादी माँ रहती हैं। वहाँ एक काली गाय है। गाय का नाम केसर है। केसर का एक बछड़ा भी है। वह भी काला है। दादी माँ रोज सुबह उनका माथा छूकर हाथों को माथे से लगाती हैं। हमने बहुत सोचा, पर समझ नहीं पाए कि हम क्या करें जिससे उनका मन बदल जाए और वह कालिंदी को प्यार करने लगे। प्यार न भी करें, तो उससे नफ़रत भी न करें मैं और मीता दोनों ही परेशान थे, क्योंकि हम तो दादी माँ और कालिंदी दोनों को प्यार करते थे, न तो हम दादी माँ को छोड़ सकते थे और न कालिंदी को।

अब दादी माँ हमें अकसर ऐसी कहानियाँ सुनाने लगी थी, जिनमें काली बिल्ली के बारे में बुरी-बुरी बातें रहतीं। बिल्लियों के बारे में गलत धारणाओं और अंधविश्वासों की बहुत-सी कहानियाँ भी उन्हें याद थीं। लेकिन दादी माँ की कहानियों से हमारी कालिंदी तो बिल्कुल अलग लगती थी। वह तो हमें बहुत प्यार करती है, हमेशा हमारा भला चाहती है। एक बार तो उसने मुझे दुर्घटना से भी बचाया है। उसकी चमकदार हरी आँखों में हमारे लिए ढेर-सारा प्यार दिखाई देता है। ये सब बातें मैं सोचता रहता, पर दादी माँ से क्या कहता?

मेरा जन्मदिन आने वाला था। हम जानते थे कि मेरे सारे दोस्त जन्मदिन में शामिल होंगें, पर हमारी दादी माँ कालिंदी को उसमें शामिल नहीं होने देंगी, इसलिए मुझे व मीता को इस बार जरा-सा भी उत्साह नहीं था।

जन्मदिन से पहली शाम दादी माँ ने फूलों के कई हार बनाए। ये हार भगवान को पहनाए जाने के लिए थे। मेरे लिए तथा घर को सजाने के लिए भी फूलों के गुलदस्ते उन्होंने बनाए। शाम को सब काम से खाली होकर दादी माँ ने मुझे अपने पास बुलाया, गोदी में बैठाकर प्यार से पूछा, "मेरे बेटे, जन्मदिन पर तुझे मैं क्या उपहार दूँ?"

"कुछ खास नहीं दादी माँ, सब कुछ तो है मेरे पास", मैंने कहा। मैं उनकी पकड़ से छूटकर बाहर भाग जाना चाहता था।

रात को जब हम सब अपने-अपने बिस्तरों पर लेट गए, तो दादी माँ मेरे पास आई, "समीर बेटे, सुबह मैं तुम्हें जल्दी उठाने आऊँगी। कल से संवत्सर यानी हिंदुओं का नया वर्ष भी शुरू होगा। हम नए संवत्सर की भी पूजा करेंगे। अब सो जाओ।"

उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और अपने कमरे में सोने चली गई।

अगले दिन सुबह दादी माँ ने मुझे पुकारा। मैंने आँखें खोलीं, पर मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह दरवाज़े पर खड़ी थी। वह कालिंदी को बड़े प्यार से गोद में उठाए हुए थीं। मैंने अपनी आँखों को मला। माँ-पिता जी और मीता को पुकारा।

"दादी माँ, यह क्या..... कैसे हुआ?" मैंने रुक-रुककर पूछा।

दादी माँ मुस्करा रही थी, "चलो उठो, पूजा को देर होगी, यह सब बाद में बताऊँगी।" पूजा के बाद मैंने माँ से पूछा कि ऐसा क्या हुआ कि दादी माँ कालिंदी को प्यार करने लगी। माँ ने बताया कि कल रात बहुत तेज बारिश हुई।

दादी माँ ने कालिंदी को बाहर करके कमरा बंद कर लिया और बिस्तर पर लेट गई। कुछ देर में उन्हें याद आया कि फूलों के गुलदस्ते ओर मालाएँ पूजाघर में बंद रखी हैं। उन्हें खुली हवा में रहना चाहिए। वह तुरंत पूजाघर में गई और वहाँ की खिड़की खोल आई।

रोज़ की तरह सुबह दादी-माँ आँखों पर हथेली रखे हुए पूजाघर में गई और भगवान की मूर्ति के आगे साष्टांग प्रणाम किया। जब उन्होंने आँखें खोलीं, तो देखा कालिंदी अँधेरे में भगवान की मूर्ति के आगे साष्टांग प्रणाम करती हुई लेटी है।

दादी माँ ने वही से माँ को पुकारकर कहा, "लो, नए साल की सुबह कालिंदी ने भगवान को मुझसे पहले ही साष्टांग प्रणाम कर दिया। यह बड़ी समझदार और अच्छी बिल्ली है।" इतना कहकर दादी माँ कालिंदी को गोद में लिए ही माँ के पास गई और बोली, "बहू, आज मैं समीर को उसके जन्मदिन पर कालिंदी ही उपहार में दूँगी।"

अध्याय

8.

कर्तव्य और सत्यता

जीवन अनेक मूल्यों पर आधारित है जिनका पालन हमें करना ही चाहिए। इसी विषय के बारे में यहाँ विद्वान लेखक ने चर्चा की है।

कर्तव्य वह वस्तु है, जिसे करना हम लोगों का परम धर्म है और जिसके न करने से हम लोगों की दृष्टि से गिर जाते हैं और अपनी कुरुचि से नीच बन जाते हैं। प्रारंभिक अवस्था में कर्तव्य का करना बिना दबाव से नहीं हो सकता, क्योंकि पहले-पहल मन आप ही उसे करना नहीं चाहता। इसका प्रारंभ पहले घर ही से होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्तव्य माता-पिता की ओर, माता-पिता का कर्तव्य लड़कों की ओर दीख पड़ता है। इसके अतिरिक्त पति-पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के परस्पर अनेक कर्तव्य हैं। इसलिए संसार में मनुष्यों का जीवन कर्तव्यों से भरा पड़ा है। जिधर देखो, उधर कर्तव्य ही कर्तव्य दीख पड़ते हैं। बस, इसी कर्तव्य का पूरा-पूरा पालन करना हम लोगों का धर्म है और इसी से लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्तव्य करना न्याय पर निर्भर है और वह न्याय ऐसा है, जिसे समझने पर हम लोग प्रेम के साथ उसे कर सकते हैं।

हम लोगों के मन में एक ऐसी शक्ति है, जो हमें सभी बुरे कर्मों के करने से रोकती और अच्छे कर्मों की ओर हमारी प्रवृत्ति को झुकाती है। यह बहुधा देखा गया है कि जब कोई मनुष्य खोटा काम करता है, तब बिना किसी से कहे आप ही लजाता और मन में दुखी होता है। तुमने बहुधा देखा होगा कि

जब कभी भी कोई लड़का किसी मिठाई को चुराकर खा लेता है, तब वह मन में डरा करता है और पीछे से आप ही पछताता है कि मैंने ऐसा काम क्यों किया, मुझे अपनी माता से कहकर खाना था। इसी प्रकार का एक दूसरा लड़का, जो कभी कुछ चुराकर नहीं खाता, सदा प्रसन्न रहता है और उसके मन में कभी किसी प्रकार का डर और पछतावा नहीं होता। इसका क्या कारण है? यही कि हम लोगों का कर्तव्य है कि हम कभी चोरी न करें। परंतु जब हम चोरी कर बैठते हैं, तब हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें। दृढ़ विश्वास रखो कि जब तुम्हारा मन किसी काम को करने से हिचकिचाए और दूर भागे, तब भी तुम उस काम को न करो। तुम्हें अपना धर्म-पालन करने में बहुधा कष्ट उठाना पड़ेगा, पर इससे तुम साहस न छोड़ो। क्या हुआ, जो तुम्हारे पड़ोसी ठग-विद्या और असत्यपरता से धनाढ्य हो गए और क्या हुआ जो दूसरे नीच कर्म करके सुख भोगते हैं और तुम सदा कष्ट में रहते हो। तुम अपने कर्तव्य-धर्म को कभी न छोड़ो और देखो इससे बढ़कर संतोष और आनंद क्या हो सकता है कि तुम अपने धर्म का पालन कर सकते हो।

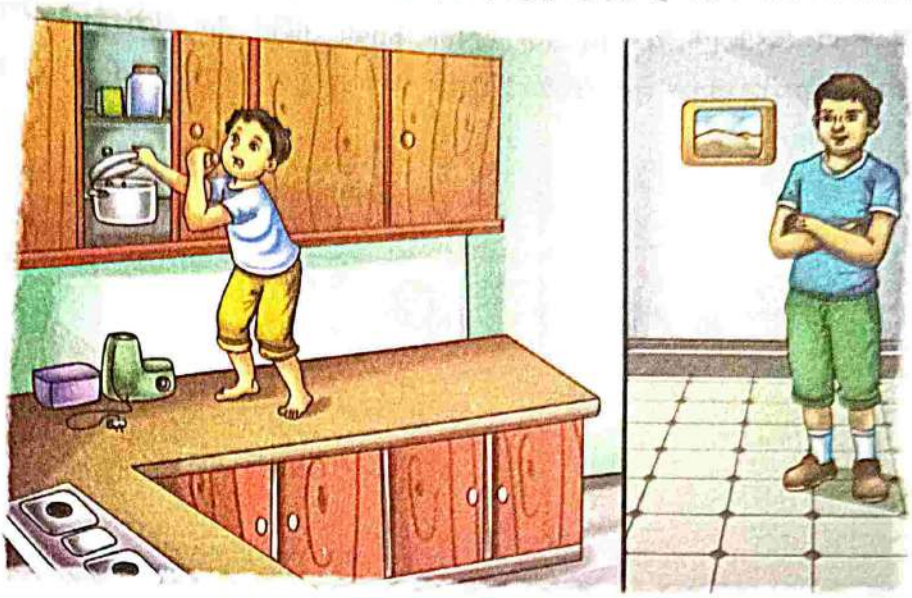

हम लोगों का जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यग्र रहता है। हम लोगों का समय सदा ही काम करते बीतता है। इसलिए हम लोगों को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि हम सदा धर्म के अनुसार काम करें और उसके पथ पर से न हटें, चाहे उसके करने में हमारे प्राण ही चले जाएँ, तो कोई चिंता नहीं।

धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है। मनुष्य के कर्तव्य-मार्ग के एक ओर तो आत्मा के भले और बुरे कर्मों का ज्ञान और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। बस, मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहता है और अंत में यदि उसका मन पक्का हुआ, तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपना धर्मपालन करता है। यदि उसका मन कुछ काल तक दुविधा में पड़ा रहे, तो स्वार्थपरता निश्चय उसे घेरेगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जाएगा। इसीलिए यह बहुत आवश्यक है कि आत्मा जिस बात को करने की प्रवृत्ति दे, उसे बिना अपना स्वार्थ सोचे झटपट कर डालना चाहिए। ऐसा करते-करते जब धर्म करने की बान पड़ जाएगी, तब फिर किसी बात का भय न रहेगा।

देखो, इस संसार में जितने बड़े-बड़े लोग हो गए है, जिन्होंने संसार का उपकार किया है और उसके लिए आदर और सत्कार पाया है, सभी ने अपने कर्तव्य को सबसे श्रेष्ठ माना है; क्योंकि जितने कर्म उन्होंने किए, उन सबों में अपने कर्तव्य पर ध्यान देकर न्याय का बर्ताव किया। जिन जातियों में यह गुण पाया जाता है, वे ही संसार में उन्नति करती हैं और संसार में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है। एक समय इंग्लैड में किसी जहाज़ में, जब वह बीच समुद्र में था, एक छेद हो गया। उस पर बहुत सी स्त्रियाँ और पुरुष थे। उसके बचाने को पूरा-पूरा उद्योग किया गया, पर जब कोई उपाय सफल न हुआ, तब जितनी स्त्रियाँ उस पर थी, सब नावों पर चढ़ाकर

विदा कर दी गई और जितने पुरुष उस पोत पर बच गए थे, उन्होंने उसकी छत पर इकट्ठे होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे अब तक अपना कर्तव्य पालन कर सके और स्त्रियों की प्राण रक्षा में सहायक हो सके। इसके विपरीत फ्रांस देश के रहने वालों ने एक डूबते हुए जहाज़ पर से अपने प्राण तो बचाए, किंतु उस पोत पर

जितनी स्त्रियाँ और बच्चे थे, उन सभी को उसी पर छोड़ दिया। इस नीच कर्म की सारे संसार में निंदा हुई। इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं।

कर्तव्य-पालन और सत्यता में बड़ा घनिष्ठ संबंध है। जो मनुष्य अपना कर्तव्य-पालन करता है। वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है, जिससे इस संसार में मनुष्य अपने कार्यों में सफलता पा सकता है, क्योंकि संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता। यदि किसी के घर सब लोग झूठ बोलने लगें, तो उस घर में कोई काम न हो सकेगा और सब लोग बड़ा दुख भोगेंगे। इसलिए हम लोगों को अपने कार्यों में झूठ का बर्ताव न करना चाहिए। अतएव सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है। संसार में जितने पाप हैं, झूठ उन सभी से बुरा है। झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता के कारण होती है। बहुत-से लोग सच्चाई का इतना थोड़ा ध्यान रखते हैं कि अपने सेवकों को स्वयं झूठ बोलना सिखाते हैं। पर उनको इस बात पर आश्चर्य करना और क्रुद्ध न होना चाहिए, जब उनके नौकर भी उनसे अपने लिए झूठ बोलें।

बहुत-से लोग नीति और आवश्यकता के बहाने झूठ की रक्षा करते हैं। वे कहते हैं कि इस समय इस बात को प्रकाशित न करना और दूसरी बात को बनाकर कहना, नीति के अनुसार, समयानुकूल और परम आवश्यक है। फिर बहुत-से लोग किसी बात को 'सत्य-सत्य' कहते हैं कि जिससे सुनने वाला यह समझे कि वह बात सत्य नहीं है, वरना इसका जो उल्टा है, वही सत्य होगा। इस प्रकार से बातों का कहना झूठ बोलने के पाप से किसी प्रकार कम नहीं है।

संसार में बहुत-से ऐसे भी नीच और कुत्सित लोग होते हैं, जो झूठ बोलने में अपनी चतुराई समझते हैं और सत्य को छिपाकर धोखा देने को झूठ बोलकर अपने को बचा लेने को अपना परम गौरव मानते हैं। ऐसे लोग ही समाज को नष्ट करके दुख और संताप को फैलाने के मुख्य कारण होते हैं। इस प्रकार झूठ बोलना अधिक निंदित और कुत्सित कर्म है।

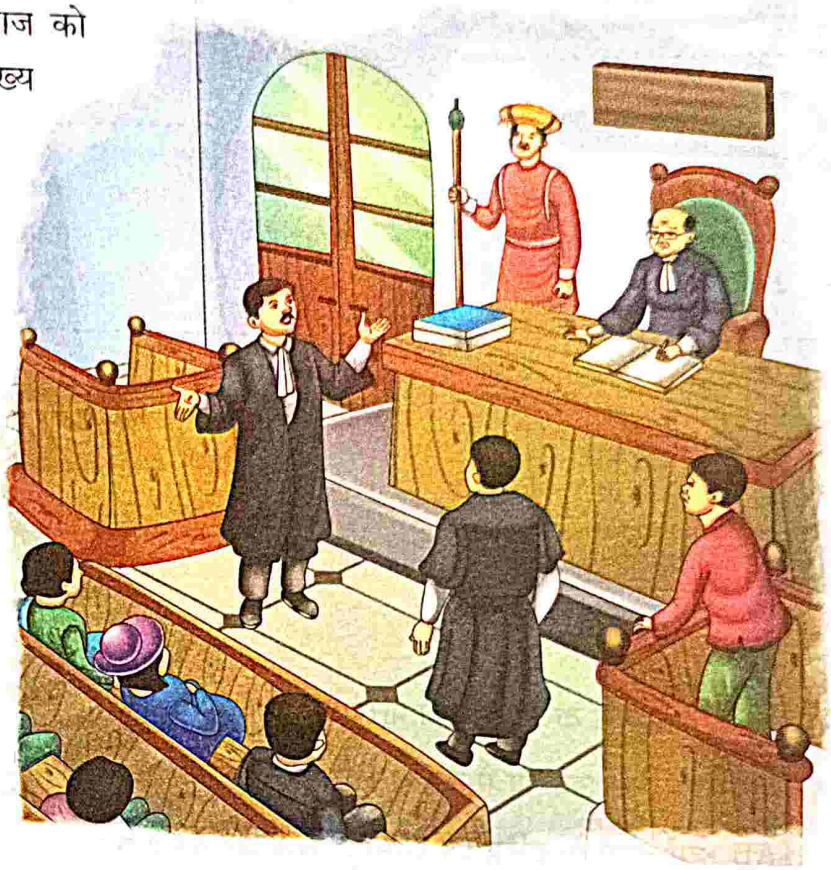

झूठ बोलना और भी कई रूपों में दीख पड़ता है; जैसे- चुप रहना, किसी बात को बढ़ाकर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बतलाना, झूठ-मूठ दूसरों के साथ 'हाँ' में 'हाँ' मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना और सत्य को न बोलना इत्यादि। जबकि ऐसा करना धर्म के विरुद्ध है, तब ये सब बातें झूठ बोलने से किसी प्रकार कम नहीं हैं। फिर ऐसे लोग भी होते हैं, जो मुँहदेखी बातें बनाया करते हैं, परंतु करते वही काम हैं, जो उन्हें रुचिकर लगता है। ऐसे लोग मन में समझते हैं कि कैसे सबको बनाकर हमने अपना काम कर लिया, पर वास्तव में वे अपने को ही मूर्ख बनाते हैं और अंत में उनकी पोल खुल जाने पर समाज के लोग उनसे घृणा करते हैं और उनसे बात करना अपना अपमान समझते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो अपने में किसी गुण के न रहने पर भी गुणवान बनना चाहते हैं। जैसे- यदि कोई पुरुष कविता न जानता हो, पर वह अपना ढंग बनाए रहे, जिससे लोग समझें कि यह कविता करना जानता है, तो वह कविता का आडंबर रखने वाला मनुष्य झूठा है और फिर वह अपने भेष का निर्वाह पूरी रीति से न कर सकने पर दुख सहता है और अंत में भेद खुल जाने पर सब लोगों की आँखों में झूठा और नीच गिना जाता है, परंतु जो मनुष्य सत्य बोलता है, वह आडंबर से दूर भागता है और उसे दिखावा नहीं जँचता है। उसे तो इसी में बड़ा संतोष और आनंद होता है कि सत्यता के साथ कर्तव्य-पालन कर सकता है।

इसीलिए हम सब लोगों का यह परम धर्म है कि सत्य बोलने को सबसे श्रेष्ठ मानें और कभी झूठ न बोलें, चाहे उससे कितनी ही अधिक हानि क्यों न होती हो। सत्य बोलने से ही समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा और हम आनंदपूर्वक अपना समय बिता सकेंगे, क्योंकि सच्चे को सब चाहते हैं और झूठे से सभी घृणा करते हैं। यदि हम सदा सत्य बोलना अपना कर्म मानेंगे, तो हमें अपने कर्तव्य का पालन करने में कुछ भी कष्ट न होगा और बिना किसी परिश्रम और कष्ट के हम अपने मन में सदा संतुष्ट और सुखी बने रहेंगे।

—डॉ० श्यामसुंदर दास

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों से पूछें कि क्या वे अपना कर्तव्य जानते हैं, और भली प्रकार इसे निभाते हैं, यदि नहीं तो उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाइए।

शब्दार्थ

कुरुचि - बुरी रुचि या पसंद; बहुधा - प्रायः, अकसर; धनाढ्य - धनी; चाटुकारी - झूठी प्रशंसा; व्यग्र - व्याकुल, परेशान; दुविधा - संशय; बान - आदत; कुटिलता - टेढ़ापन; नीति - सिद्धांत, आचार-विचार के लोक सम्मत नियम; कुत्सित - नीच; संताप - कष्ट दुख; निर्वाह करना - निभाना।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) कर्तव्य न करने का क्या परिणाम होता है?

(ख) प्रारंभिक अवस्था में कर्तव्य किस प्रकार किया जाता है?

(ग) हम लोगों के चरित्र की शोभा किस प्रकार बढ़ती है?

(घ) हमें बुरे कर्मों से कौन रोकता है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) इस निबंध के लेखक हैं-

(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ब) नंददुलारे वाजपेयी

(स) डॉ0 श्यामसुंदर दास

(द) रामचंद्र शुक्ल

(ख) धर्म पालन करने में बाधक है-

(अ) चंचल मन

(ब) समाज

(स) राष्ट्र

(द) परिवार

(ग) स्वार्थी लोग संसार में पाते हैं-

(अ) यश

(ब) लाभ

(स) सम्मान

(द) घृणा

(घ) झूठ बोलने को लेखक ने माना है-

(अ) मजबूरी (ब) आवश्यक

(स) पाप (द) अधिकार

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) झूठ के कौन-कौन से रूप हैं?

(ख) मुँहदेखी बातें बनाने वाले क्या सोचते हैं?

(ग) लेखक ने किसे हमारा परम धर्म बताया है?

(घ) हमें कब कर्तव्यपालन में कुछ भी कष्ट न होगा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) गुण न होने पर भी स्वयं को गुणवान के रूप में दिखाने का क्या परिणाम होता है?

(ख) हमें सच क्यों बोलना चाहिए?

(ग) किन लोगों को लेखक ने कुत्सित कहा है? ये क्या करते हैं?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) स्वार्थी _____

(ख) लज्जित _____

(ग) कुत्सित _____

(घ) निंदित _____

2. पाठ में आए इस शब्द युग्म की भाँति अन्य शब्द युग्म ढूँढ़कर लिखिए-

पति-पत्नी _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

3. शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे– कि, क्योंकि, ताकि, यानि, यदि, तो, तथा, किंतु, परंतु आदि।

दिए गए वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्दों को रेखांकित कीजिए-

(क) लोग झूठ इसलिए बोलते हैं ताकि वे लोगों को मूर्ख बना सकें।

(ख) झूठ थोड़ी देर तो चल सकता है किंतु शीघ्र ही पकड़ा जाता है।

(ग) सत्य बोलने से मानसिक शांति मिलती है, इसलिए हमेशा सच कहें।

(घ) यदि आप सच्चे हैं, तो किसी से भी डरने की आवश्यकता नहीं।

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आपने कभी झूठ भी बोला होगा, उसके क्या परिणाम हुए? आपके मन में क्या भावनाएँ उमड़ीं? आपकी मनोदशा कैसी हो गई? वर्णन कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए कि यदि आप किसी संकट में फँस जाएँ, तो क्या आप उससे उबरने के लिए झूठ का आश्रय लेंगे अथवा साहसपूर्वक सच पर डटे रहेंगे।

क्रिया-कलाप

- राजा हरिश्चंद्र की कहानी पढ़िए और महात्मा गांधी जी की प्रसिद्ध पुस्तक (सत्य के साथ प्रयोग) पुस्तकालय से लाकर पूरी पढ़िए।
- सच बोलने पर बल देने वाले कुछ दोहे या कोई कविता ढूँढ़कर लिखिए।

अध्याय

9.

हल्दीघाटी का युद्ध

महाराणा प्रताप अपनी वीरता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। हल्दीघाटी के युद्ध में उन्होंने अद्भुत वीरता का प्रदर्शन किया था। यहाँ उसी का वर्णन किया गया है।

निर्बल बकरों से बाघ लड़े,
भिड़ गए सिंह मृग-छौनों से।
घोड़े गिर पड़े गिरे हाथी,
पैदल बिछ गए बिछौनों से।।

हाथी से हाथी जूझ पड़े,
भिड़ गए सवार सवारों से।
घोड़ों पर घोड़े टूट पड़े,
तलवार लड़ीं तलवारों से।।

हय-रुंड गिरे, गज-मुंड गिरे,
कट-कट अवनी पर शुंड गिरे।
लड़ते-लड़ते अरि-झुंड गिरे,
भू पर हय विकल वितुंड गिरे।।

क्षण महाप्रलय की बिजली-सी,
तलवार हाथ की तड़प-तड़प।
हय-गज-रथ पैदल भाग-भाग,
लेती थी वैरी वीर हड़प।।

क्षण पेट फट गया घोड़े का,
हो गया पतन कर कोड़े का।
भू पर सातंक सवार गिरा,
क्षण पता न था हय-जोड़े का।।

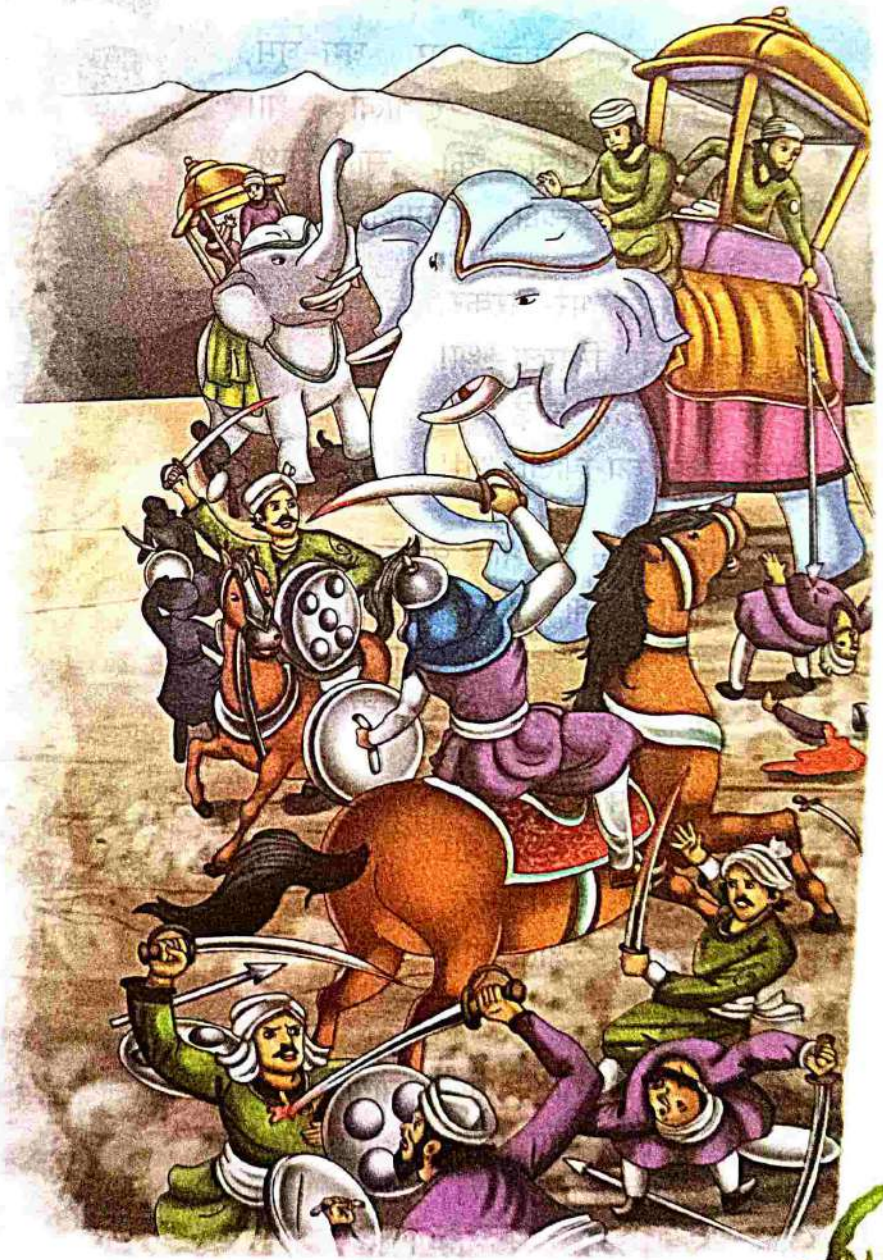

होती थी भीषण मार-काट,
अतिशय रण से छाया था भय।
था हार-जीत का पता नहीं,
क्षण इधर विजय, क्षण उधर विजय।।

धड़ कहीं पड़ा, सिर कहीं पड़ा,
कुछ भी उनकी पहचान नहीं।
शोणित का ऐसा वेग बढ़ा,
मुरदे बह गए निशान नहीं।।

मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान-रक्त का प्यासा था।

चढ़कर चेतक पर घूम-घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ,
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।

रण बीच चौकड़ी भर-भरकर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से
पड़ गया हवा का पाला था।।

गिरता न कभी चेतक-तन पर
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था।।

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।।

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को।।

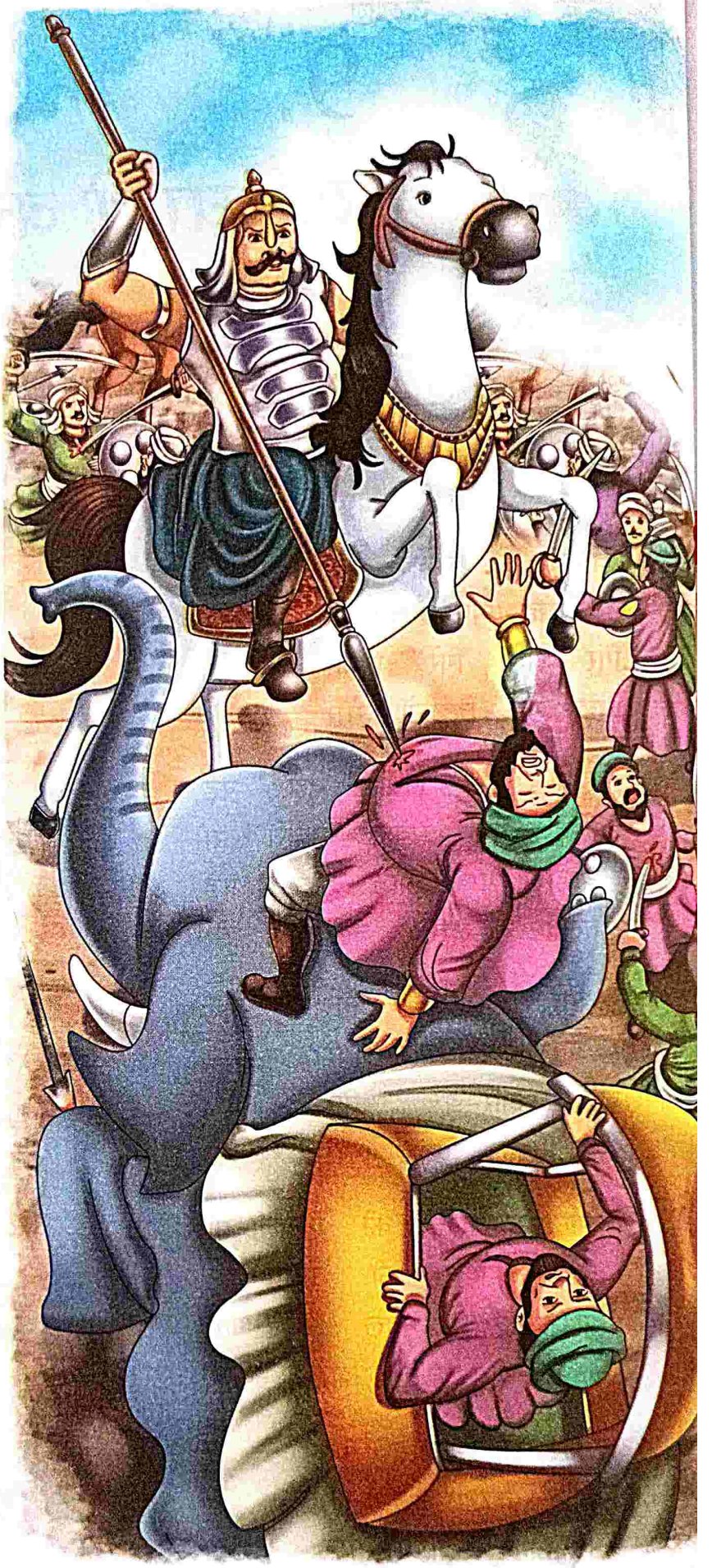

—श्यामनारायण पांडे

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को भारत के महान तथा वीर राजाओं के बारे में बताएँ तथा उन्हें कठिनाइयों का साहस से सामना करने की प्रेरणा दें।

शब्दार्थ

मृग-छौनें - हिरन का बच्चों; हय - घोड़ा; गज - हाथी; मुंड - सिर; अवनी - धरती; अरि - शत्रु; रण - युद्ध; शोणित - रक्त; प्रत्यक्ष - सामने।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) यहाँ कौन से युद्ध का वर्णन किया गया है?

(ख) शेर किससे भिड़ गए?

(ग) वहाँ किस प्रकार का दृश्य उत्पन्न था?

(घ) राणा प्रताप किसका प्रतिरूप लग रहे थे?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) निर्बल बकरों से लड़ रहे थे–

(अ) सिंह ⬡ (ब) बाघ ⬡

(स) हाथी ⬡ (द) कुत्ते ⬡

(ख) मेवाड़ केसरी कहा गया है–

(अ) महाराणा प्रताप को ⬡ (ब) शिवाजी को ⬡

(स) पृथ्वीराज चौहान को ⬡ (द) सभी को ⬡

(ग) मेवाड़ केसरी के घोड़े का क्या नाम था–

(अ) सुलतान ⬡ (ब) शेरा ⬡

(स) चेतक ⬡ (द) भूरा ⬡

2. रिक्त स्थान पर कविता के शब्द लिखिए

(क) हय-रुंड गिरे, _____,

_____ शुंड गिरे,

लड़ते-लड़ते _____,

_____ वितुंड गिरे।

(ख) गिरता न कभी _____

_____ कोड़ा था।

वह दौड़ रहा _____

_____ घोड़ा था।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) क्षण महाप्रलय की बिजली-सी,

तलवार हाथ की तड़प-तड़प।

हय-गज-रथ पैदल भाग-भाग,

लेती थी वैरी वीर हड़प।।

(ख) चढ़कर चेतक पर घूम-घूम,

करता सेना रखवाली था।

ले महामृत्यु को साथ-साथ,

मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए

(क) आसमान _____ _____ _____

(ख) घोड़ा _____ _____ _____

(ग) सिंह _____ _____ _____

(घ) हाथी _____ _____ _____

(ङ) भू _____ _____ _____

2. निम्नलिखित शब्दों को उनके उलटे (विलोम) अर्थ वाले शब्दों से मिलाइए-

(क) निर्बल	(i) कायर
(ख) वीर	(ii) अप्रत्यक्ष
(ग) विजय	(iii) सबल
(घ) प्रत्यक्ष	(iv) असफल
(ङ) सफल	(v) पराजय

3. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए-

(क) शुंड _____

(ख) भय _____

(ग) तमाशा _____

(घ) रखवाली _____

(ङ) कोड़ा _____

(च) पानी _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** महाराणा प्रताप को मेवाड़-केसरी क्यों कहा जाता था? क्या हल्दीघाटी के युद्ध में पराजय के बाद उन्होंने अकबर से संधि कर ली थी?

कल्पना व चिंतन

- यदि हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप विजयी हो जाते, तो भारत का नक्शा कैसा होता? सोचकर बताइए।

क्रिया-कलाप

- महाराणा प्रताप के समान और कौन से राजपूत राजा प्रसिद्ध हुए हैं? उनके बारे में पता कीजिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

अध्याय

10.
अगर नाक न होती

लेखक बड़ी मनोरंजक कल्पनाएँ करते रहते हैं। इस रचना में भी मनमौजी लेखक ने नाक के संबंध में बड़ी रोचक बातें कही हैं।

कितना अच्छा होता, अगर नाक न होती। नाक की चिंता में आदमी का जीना मुहाल हो गया है। नाक रखने की खातिर लोग मुकदमेबाजी में बरबाद हो जाते हैं, कर्ज़ लेकर भी ब्याह-शादी, भात-छोछक आदि में अंधाधुंध खर्च करते हैं, जन्म पर ही नहीं; मृत्यु पर भी शानदार दावत खिलाते हैं। पड़ोसी के बच्चों को कॉंवेंट स्कूल में जाते देख अपने बच्चों को भी मजबूर होकर उसी स्कूल में दाखिला दिलाते हैं। खरीदने की औकात न होने पर भी महँगी किश्त देकर टीवी, फ्रिज या कूलर आदि ले आते हैं; क्योंकि नाक नीची होने से डरते हैं। लोग अपनी धाक जमाने के लिए नाक ऊँची रखते हैं। नाक बची रहे, इसीलिए आदमी खाकी वर्दीधारियों, आयकर अधिकारियों या उनके दलालों की पत्र-पुष्पम से पूजा करता है, वर्ना पकड़ा जाएगा और फिर किसी के सामने कैसे नाक लगाएगा?

नाक के कारण आदमी को नाकों चने चबाने पड़ते हैं। नाक बड़ी जल्दी कटती है और प्रायः बिना किसी हथियार के ही कट जाती है। आदमी की अपनी नाक के साथ खानदान की नाक भी जुड़ी रहती है। कभी ऐसी वैसी बात हो जाए, लड़का घर से रूठकर भाग जाए, तो अपनी ही नहीं, पूरे खानदान की नाक कट जाती है। यह भी एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जिनकी नाक कट जाती है यानी जो खुद नकटे होते हैं, वे दूसरों को भी नकटा देखना चाहते हैं।

'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की तरह जुकाम आकर पसर जाता है और नाक में दम कर देता है। नाक तब बहुत बुरी लगती है, जब वह किसी शुभ कार्य के वक्त अनायास छींक मार देती है। वास्तव में, नाक और छींक दोनों सहेली हैं, पर ज़्यादातर लोग उन्हें अकेली ही देखना पसंद करते हैं।

एक तरफ़ लोग छींकों की वजह से झींकते हैं, तो कुछ लोग नाक में फुरेरी डालकर या नसवार सूँघकर जान-बूझकर छींकते हैं।

जब आदमी का बुरा वक्त आता है या उसे किसी-न-किसी से कोई काम करवाना होता है। तब वह सारी हेकड़ी भूल जाता है, एक बार क्या हज़ार बार नाक रगड़ता है। जब कोई गलती हो जाती है, तब भी आदमी को अपनी नाक रगड़नी पड़ती है। जिन लोगों में बदले या ईर्ष्या की भावना होती है, वे भी अनेक मौकों की तलाश में रहते हैं कि कब, कैसे किसी की नाक रगड़वा दें।

ज़िंदगी में हँसना-गाना ही नहीं, रोना भी पड़ता है। हँसने की बात छोड़िए, पर रोते समय आँखों में आँसू आते हैं, तो नाक भी उनका साथ निभाती है। बहते आँसुओं को पोंछना कोई बुरी बात नहीं, लेकिन नाक पोंछने से तो रोने का सारा मज़ा ही किरकिरा हो जाता है। करुण रस में बरबस वीभत्स रस आ टपकता है। नारी तो नाक पोंछने का काम साड़ी के पल्लू से चला सकती हैं, पर बेचारे उस पेंटधारी मर्द का क्या हाल होगा, जिसे जेब में रूमाल रखने का ख्याल न रहा हो।

गुस्सा भी बहुत-से लोगों की नाक पर रखा रहता है। उनसे ज़रा कुछ कहा नहीं कि बिना बात नाक फुला लेते हैं।

नाक की जितनी कमियाँ या बुराइयाँ हैं; उससे ज्यादा महत्वपूर्ण अच्छाइयाँ हैं। इसलिए जिनकी नाक नहीं होती, वे भी नाक लगाते हैं, भले ही इस बात पर कोई दूसरा नाक-भौं सिकोड़े तो सिकोड़ता रहे।

नाक रखना बहुत ज़रूरी है, वैसे भी और चेहरे पर भी। नाक चाहे सारस जैसी लंबी हो या चिलगोजी जैसी छोटी, चौथ जैसी चपटी हो अथवा पकौड़े जैसी मोटी, लेकिन होनी ज़रूर चाहिए। जिसके नाक न हो, उसकी कोई सूरत देखना भी पसंद न करेगा, बल्कि देखकर डरेगा। भला बिना छज्जे के मकान का फ्रंट शोभा देता है?

नाक सुंदर हो, तो सोने पे सुहागा है। इसलिए कवियों ने नख-शिख वर्णन के अंतर्गत और फुटकर रूप से भी नाक का काफ़ी वर्णन किया है। उसे सोने की हीरे-मोती जड़ी नथ, नथनी, लौंग, बुलाक आदि से सजाया है।

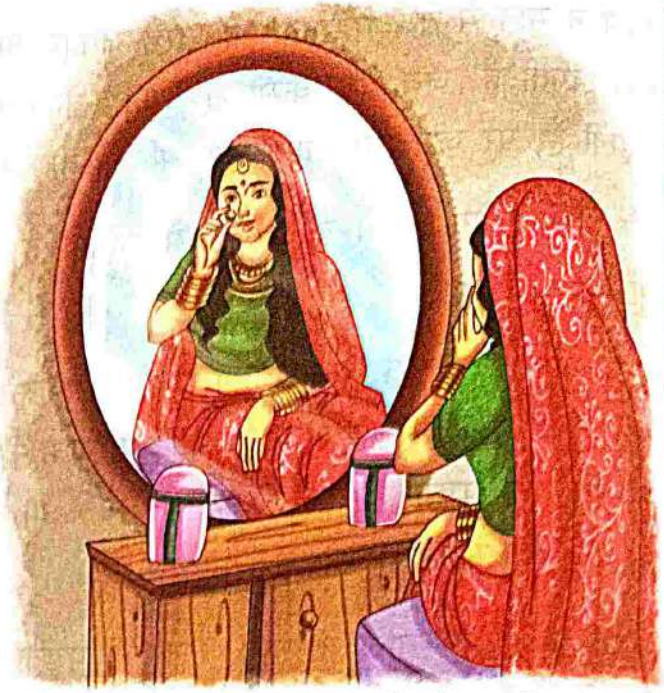

मध्यकालीन काव्य में नायिकाओं की नाक के लिए बहुत-सी उपमाएँ दी गई हैं। नाक को चंपा की कली, तिल के सुगंधित फूल से निर्मित और तलवार की धार से बढ़कर बताया गया है। यहाँ तक तो ठीक है, पर एक बात समझ में नहीं आती कि अधिकांश कवियों ने नाक की उपमा तोते की चोंच से क्यों दी है? हम क्लास में जब किसी सुंदरी-सुमुखी नायिका की नाक की उपमा तोते की चोंच से पढ़ाते हैं, तो हमारे हाथ के तोते उड़ जाते हैं, मन में अजीब से भाव उमड़ आते हैं। सोचने की बात है कि ऐसी नाक किसी चेहरे पर चार चाँद लगाएगी या दीवार में ठुके हुए उल्टे हुक-सी नज़र आएगी?

उपन्यास-कहानियों में सुंदर नाक को 'सुतवा' नाक कहा जाता है। ऊँची और दीर्घ नाक की तुलना कुल्हाड़ी से की जाती है। छोटी और सुकोमल नासिका को भेड़ की सी नाक की संज्ञा दी जाती है।

नाक शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। अगर चित्त लेटकर देखें, तो यह बात अपने आप सिद्ध हो जाएगी कि हाथ, पाँव, मुँह, कान, आँख आदि में सबसे ऊँचा स्थान नाक को प्राप्त है। अगर आँख आ जाए या चली जाए, तो ऐसी स्थिति में काला चश्मा लगाया जा सकता है। कान कट-फट जाए, तो उसे टोपी पहनकर छिपाया जा सकता है, लेकिन अगर कहीं नाक कट जाए, तो चेहरा रेगिस्तान की तरह एकदम सपाट अथवा चक्की का सा पाट नज़र आएगा। हालांकि प्लास्टिक सर्जरी द्वारा उसका इलाज हो सकता है, परंतु वह इतना महँगा पड़ेगा कि बड़े-से-बड़े नक्कूशाह को भी नानी याद आ जाएगी।

कुछ लोग नाक पर मक्खी तक नहीं बैठने देते। बहुत-से ऐसे भी होते हैं कि जब वे कुंभकर्ण की भाँति सोते रहते हैं, तो उनकी नाक नक्कारे-सी बजती है। कई लोगों की नाक के नीचे कुछ भी होता रहे, पर वे दीन-दुनिया से बेखबर बने रहते हैं। ऐसे लोगों की भी कमी नहीं, जो दूसरों को नाक नचाते हैं। किसी की नाक पर दे मारना भी कई लोग अपनी शान समझते हैं। कुछ लोग सचमुच नाकदार होते नहीं, पर बनते हैं। खैर जो भी हो, नाक रहने में ही भलाई है। नाक के अभाव से चंदन, कपूर, इत्र-फलेल आदि सब बेमानी हो जाते, असली हींग और देशी घी की पहचान कैसे होती है?

आँखें हमेशा से लड़ती आई हैं, लड़ना-लड़ाना उनका स्वभाव है। किसी की आँखें किसी से लड़े या फिर मिल कर चार हो जाएँ हर्ज़ नहीं, मगर वे आपस में ही लड़ बैठें, यह कहाँ तक ठीक है। नाक ही तो है, जो बीच में पड़कर उन्हें लड़ने से रोकती है, अन्यथा आदमी उनके परस्पर लड़ने से आँखों से ही हाथ धो बैठता है।

वैसे भी अब लोगों की नज़रों में फ़र्क आता जा रहा है। कहीं नज़र उठ रही हैं, कहीं नज़र गिर रही हैं, कहीं नज़र गड़ रही हैं और इसी के साथ चश्मों की जरूरत भी बढ़ रही है। चश्मा चाहे नज़र बढ़ाने का हो या नज़रें चुराने का, चाहे धूप से बचाने का हो, चाहे किसी रूप को छिपाकर निहारने का, अगर नाक न होती, तो बताइए, यह चश्मा कहाँ ठहरता? नाक ही तो चश्मे का अच्छा-खासा स्टैंड है।

नाक के कारण ही सीता-हरण और रावण का मरण हुआ। अगर शूर्पनखा की नाक न कटती तो रामायण की रचना कैसे होती? महाभारत का आधार भी द्रोपदी की नाक ही थी, जो अत्यंत खतरनाक सिद्ध हुई।

नाक के और भी बहुत से फायदे हैं। उच्छवास और नि:श्वास का कार्य मुँह से किया जा सकता है, पर प्राणों का आधार श्वास है और श्वास लेने का साधन नाक ही है। नाक की गड़बड़ी से आदमी नकियाने लगता है, वह नकसुरा कहलाता है।

नाक हीटर का काम करती है। बाहर की ठंडी हवा को गरम करके अंदर पहुँचाती है और ठंड लगने से बचाती है। आजकल पर्यावरण-प्रदूषण ज़ोरों पर है। वातावरण में व्याप्त प्रदूषण को फेफड़ों तक जाने से नाक ही रोकती है। नाक में उगे बाल छन्ने और झाड़ू का काम करते हैं।

जिस प्रकार सिंगट्टा दिखाने, आँख-दिखाने, दाँत दिखाने, पीठ दिखाने आदि मुहावरे प्रचलित हैं, दुर्भाग्यवश कहें या सौभाग्य, नाक दिखाने का कोई मुहावरा नहीं है।

—संकलित

अध्यापन संकेत

पाठ को हास्य-विनोद करते हुए मनोरंजक रीति से पढ़ाएँ।

शब्दार्थ

मुहाल - कठिन; भात-छोछक - विवाह के अवसर पर मामा की ओर से दी जाने वाली भेंट; औकात - हैसियत; पत्र-पुष्पम - तुच्छ-सी लगने वाली भेंट; फुरेरी - सींक के सिर पर लपेटी हुई रूई जिस पर इत्र, तेल इत्यादि चुपड़ा जाए; नसवार - सूँघनी, अकड़; हेकड़ी - जबरदस्ती; चौथ - गाय, भैंस का गोबर; फ्रंट - आगे का भाग; सुतवा - लंबी-पतली; नक्कूशाह - चढ़ी नाक वाला; नाकदार - प्रतिष्ठा वाला; नाक रखना - सम्मान रखना; नाक नीची होना - अपमानित होना; धाक जमाना - प्रभाव छोड़ना; नाक बचाना - सम्मान की रक्षा करना; नाकों चने चबाना - बहुत कष्ट सहना; नाक रगड़ना - मिन्नतें करना; मान न मान मैं तेरा मेहमान - जबरदस्ती गले पड़ना; गुस्सा नाक पर रखा होना - तुनक मिजाज; नाक फुलाना - रूठना; सोने पे सुहागा - अच्छी वस्तु में और अधिक अच्छाई; हाथ के तोते उड़ जाना - घबरा जाना; चार चाँद लगाना - सुंदरता बढ़ जाना; नानी याद आना - बहुत बड़े संकट में पड़ जाना; नाक पर मक्खी तक न बैठने देना - अपने विरुद्ध कुछ भी न सुनना; नाक के नीचे होना - उपस्थिति में; आँखें चार होना - नजर से नजर मिलाना; सिर खाना - परेशान करना; मुँह की खाना - हार जाना; नाक का बाल बनना - बहुत प्रिय होना; सिंगट्टा दिखाना - अँगूठा दिखाना; आँख दिखाना - डाँट-डपट करना; दाँत दिखाना - दीनता प्रकट करना; पीठ दिखाना - हार मानना।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) लोग किस बात से डरते हैं?

(ख) खानदान की नाक कब कट जाती है?

(ग) लेखक ने किस बात को सोने पर सुहागा कहा है?

(घ) लेखक के हाथ से तोते कब उड़ जाते हैं?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लेखक ने नाक और छींक को कहा है–

(अ) शत्रु
(ब) पड़ोसी
(स) संबंधी
(द) सहेली

(ख) शरीर में सबसे ऊँचा स्थान है–

(अ) आँखों का
(ब) सिर का
(स) गले का
(द) नाक का

(ग) नाक लड़ाई रोकती है–

(अ) हाथों की
(ब) पैरों की
(स) आँखों की
(द) कानों की

(घ) नाक को लेखक ने कहा है–

(अ) किताबों का स्टैंड
(ब) बर्तन का स्टैंड
(स) कपड़ों का स्टैंड
(द) चश्मे का स्टैंड

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) यहाँ लड़ना-लड़ाना किसका स्वभाव बताया गया है?

(ख) सीता हरण और रावण मरण का कारण लेखक ने किसे बताया है?

(ग) नाक प्रदूषण से किस प्रकार रक्षा करती है?

(घ) नाक हीटर का काम कैसे करती है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) किस प्रकार लेखक ने नाक को शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग सिद्ध किया है?

(ख) नाक के क्या-क्या लाभ लेखक ने गिनाए हैं?

(ग) करुण रस कब वीभत्स बन जाता है?

(घ) नाक के किन-किन आकारों-प्रकारों का वर्णन लेखक ने किया है?

भाषा-ज्ञान

1. पाठ में नाक से संबंधित अनेक मुहावरे आए हैं। उन्हें ढूँढ़कर उनका अर्थ लिखिए और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) _____

(ख) _____

(ग) _____

(घ) _____

2. पाठ में आए उर्दू के शब्द ढूँढ़कर लिखिए

_____ दावत _____ औकात _____ _____

_____ _____ _____ _____

3. सुमेल कीजिए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) नाक	(i) दे मारना
(ख) नाक पर	(ii) गड़ाना
(ग) आँख	(iii) मुहाल होना
(घ) नज़र	(iv) लड़ाना
(ङ) जीना	(v) नीची होना

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** पाठ को पढ़कर आपको खूब हँसी आई होगी। इसी प्रकार के कुछ हँसी-मजाक के प्रसंगों का वर्णन करके साथियों का मनोरंजन कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- यदि शरीर का छोटा-सा भी अंग खराब हो जाए या नष्ट हो जाए, तो व्यक्ति कितना दुख अनुभव करेगा, कल्पना कीजिए।
- प्रकृति ने हमें सर्वांग पूर्ण शरीर प्रदान किया है, क्या हम इसके लिए कभी धन्यवाद करते हैं? चिंतन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- किसी विकलांग व्यक्ति के प्रति समाज का रवैया कैसा होता है, इसे कैसा होना चाहिए इस विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन कीजिए।
- अंगदान के विषय में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कीजिए।
- क्या आप जानते हैं कि सभी आध्यात्मिक साधनाओं में श्वास को ध्यानपूर्वक देखने का विधान सर्वप्रथम है। श्वास नासिका से आता है। नासिका पर ध्यान केंद्रित कर आती-जाती श्वास को देखने की प्रक्रिया की खोज महात्मा बुद्ध ने की। इसे ही 'विपश्यना' साधना कहते हैं। यह पूरे विश्व में सुप्रसिद्ध हुई। इसे जानिए।

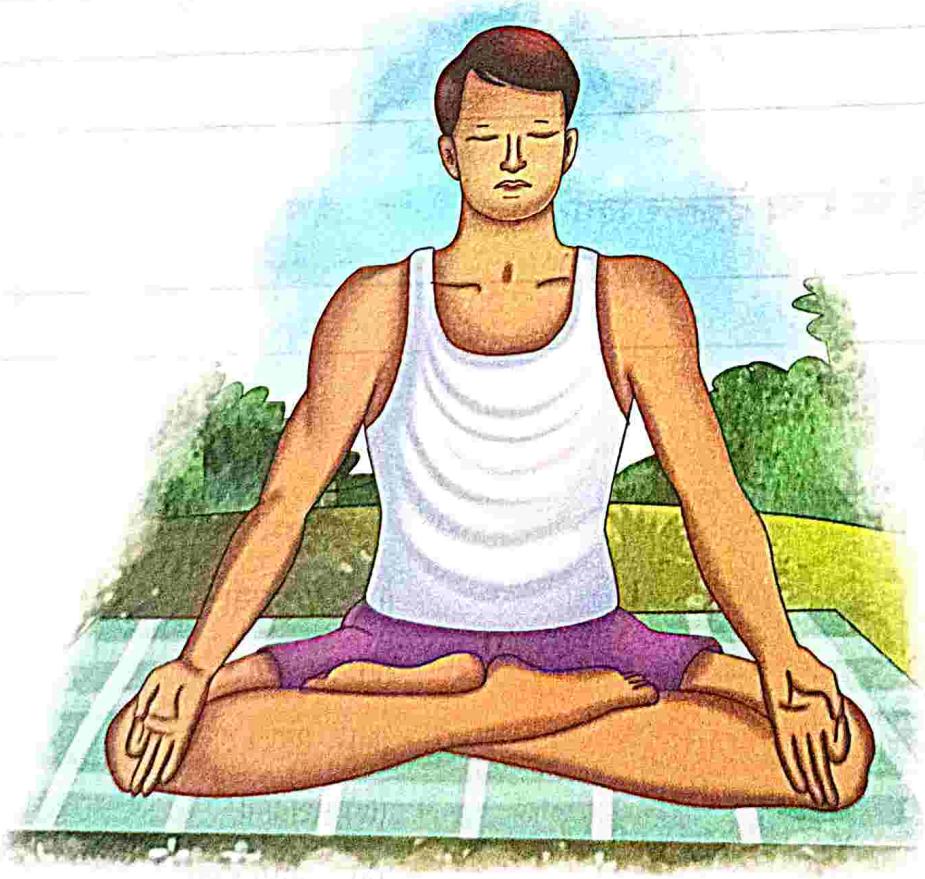

अध्याय

11.
प्यार की नींव

प्रेम विश्व की महान शक्ति है। इसके सामने हिंसक मनोवृत्ति के प्राणी भी सरल व उदार बन जाते हैं। यही इस कहानी में बताया गया है।

वैसे उनका नाम तो था रहमतुल्ला खाँ, लेकिन छोटे-बड़े सभी उन्हें मौलवी साहब कहकर पुकारते थे। थोड़ी-सी आबादी की बस्ती थी। कोई विशेष बात उस बस्ती में न थी- न पक्की सड़क, न बिजली, न दवाखाना, फिर भी मौलवी साहब को उस गाँव से बड़ा लगाव था। कारण कि उनका जन्म वहीं हुआ था और वहीं की मिट्टी में खेल-कूदकर वे बड़े हुए थे।

उनके विशेष अनुराग की एक और भी वजह थी। वह यह कि उनका इकलौता बेटा करीम भरी-पूरी उम्र में वहीं उनसे हमेशा के लिए बिछुड़ा था और उसकी स्मृति में उन्होंने एक छोटी-सी यादगार गाँव से बाहर बनवा दी थी। सो नगर की अफ़सरी से जब उन्हें अवकाश मिला, तो उन्होंने उसी गाँव में एक मदरसा खोल दिया और बड़े प्यार से बच्चों को पढ़ाने लगे। बच्चों से मौलवी साहब को बड़ा स्नेह था और बच्चे भी उन्हें प्यार करते थे। मौलवी साहब का बोल मीठा था और बच्चों के प्रति उनका व्यवहार बड़ा ही हार्दिक था। भले ही वे कैसी भी गलती क्यों न कर डालें, लेकिन क्या मजाल कि मौलवी साहब के मुँह से एक तेज़ शब्द भी निकले। हाथ उठाने की बात दूर रही। बच्चों के गुरु होने के कारण वे सारे गाँव के आदरणीय और कृपापात्र बन गए थे। वैसे भी उनका घराना बहुत अच्छा था और जब करीम की मृत्यु हुई थी, आधे से ज़्यादा गाँव साथ गया था।

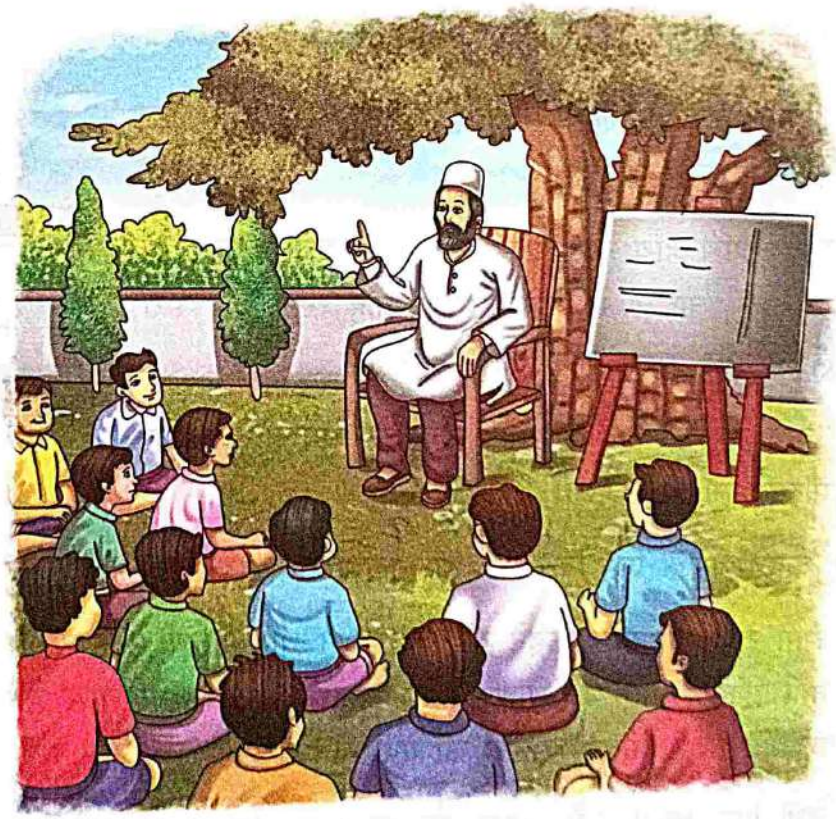

धीरे-धीरे बरसों बीत गए। इस बीच मौलवी साहब की बीवी चल बसी और करीम के नज़दीक ही उन्होंने एक छोटा-सा स्मारक फ़ातिमा बेगम के लिए बनवा दिया। कुछ और बरस इस तरह बीतें और मौलवी साहब के सिर और दाढ़ी-मूँछ के बाल धीरे-धीरे सफ़ेद हो गए।

अचानक देश में सांप्रदायिकता की आग भड़क उठी। चारों ओर मारकाट और लूटपाट के दृश्य दिखने लगे। हर जगह भय और आतंक छा गया। कल तक जो मित्र थे, वे दुश्मन बन गए और एक-दूसरे की जान लेने पर उतारू हो गए। शहरों की आग की लपटें देहातों में भी पहुँची और मौलवी साहब ने देखा कि उनके गाँव का रुख भी बदलता जा रहा है। इससे उन्हें रत्तीभर भी चिंता न हुई। उसी प्यार और मुहब्बत से बच्चों को पढ़ाते और गाँव वालों के साथ पेश आते रहे।

एक रोज़ रात को मौलवी साहब खा-पीकर चारपाई पर बैठे थे कि मुखिया का लड़का आया। मौलवी साहब ने सहज भाव से पूछा, "क्या है बेटा देवी?"

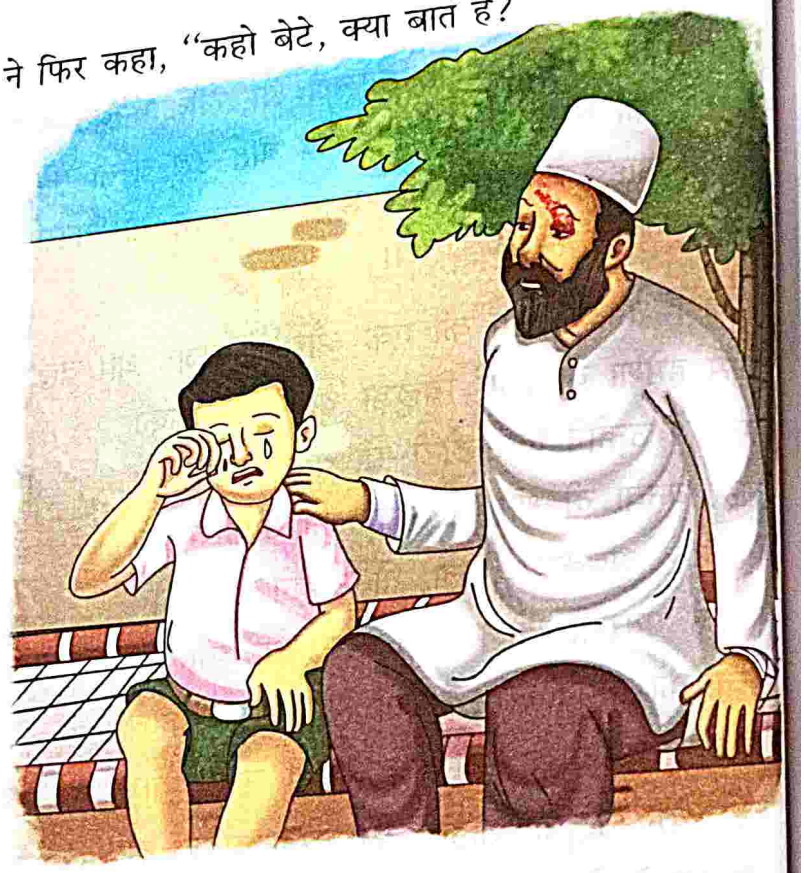

देवी के मुँह से सहसा बात नहीं निकली। मौलवी साहब ने फिर कहा, "कहो बेटे, क्या बात है?"

देवी ज़ोर से रोने लगा। मौलवी साहब आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने देवी को अपनी ओर खींच लिया और उसकी पीठ थपथपाते हुए बोले, "इतना दुखी होने की क्या बात है, बेटे?"

देर तक देवी की हिचकी नहीं बँधी। सँभला तो बोला, "मौलवी साहब! आप यहाँ से चले जाइए।"

"क्यों बटे?" मौलवी साहब ने बिना किसी उद्‌विग्नता के, शांत स्वर में पूछा।

"मैं आपसे हाथ जोड़ता हूँ, मौलवी साहब! आप आज ही चले जाइए। मैं आपसे क्या कहूँ ... आज हरी, लीला और पंचम सलाह कर रहे थे कि .....

"क्या सलाह कर रहे थे?" देवी के चुप हो जाने पर मौलवी साहब ने पूछा।

"कहते थे कि एक दिन रात को मौलवी साहब के घर धावा बोल दो और उन्हें ....."

आगे देवी को कुछ कहने की ज़रूरत न थी। मौलवी साहब सब समझ गए। उनके बूढ़े चेहरे पर ज़रा भी चिंता नहीं झलकी और उन्होंने हँसते हुए कहा, "बेटा, इसमें हैरान होने की क्या बात है? जाओ बेटे, तुम चैन से सो जाओ। तुम्हारे मौलवी साहब को एक दिन वैसे भी ....."

देवी फिर बोला, "मैं आपके पैर पड़ता हूँ मौलवी साहब! आप चले जाइए। हम चार-छह लोग कुछ देर साथ चलेंगे, जिससे रास्ते में कोई बात न हो।"

देवी ने बाद में बहुतेरी मिन्नत की, लेकिन मौलवी साहब जाने के लिए राज़ी न हुए। उन्होंने साफ़ कह दिया, "मुसीबत से डरकर कायर भागते हैं। जिसकी ज़िंदगी की इमारात प्यार की नींव पर खड़ी हुई है, उसे डरने की ज़रूरत नहीं है।"

देवी चला गया और मौलवी साहब चारपाई पर लेट गए। उनके मन में भय नहीं था, लेकिन करीम और फ़ातिमा की याद से उन्हें थोड़ी बेचैनी हो आई थी। वे सोचने लगे, 'यह सब है क्या? आदमी का प्यार क्या पानी का बुलबुला है जो ज़रा-सी देर में फूट जाता है? प्यार की जड़ें क्या इतनी कमज़ोर हैं कि ज़रा-सी हवा लगी कि उखड़ी? या अल्लाह!'

रात को मौलवी साहब देर तक मुहम्मद साहब की जीवनी पढ़ते रहे। इतने में दरवाज़े पर हल्का-सा खटका हुआ। आहट होकर शांत हो गई, लेकिन दो मिनट बाद ही वे देखते क्या है कि धीरे-धीरे दरवाज़ा खुला और एक के बाद एक तीन लोग भीतर घुस गए। चाँदनी की रोशनी में मौलवी साहब को पहचानते देर न लगी कि आगे गिरधारी है और वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाता उनकी चारपाई की ओर बढ़ा चला आ रहा है। गिरधारी चारपाई से कोई दो गज़ की दूरी पर रुक गया। उसने इधर-उधर आगे-पीछे चौकन्ना होकर देखा और अपने साथी को इशारा किया। इशारा पाते ही साथी ने उसे कोई चीज़ दे दी। गिरधारी एक कदम और आगे बढ़ा। मौलवी साहब ने देखा कि उसके दो साथियों में एक पंचम और दूसरा लीला है। इन तीनों को उन्होंने पढ़ाया था। गिरधारी देर तक वहीं खड़ा रहा। वह न आगे बढ़ता था, न पीछे हटता था। मूर्ति की भाँति खड़ा था। उसे इस अवस्था में मौलवी साहब देर तक न देख सके। वे बोल पड़े, "बेटा गिरधारी, क्या सोच रहे हो? आगे क्यों नहीं बढ़ते?"

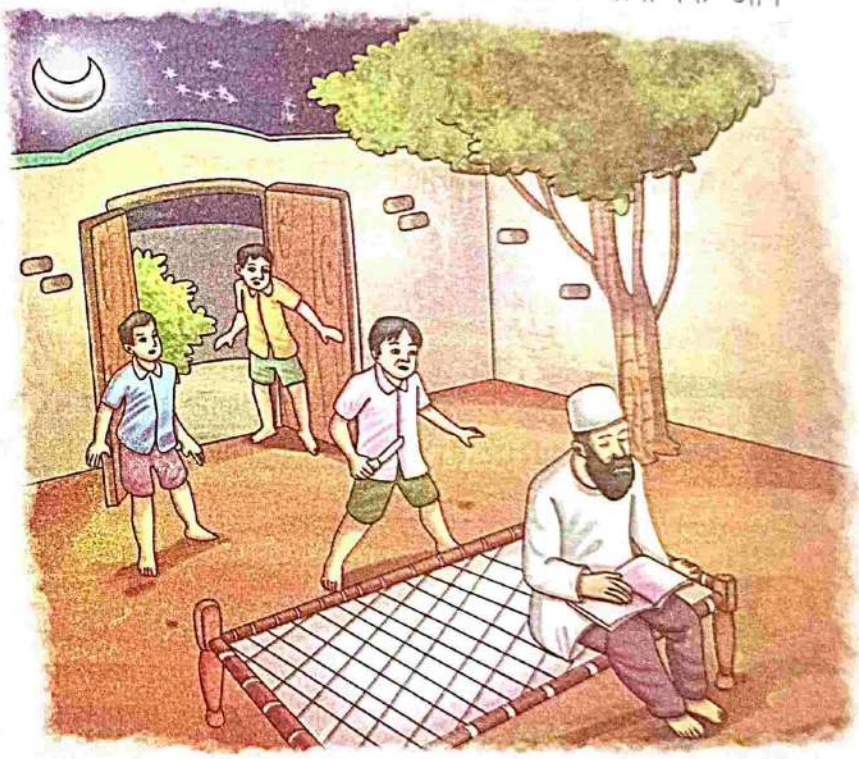

गिरधारी को काटो तो खून नहीं। मौलवी साहब उठकर बैठ गए। बोले, "बेटा, आते क्यों नहीं? जो तुम्हें करना है कर लो। मैं तुम्हें रोकूँ या कुछ भी कहूँ, तो अल्लाह मुझे दोज़ख में भी जगह न दे। अरे पंचम और लीला, तुम लोग इतनी दूरी पर क्यों खड़े हो? आगे आओ बेटा और गिरधारी की मदद करो।"

गिरधारी और उसके दोनों संगी सन्न खड़े थे। गिरधारी सोचता था कि, 'धरती फट जाए, तो वह उसके नीचे दब जाए या आसमान टूट पड़े, तो वह उसके नीचे मर जाए। हाय, राम! यह उसने क्या किया? अपने मौलवी साहब का अनर्थ करने की बात सोचने से पहले वह मर क्यों नहीं गया? उसके भयंकर अपराध के बदले में इस देवता के मुँह से प्यार की वाणी ही निकल रही है। हाय, मैं कैसा नीच हूँ कैसा पापी हूँ।

मौलवी साहब ने अत्यंत सरल भाव से कहा, "गिरधारी, मुझे तो वह दिन याद है, जब तुम मेरी गोद में खेलते थे और मैंने तुम्हें अपना करीम मानकर पढ़ाया था। लेकिन बेटा, सच कहता हूँ कि मुझे तुझसे कोई शिकायत नहीं है। इंसान को अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। जो मैंने किया, वह मेरा कर्तव्य था। बेटे, तुम मेरे प्यारे हो और वैसा मानकर मेरे दिल से तुम्हारे लिए सदा असीस ही निकलेगी।"

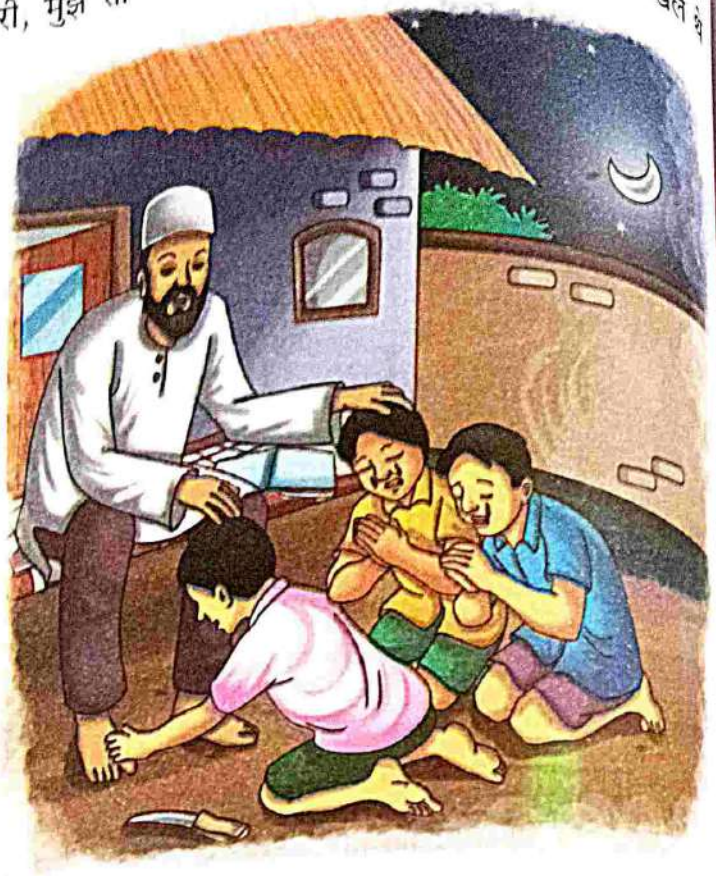

दूध-सी चाँदनी में मौलवी साहब का चेहरा चमक उठा, मानों कोई फ़रिश्ता बैठा हो। गिरधारी ने हाथ की चीज़ उठाकर एक ओर फेंक दी और आगे बढ़कर मौलवी के पैरों की ओर बढ़ गया। पंचम और लीला चारपाई के पास आकर बैठ गए। मौलवी साहब ने उन दोनों की पीठ थपथपाई ओर देखा कि चरणों के पास बैठा गिरधारी बार-बार अपने आँखें पोंछ रहा है।

—संकलित

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को धर्म तथा जाति के नाम पर उठने वाले विवादों की भयंकरता और व्यर्थता का परिचय दें। पारस्परिक मेलजोल ही मनुष्य की शोभा है, स्पष्ट करें।

शब्दार्थ

अनुराग - लगाव; अवकाश - छुट्टी; मदरसा - स्कूल; सांप्रदायिकता की आग - धर्म के नाम पर झगड़े; आश्चर्यचकित - हैरान; आतंक - डर; उद्विग्नता - बेचैनी; देहात - गाँव; बहुतेरी - बहुत; राज़ी - तैयार; चौकन्ना - सावधान; दोज़ख - नरक; संगी - साथी।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) मौलवी साहब का नाम क्या था?

(ख) करीम कौन था?

(ग) मौलवी जी अपना समय किस प्रकार बिताते थे?

(घ) मौलवी जी को मारने के उद्देश्य से कौन-कौन लोग घर में घुसे?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) मौलवी जी सारे गाँव के लिए–

(अ) मुसीबत थे ⬡ (ब) आदरणीय थे ⬡

(स) शत्रु थे ⬡ (द) विधर्मी थे ⬡

(ख) सांप्रदायिकता की आग भड़कने पर मौलवी साहब–

(अ) भाग निकले ⬡ (ब) डर गए ⬡

(स) रोने लगे ⬡ (द) पर रत्ती भर भी प्रभाव नहीं पड़ा ⬡

(ग) देवी ने मौलवी साहब को कहा कि वे–

(अ) पुलिस के पास जाए ⬡ (ब) भाग जाएँ ⬡

(स) उसके घर चले ⬡ (द) पड़ोस के गाँव में जाएँ ⬡

(घ) मौलवी साहब ने उन्हें मारने के इरादे से आने वालों के प्रति–

(अ) कठोरता बरती ⬡ (ब) खेद प्रकट किया ⬡

(स) कोई नाराज़गी व्यक्त नहीं की ⬡ (द) आश्चर्य प्रकट किया ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मौलवी साहब को गाँव से इतना लगाव क्यों था?

(ख) मुखिया का बेटा मौलवी साहब से क्या कहने आया था?

(ग) मौलवी साहब ने घर में घुसे लड़कों से कैसा व्यवहार किया?

(घ) मौलवी साहब के व्यवहार ने लड़कों पर क्या प्रभाव डाला?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) 'प्यार क्या पानी का बुलबुला है, जो ज़रा सी देर में फट जाता है? प्यार की जड़ें क्या इतनी कमज़ोर हैं कि ज़रा-सी हवा लगी कि उखड़ी? या अल्लाह!'

(ख) "इंसान को अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। जो मैंने किया वो मेरा कर्तव्य था। बेटे, तुम मेरे प्यारे हो और वैसा मानकर मेरे दिल से तुम्हारे लिए असीस ही निकलेगी।"

भाषा-ज्ञान

1. विलोम शब्दों का सुमेल कीजिए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) प्यार	(i) मौत
(ख) देहात	(ii) शत्रु
(ग) मित्र	(iii) वैराग्य
(घ) अनुराग	(iv) शहर
(ङ) ज़िंदगी	(v) नफ़रत

2. पढ़िए और समझिए

(क) रोशनी, उजाला, प्रकाश।

(ख) अवस्था, हालत, स्थिति।

(ग) दरवाज़ा, द्वार, किवाड़।

(घ) आसमान, आकाश, नभ।

3. वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए

(क) प्यार करने वाला _____ (ख) अपराध करने वाला _____

(ग) दया करने वाला _____ (घ) क्षमा करने वाला _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** क्या आपको भी अपने किसी अध्यापक या पड़ोसी से सच्चा प्रेम प्राप्त हुआ है, यदि हाँ, तो उसका वर्णन कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- यदि मनुष्य में प्रेम, करुणा आदि भाव न हों, तो जीवन कैसा हो जाएगा? कल्पना कीजिए। समाज में फैलती हिंसा व क्रूरता की घटनाओं का क्या कारण है? चिंतन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- पारस्परिक प्रेमभाव को बढ़ाने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं? सुझाव दीजिए।
- 'सर्व धर्म समान है।' इस विषय पर एक गोष्ठी आयोजित कीजिए।

पठन हेतु

सुख की पहचान

बहुत दिन हुए फिलिस्तीन में एक दरज़ी रहता था। उसका नाम मूसा था। मूसा बहुत गरीब था। उसकी छोटी-सी झोंपड़ी काफ़ी पुरानी और जर्जर अवस्था में थी। वह हर समय दुखी रहता था। गरीबी से हताश मूसा चिड़चिड़ा हो गया था। ज़रा-ज़रा-सी बात भी उसे सहन नहीं होती थी। यहाँ तक कि अब उसे अपनी बेटियों का शोर भी बुरा लगने लगा था। उसकी बेटियाँ यह देखकर उदास हो जाती थी। अपने पिता की यह दशा बेटियों के लिए असह्य थी।

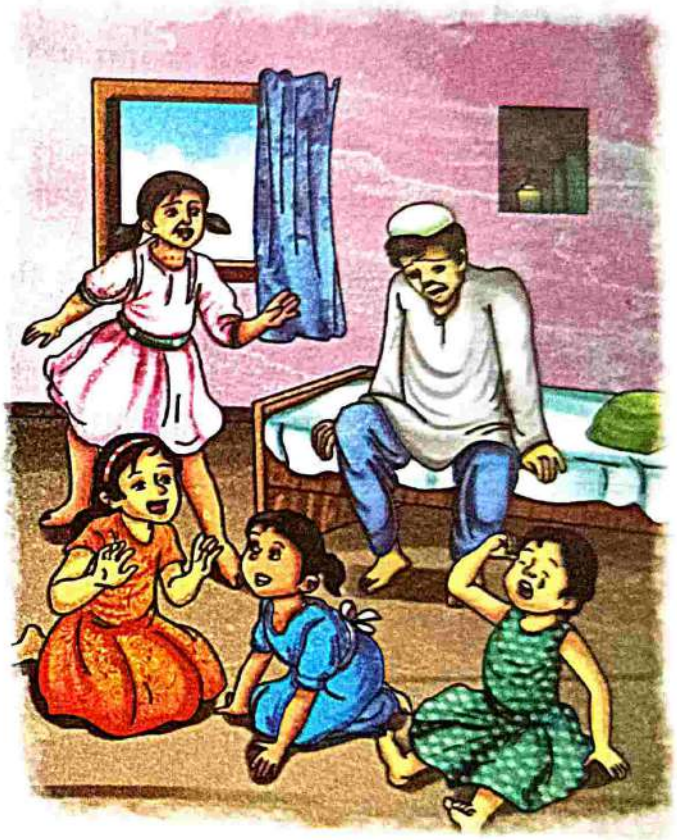

एक दिन जब घर में शोर होने लगा, तो मूसा उस शोर से इतना घबराया कि गाँव के रब्बी (गुरु जी) के पास जाकर बोला, "मेरा जीवन दुखों से भरा है। रात-दिन परिश्रम करता हूँ, फिर भी सुख का द्वार मेरे लिए खुलता ही नहीं, ऊपर से छोटी-सी झोंपड़ी है, जिसमें मेरी बेटियाँ हर समय शोर मचाती रहती हैं। मुझे एक पल के लिए भी शांति और सुख नहीं मिलता। कोई ऐसा उपाय बताइए कि मुझे सुख मिल सके।"

रब्बी ने थोड़ा सोचकर कहा, "एक बिल्ली पाल लो।" मूसा आश्चर्य से बोला, "परंतु बिल्ली से तो शोर और भी बढ़ जाएगा।"

रब्बी ने कहा, "जैसा मैं कहता हूँ, वैसा ही करो।"

मूसा ने बिल्ली पाल ली। वही हुआ, जिसका उसे डर था। बिल्ली सारा दिन और सारी रात झोपड़ी में 'म्याऊँ-म्याऊँ' करती रहती थी।

"अब तो शोर और भी बढ़ गया है," मूसा ने रब्बी के पास जाकर उन्हें अपनी परेशानी से अवगत कराया।

"कोई बात नहीं," रब्बी सिर हिलाकर बोला, "अब एक कुत्ता पाल लो।"

मूसा उलझन मे पड़ गया।

"कुत्ता पाल लूँ?" उसने विस्मित भाव से रब्बी की ओर देखा।

"हाँ," रब्बी ने कहा।

मूसा ने एक कुत्ता भी पाल लिया। अब कुत्ता और बिल्ली दिन-रात एक-दूसरे से लड़ते रहते। उद्विग्न मूसा ने दो दिन बाद रब्बी से जाकर कहा, "कुत्ते और बिल्ली ने तो मुसीबत खड़ी कर रखी है। मैं क्या करूँ?"

रब्बी झट से बोला, "एक मुरगा पाल लो।"

"मुरगा!" मूसा ने घबराकर कहा।

"हाँ"

मूसा एक मुरगा भी ले आया। अब कुत्ता, बिल्ली और मुरगा तीनों मिलकर इतनी धमा-चौकड़ी करते थे कि मूसा सारी रात सो नहीं पाता था। सुबह होने पर जब उसकी आँखें नींद से बंद होनें लगती, तो मुरगा बाँग पर बाँग देने लगता। मूसा तंग आकर फिर रब्बी के पास पहुँचा।

"बस, अब एक गधा और पाल लो," रब्बी ने मुस्कराकर कहा। मूसा ने यह सुनकर एक लंबी-सी साँस ली। वह जानता था कि गधे के आने पर झोपड़ी का क्या हाल होगा।

"जाओ, और एक गधा पाल लो," रब्बी ने फिर कहा। बिल्ली, कुत्ते, मुरगे और गधे ने मिलकर वह ऊधम मचाया कि मूसा ने कानों में अंगुलियाँ दे दीं। गधे ने घर के कुछ बरतन भी तोड़-फोड़ दिए थे।

दो दिन बीतने पर मूसा आँखों में आँसू भरे रब्बी के पास आया और बोला, "अब तो मैं जीवन से ऊब गया हूँ। सोचता हूँ कि झोपड़ी छोड़कर रेगिस्तान में जा बसूँ। झोंपड़ी में हर समय भूचाल-सा आता रहता है। कुत्ता, बिल्ली और मुरगा ही क्या कम थे, जो अब यह गधा भी आ गया। रात-दिन 'ढेंचू-ढेंचू' करता रहता है। इसकी रात-दिन की ढेंचू-ढेंचू ने मुझे विक्षिप्त कर दिया है।"

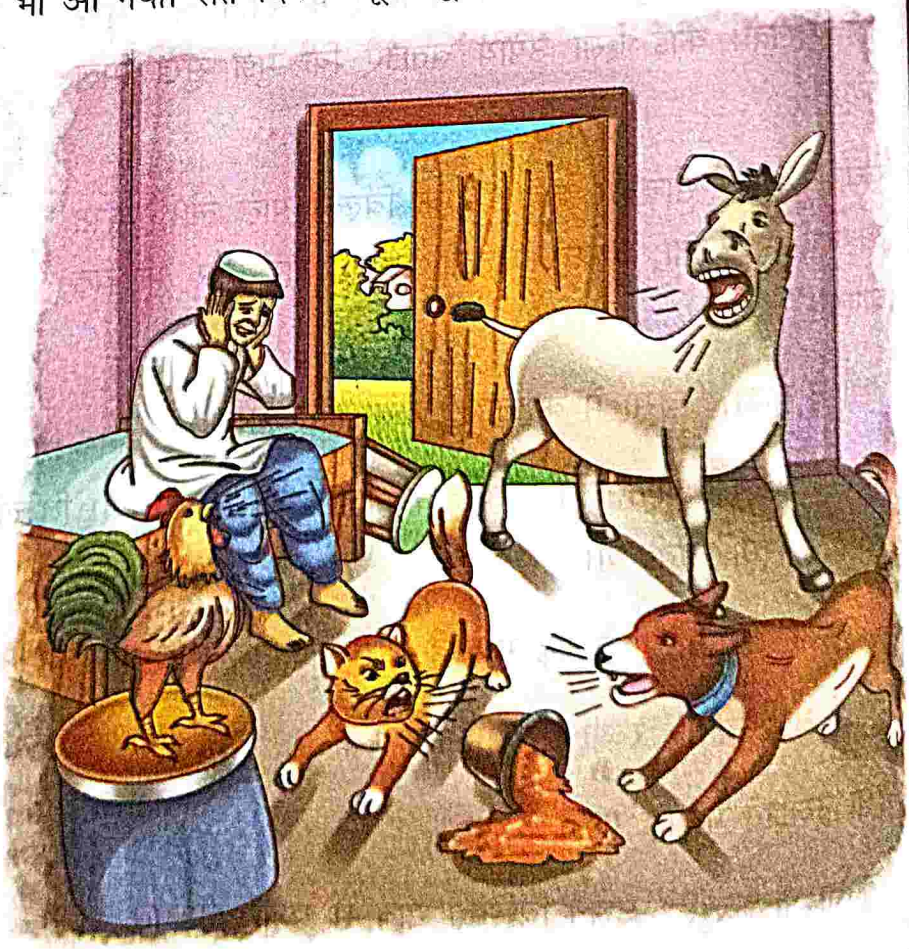

रब्बी ने अत्यंत सहजता से कहा, "अब ऐसा करो, गधे को बेच दो। और दो दिन बाद मुझसे मिलो।"

दो दिन बाद रब्बी ने पूछा, "क्यों कैसे हो?"

मूसा मुस्कराकर बोला, "गधे के जाने से बड़ी शांति हो गई है। उफ, क्या तूफ़ान मचाता था!"

यह सुनकर रब्बी ने सलाह दी, "अब मुरगे को भी निकाल दो।"

दो दिन बाद रब्बी ने जिज्ञासा प्रकट की, "अब कैसा महसूस कर रहे हो?"

उत्तर में मूसा बोला, "बहुत खुश हूँ। अब कम से कम सुबह होने से थोड़ा पहले तक मैं सो सकता हूँ। मुरगा तो बड़ा शोर करता था। झोंपड़ी में अब काफ़ी शांत वातावरण हो गया है।"

"ठीक है," रब्बी ने कहा, "अब कुत्ते को भी निकाल दो और दो दिन बीतने पर मुझसे मिलो।"

दो दिन बाद प्रसन्नचित्त मुद्रा में मूसा रब्बी के पास पहुँचा।

"क्या बात है, बहुत प्रसन्न हो?" रब्बी ने पूछा।

"हाँ, रब्बी," मूसा ने कहा, "जब से कुत्ता गया है, बिल्ली एक ओर पड़ी सोती रहती है। मेरी झोपड़ी में बड़ी शांति है। अब मैं खुश हूँ।"

यह सुनकर रब्बी ने सिर हिलाया और मंद हास से कहा,

"अब बिल्ली को भी निकाल दो।"

"बिल्ली को रहने ही क्यों न दें?" मूसा ने पूछा, "उसके रहने से मुझे कोई आपत्ति नहीं। चुपचाप एक तरफ़ पड़ी रहती है।"

"जैसा मैं कहता हूँ, वैसा ही करो" रब्बी ने कहा।

"परंतु....." मूसा ने कुछ कहना चाहा, पर रब्बी ने हाथ के इशारे से उसे चुप कर दिया।

"दो दिन बाद मुझसे मिलना," रब्बी ने कहा।

दो दिन बीतने पर मूसा खुशी से झूमता हुआ आया।

उसके चेहरे पर निश्चिंतता और ताज़गी थी।

"अब क्या हाल है?" रब्बी ने प्रश्न किया।

मूसा ने उत्तर दिया, "अब तो झोंपड़ी में इतनी शांति और सन्नाटा है कि मैं घबरा जाता हूँ। अगर बेटियों की मीठी आवाज़ें कानों में न पड़े, तो मेरा झोंपड़ी में एक पल के लिए भी रहना मुश्किल हो जाए। मैं सोचता हूँ कि अगर ये लड़कियाँ न होती, तो जीवन कैसा बीतता? उनकी प्यारी बातें मेरे सारे दुख भुला देती हैं।"

"क्या तुम सुखी हो?" रब्बी ने पूछा।

"मैं संसार का सबसे भाग्यशाली मनुष्य हूँ। मैंने सुख पा लिया," मूसा ने प्रफुल्लित स्वर में कहा, "आपने मुझे सुख दे दिया।"

"तो अब जाओ और खुश रहो," रब्बी ने हँसकर कहा, "सुख तो तुम्हारे पास ही था, केवल तुम्हें उसका पता नहीं था।"

अध्याय

12. भीतर का प्रकाश

महात्मा बुद्ध एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्हें भारत ही नहीं, वरन् सारा विश्व श्रद्धा से शीश नवाता है।

बुद्ध उस समय मगध देश में प्रव्रज्या पर थे। वहाँ एक ऐसे यज्ञ का आयोजन हो रहा था, जिसमें प्रतिदिन हज़ारों स्वर्ग मुद्राओं का खर्च होना था। क्व्दंत नामक आचार्य ने यज्ञ के बारे में पूछा कि आप ऐसी विधि बताइए, जो उत्तम हो। यज्ञ उसी आचार्य की देख-देख में हो रहा था। उसका विचार था कि बुद्ध ऐसी कोई विधि बताएँगे जो श्रेष्ठतर हो। बुद्ध ने उसे महाविजित राजा के एक यज्ञ की कथा सुनाई। राजा को उसके पुरोहित ने सलाह दी कि

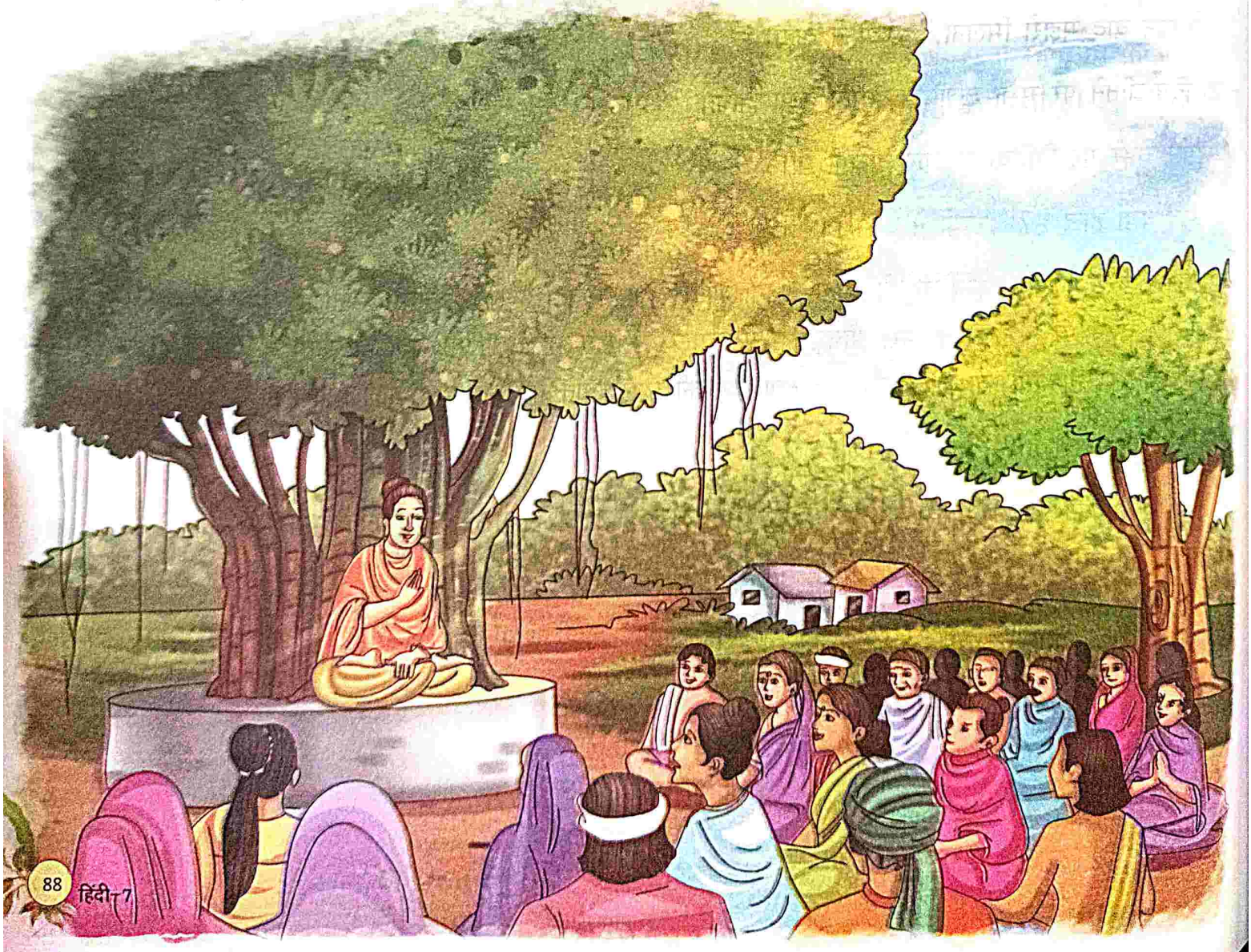

राज्य में शांति नहीं है। गाँव और शहर लूटे जा रहे हैं; बटमारियाँ हो रही हैं। ऐसी स्थिति में सुख-शांति के उपाय करना ज्यादा अच्छा होगा। लोग जो काम करना चाहते हैं उसके लिए उन्हें राज्य की ओर से सहायता मिले और व्यापार व्यवसाय में वृद्धि हो। राजा ने पुरोहित का परामर्श मानकर लोक कल्याण की गतिविधियाँ चलाईं, राज्य में ऐसी व्यवस्था बनाई, जिसमें अन्न-जल और आवश्यक सुविधाएँ आसानी से मिलने लगीं। बुद्ध ने इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि लोगों का जिसमें भला हो, वह सत्कर्म ही उत्तम यज्ञ है। हिंसा के अलावा जाति और वर्ण के आधार पर ऊँच-नीच बुद्ध के समय की सबसे बड़ी बुराई थी। यह प्रथा इतनी रूढ़ हो गई थी कि जन्म ही इसका आधार समझा जाता था। इस संबंध में वा निपात और मज्झिमनिकाय में कुछ प्रसंग मिलते हैं। उनका सार इस प्रकार है। जो संसार के बंधनों को काट डालता है, किसी भी सांसारिक दुख से नहीं डरता, जिसे किसी भी विषय में कोई आसक्ति नहीं होती, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं होता, न ही अब्राह्मण ही। कर्म से ही ब्राह्मण और कर्म से ही अब्राह्मण होता है। किसान कर्म से होता है। कारीगर, चोर और प्रहरी कर्म से होते हैं। याचक कर्म से होता है और राजा भी कर्म से ही होता है। कर्म से ही यह सारा जगत चलता है। जिस प्रकार धुरी पर आधार रखकर रथ चलता है, उसी प्रकार सारे प्राणी अपने-अपने कर्म पर आधार रखते हैं। बुद्ध का यह उपदेश सुनकर वशिष्ठ और भारद्वाज उनके उपासक बन गए।

निकाय में बुद्ध कहते हैं। मनुष्य किसी भी वर्ण का हो, उसकी परिचर्या करना उचित है। जिस मनुष्य की परिचर्या करने से श्रद्धा, शील, त्याग और प्रजा की अभिवृद्धि होती है, वह ही ब्राह्मण और तपसी है। रीज डेविडस ने बौद्ध धर्म पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'बुद्धिज़्म' में लिखा है कि "गौतम के अध्यात्म और अन्यान्य सिद्धांतों में ऐसी कुछ नहीं है, जो सनातन धर्म के किसी-न-किसी ग्रंथ में न हो। बुद्ध ने विभिन्न प्रसंगों में धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह सनातम धर्म है। (एस धम्मों सनातनों) अर्थात् उन्होंने किसी स्वतंत्र धर्म का उपदेश नहीं किया, बल्कि उस समय प्रचलित रूढ़ियों और अंधविश्वासों से ही मुक्त होने के लिए समझाया। कर्मकांड के प्रति उपनिषदों में और बुद्ध के वचनों में एक जैसी घृणा है।

ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी में पूरा भारत कर्म के सिद्धांत और मोक्ष प्राप्ति की संभावना को स्वीकार कर रहा था। उस समय एक स्वर से स्वीकार किया जा रहा था कि दुख इस भौतिक जीवन और संसार की अनिवार्य घटना है। इसका निराकरण किया जा सकता है। चार आर्य सत्य-दुख, कारण, निरोध और मार्ग बुद्ध के उपदेशों का मर्म है। उन्होंने संसार में दुख पर जोर दिया। कहीं-कहीं तो वह आवश्यकता से अधिक लगता है। लेकिन यह आवश्यक भी है, क्योंकि जब तक हम अंधकार को नहीं देखते, प्रकाश के महत्व को नहीं समझ सकते। जीवन के महत्व का भाव उसकी क्षणभगुंरता के कारण ही हमारे मन में उठता है। यदि युवावस्था का सौंदर्य और वृद्धावस्था की गरिमा क्षणभंगुर है, तो जन्म के समय की प्रसव पीड़ा और मृत्यु के समय का दुख भी क्षणभंगुर ही है।

---धर्मानंद कोसांबी

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि किस प्रकार महात्मा बुद्ध ने अंधविश्वासों का खंडन करके एक वैज्ञानिक धर्म की स्थापना की थी।

शब्दार्थ

प्रवज्या - संन्यास, दीक्षा; आसक्ति - लगाव; मोक्ष - मुक्ति, पूर्ण स्वतंत्रता; परिचर्या - सेवा, आवभगत; क्षणभंगुर - पल में नष्ट हो जाने वाला।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) किस आचार्य से यज्ञ के विषय में पूछा गया?

(ख) बुद्ध ने किसे उत्तम यज्ञ बताया?

(ग) बुद्ध के उपदेश सुनकर कौन उनके उपासक बन गए?

(घ) 'एस धम्मों सनातनों' का क्या अर्थ है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) यज्ञ के आयोजन में खर्च होनी थी–

(अ) अल्प धनराशि
(ब) हजारों स्वर्ण मुद्राएँ
(स) ज़मीनें
(द) वाटिकाएँ

(ख) बुद्ध ने ब्राहमण उसे कहा–

(अ) जो चोटी रखे
(ब) जो शास्त्र रटे
(स) जो व्याख्यान दे
(द) जो संसार के बंधन काट डाले

(ग) निकाय में बुद्ध ने कहा है–

(अ) खूब पढ़ो
(ब) खूब लिखो
(स) खूब हँसो
(द) मनुष्य किसी भी वर्ण का हो, उसकी परिचर्या करो

(घ) बुद्ध का उपदेश सुनकर उनके उपासक बन गए–

(अ) वशिष्ठ और भारद्वाज (ब) मुगल

(स) अंग्रेज़ (द) पारसी

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मनुष्य की परिचर्या करने से क्या होता है?

(ख) रीज डेविड्स ने अपनी पुस्तक में बौद्ध धर्म के बारे में क्या लिखा है?

(ग) बुद्ध ने किससे मुक्त होने की बात समझाई ?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) बुद्ध ने कर्मों के महत्व का वर्णन किस प्रकार किया है?

(ख) किन चार आर्य सत्यों का उल्लेख बुद्ध ने किया?

(ग) बुद्ध ने किसे क्षणभंगुर कहा?

भाषा-ज्ञान

1. मूल शब्द से शब्द परिवार बनाइए-

(क) आधार	आधारशिला	_____	_____ ।
(ख) क्षण	_____	क्षणिक	_____ ।
(ग) सत्य	सत्यवादी	_____	_____ ।
(घ) हिंसा	_____	अहिंसा	_____ ।

2. उचित स्थान पर अनुस्वार या अनुनासिक लगाकर लिखिए

(क) कहा _____ (ख) मुह _____

(ग) तुरत _____ (घ) बाए _____

(ङ) हसते _____ (च) फूक _____

3. दिए गए शब्दों की संधि कीजिए

(क) पर + उपकार _____

(ख) स्व + अर्थ _____

(ग) प्रति + शोध _____

(घ) जीवन + यापन _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** अपने परिवेश में फैली ऊँच-नीच की मान्यताओं को लेकर आपके मन में क्या भाव उत्पन्न होते हैं, व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- बुद्ध ने धर्म की खोज के लिए घर-परिवार, राज्य और हर सुख छोड़ा। कल्पना कीजिए कि इतना त्याग करने के लिए कितनी दृढ़ता व साहस चाहिए।

क्रिया-कलाप

- महात्मा बुद्ध की पाँच शिक्षाएँ ढूँढ़कर यहाँ लिखिए।
- बौद्ध धर्म विश्व के किन-किन देशों में फैला? पता लगाइए।

इनकी शिक्षाएँ ढूँढ़कर लिखिए–

(क) बौद्ध धर्म

(ख) जैन धर्म

अध्याय

13. पूस की रात

प्रेमचंद जी ने अनेक कहानियाँ लिखी हैं, जो ग्रामीण परिवेश का सजीव चित्रण करती हैं। यहाँ प्रस्तुत है उनकी एक सुप्रसिद्ध कहानी।

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा–"सहना आया है। लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे?" मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली– "तीन ही रुपए हैं, दे दोगे तो कंबल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे, अभी नहीं।"

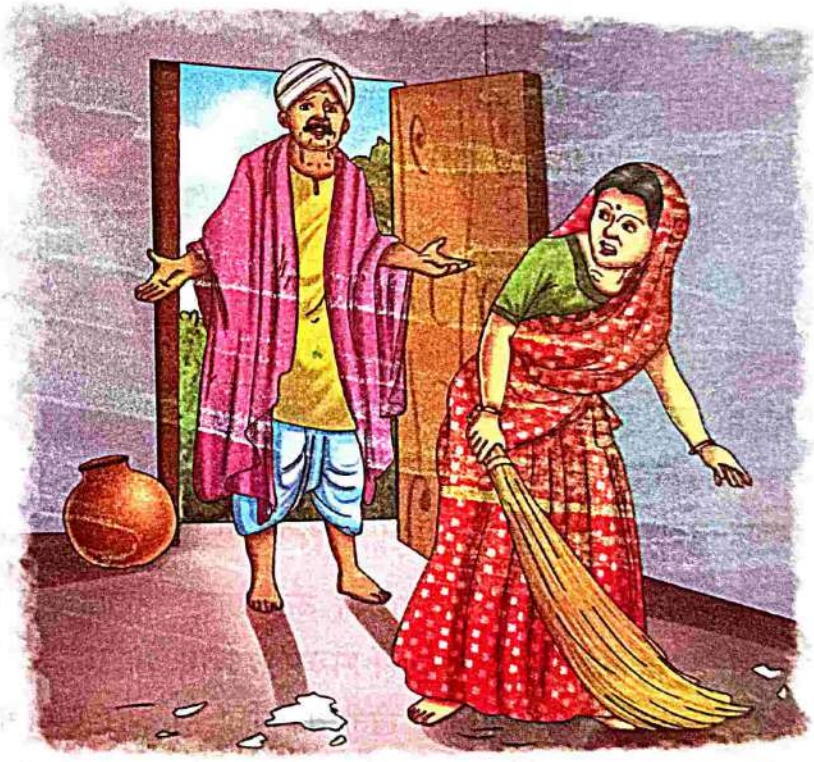

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कंबल के बिना हार में रात को वह किसी तरह सो नहीं सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाड़ों में मरेंगे, बला तो सिर से टले। यह सोचता हुआ वह अपना भारी भरकम डील लिए हुए *(जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था।)* स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करते हुए बोला– "दे दे, गला तो छूटे। कंबल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।"

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली– "कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूँ तो कौन सा उपाय करोगे? कोई खैरात में दे देगा कंबल? न जाने कितनी रकम बाकी है, जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ, तुम खेती क्यों नहीं छोड़ देते? मर-मर काम करो, उपज हो, तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रुपये न दूँगी।" हल्कू उदास होकर बोला–"क्या गाली खाऊँ?"

मुन्नी ने तड़पकर कहा – "गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?"

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पढ़ गईं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानों एक भीषण जंतु की भाँति उसे घूर रहा था। उसने जाकर आले पर से रुपए निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए। फिर बोली-"तुम छोड़ दो, अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी तो खाने को मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।"

हल्कू ने रुपए लिए और इस तरह बाहर चला, मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काटकर तीन रुपए कंबल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अँधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े पड़ा काँप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सरदी से कूँ-कूँ कर रहा था। दोनों में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गरदन में चिपकाते हुए कहा - "क्यों जबरा, जाड़ा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेटा रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे? अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ? जानते थे, मैं यहाँ हलुआ-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौड़े-दौड़े आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।"

जबरा ने पड़े-पड़े दुम हिलाई और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान-बुद्धि ने शायद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूँ-कूँ से नींद नहीं आ रही है।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा-"कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह पछुआ न जाने कहाँ से बरफ़ लिए आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मज़ा है। और एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा आए, तो गरमी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कंबल। मजाल है, जाड़े का जो उधर से गुज़र हो जाए। तकदीर की खूबी। मजूरी हम करें, मज़ा दूसरे लूटें।"

हल्कू उठा, गड्ढे में से ज़रा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा- पिएगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, हाँ जरा मन बदल जाता है।"

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।

हल्कू – "आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा। उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।"

जबरा ने अपने पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया। हल्कू को उसकी गरम साँस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो, अबकी सो जाऊँगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कंपन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया, उसने जबरा को धीरे-से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद में चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के द्वार खोल दिए थे और उनका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

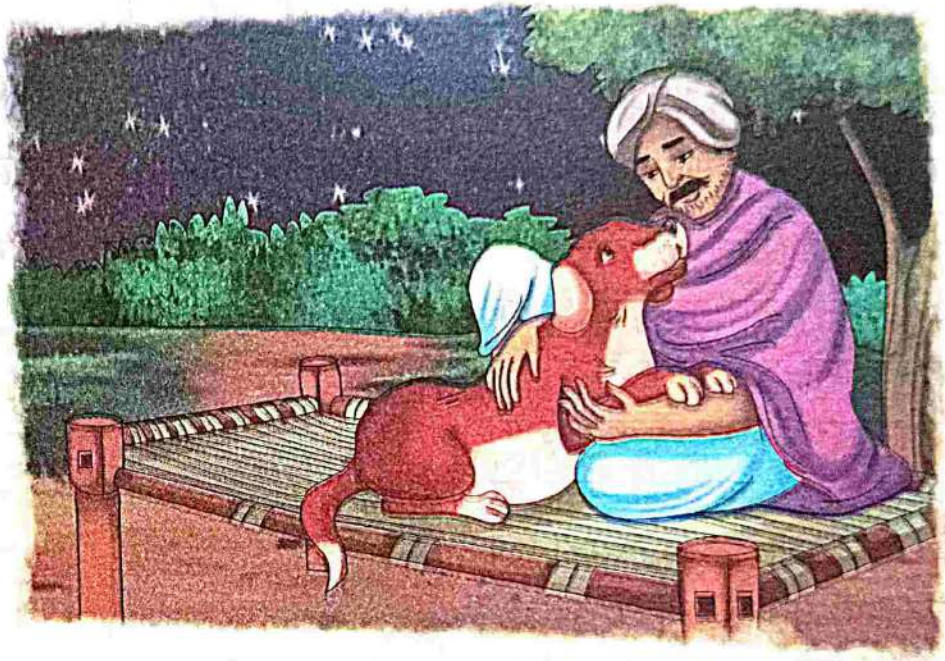

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी से बाहर आकर भौंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकार कर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़-दौड़कर भौंकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति ही उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई; ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह बर्फ़ बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढ़े। ऊपर आ जाएँगे, तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से थोड़ी ही दूरी पर आमों का एक बाग था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे तो समझे, कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की ओर चला। जबरा ने उसे आते देखा, पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा - "अब तो नहीं रहा जाता जबरू। चलो, बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। गरम हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएँगे। अभी तो बहुत रात है।" जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और हल्कू से आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अंधकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदें टप-टप नीचे टपक रही थी।

एकाएक एक झोंका मेहँदी के फूलों की खुशबू लिए हुए आया।

हल्कू ने कहा - "कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में भी तो सुगंध आ रही है?"

जबरा को कहीं ज़मीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। वह उसे चिंचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग ज़मीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा-सी देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा। थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगीं। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानों उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हो। अंधकार के उस अनंत सागर में वह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

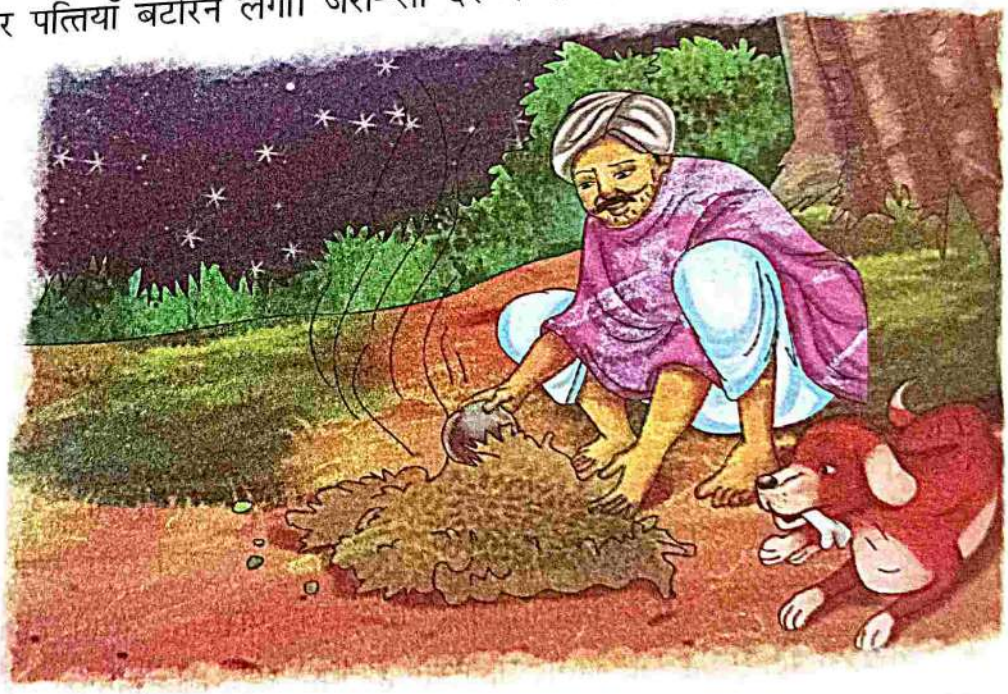

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली, दोनों पाँव फैला दिए, मानो ठंड को ललकार रहा हो, 'तेरे जी में आए सो कर।' ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर यह विजय-पर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा - "क्यों जबरा, अब ठंड नहीं लग रही है?"

जबरा ने कूँ-कूँ करके मानो कहा – "अब क्या ठंड लगती ही रहेगी?"

"पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।" जबरा ने पूँछ हिलाई।

"अच्छा आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बच्चा, तो मैं दवा न करूँगा।"

जबरा ने उस अग्नि-राशि की ओर कातर नेत्रों से देखा!

"मुन्नी से कल न कह देना, नहीं लड़ाई करेगी।" यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफ़ निकल गया! पैरों में ज़रा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के इर्द-गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा – "चलो-चलो, इसकी सही नहीं! ऊपर से कूदकर आओ।" वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया। पत्तियाँ जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अँधेरा छा गया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर ज़रा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आँखें बंद कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गरम राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गरमी आ गई थी, पर ज्यों-ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा ज़ोर से भौंककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुंड था। उनके कूदने-दौड़ने की आवाज़ें साफ़ कान में आ रही थी। फिर ऐसा मालूम हुआ कि वे खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज़ चर-चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा– "नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। कोई हो, तो वह नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहाँ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसे धोखा हुआ!"

उसने जोर से आवाज लगाई– "जबरा, जबरा!" जबरा भौंकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना ज़हर लग रहा था। इस जाड़े-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असह्य जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई – "हिलो! हिलो! हिलो!" जबरा फिर भौंक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फ़सल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभने वाला, बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गरमाने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगाएँ खेत का सफ़ाया किए डालती थी और हल्कू गरम राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफ़ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गरम ज़मीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया।

सवेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी-"क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।"

हल्कू ने उठकर कहा-"क्या तू खेत में होकर आ रही है?"

मुन्नी बोली - "हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है! तुम्हारे यहाँ मड़ैया डालने से क्या हुआ?"

हल्कू ने बहाना किया - "मैं मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है! पेट में ऐसा दर्द हुआ, ऐसा दर्द हुआ कि मैं ही जानता हूँ।"

दोनों फिर खेत में डाँड़ पर आए। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है और जबरा मड़ैया के ऊपर चित्त लेटा है, मानों प्राण ही न हों।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा - "अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।"

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा - "रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।"

—प्रेमचंद

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि किस प्रकार निर्धन भारतीय कृषक अनेक कठिनाइयाँ व दुख झेलते हैं।

शब्दार्थ

भीषण - भयानक; श्वान - कुत्ता; अकर्मण्यता - आलस्य; चौपट होना - नष्ट होना; तत्परता - शीघ्रता; अभिन्न - जो अलग न हो; पिशाच - भूत; तुच्छ - घटिया।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) हल्कू ने पत्नी से रुपए किसलिए माँगे?

(ख) मुन्नी रुपए देने को राज़ी क्यों न थी?

(ग) रात को हल्कू के साथ कौन था, जिससे वह बातें कर रहा था?

(घ) हल्कू ने अलाव कैसे जलाया?

अभ्यास प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) हल्कू से रुपए माँग रहा था-

(अ) थानेदार ⬡ (ब) सिपाही ⬡

(स) सहना ⬡ (द) सेठ ⬡

(ख) जबरा हल्कू से-

(अ) चिढ़ता था ⬡ (ब) प्रेम करता था ⬡

(स) लड़ता था ⬡ (द) दूर भागता था ⬡

(ग) मुन्नी हल्कू से खेती के स्थान पर करने को कहती थी-

(अ) मालीगिरी ⬡ (ब) चौकीदारी ⬡

(स) नौकरी ⬡ (द) मज़दूरी ⬡

(घ) हल्कू के खेतों को नष्ट कर दिया-

(अ) चोरों ने ⬡ (ब) शत्रुओं ने ⬡

(स) जानवरों के झुंड ने ⬡ (द) कर्ज़ देने वालों ने ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) क्या खरीदने के लिए मुन्नी ने पैसे जमा किए थे?

(ख) न चाहते हुए भी मुन्नी ने बचत के रुपए क्यों दे दिए?

(ग) हल्कू ने ठंड मिटाने के लिए पहला प्रयास क्या किया?

(घ) खेत नष्ट होता जानकर भी हल्कू जानवरों को भगाने क्यों नहीं गया?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) 'ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय पर्व को हृदय में छिपा न सकता था।'

(ख) 'थोड़ी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी, उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानों उस अथाह अंधकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हों।'

भाषा-ज्ञान

1. लेखक ने अनेक देशज शब्दों का प्रयोग कहानी में किया है- जैसे, पुआल, खटोला आदि।

दिए गए शब्दों को उचित शीर्षक के अंतर्गत रखिए।

ज़हर, भौंक, सर्वनाश, ओढ़, कातर, भ्रम, शांत, सुगंध, अस्थिर, दवा, नेत्र, अनंत, आवाज़, इरादा, बहाना

हिंदी _____ _____ _____ _____

उर्दू _____ _____ _____ _____

देशज _____ _____ _____ _____

2. पढ़िए और समझिए

(क) रोशनी, उजाला, प्रकाश।

(ख) अवस्था, हालत, स्थिति।

(ग) दरवाजा, द्वार, किवाड़।

(घ) आसमान, आकाश, नभ।

3. दिए गए मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए-

(क) गला फाड़ना _____

(ख) चौपट होना _____

(ग) धौंस जमाना _____

(घ) गला छुड़ाना _____

4. सहमति शब्द बना है— 'सह' + 'मति' के योग से। दिए गए शब्दों से पहले 'सह' या 'सर्व' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द लिखिए-

(क) योग _____ + _____ = _____

(ख) नाश _____ + _____ = _____

(ग) वास _____ + _____ = _____

(घ) भागी _____ + _____ = _____

(ङ) प्रिय _____ + _____ = _____

रचना के क्षण

भाव-भूमि– पाठ में आपने ठंड का वर्णन पढ़ा। क्या आपने भी किसी ठंडी ऐसी ही कड़ाके की सरदी की रात कहीं पिकनिक या बस खराब हो जाने के कारण बाहर बिताई है। यदि, हाँ तो वर्णन कीजिए। यदि नहीं, तो सोचिए कि यदि ऐसा होता, तो आप क्या करते?

कल्पना व चिंतन

भारत में निर्धनता की उस स्थिति का अनुमान लगाइए, जबकि सरदी-गरमी आदि से रक्षा करने के लिए आवश्यक वस्त्र तक उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में ज़रूरत से ज़्यादा कपड़े एकत्र करके रखने वालों के विषय में आप क्या कहेंगे? लिखिए।

क्रिया-कलाप

सरदी में फुटपाथ पर ठिठुरते लोगों के लिए गर्म शॉल, कंबल आदि की व्यवस्था कीजिए और वर्णन कीजिए कि ऐसा करके आपको कैसा लगा?

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाजु-ए-क़ातिल में है।

वक़्त आने दे, बता देंगे तुझे, ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है।

रहबरे राहे मुहब्बत, रह न जाना राह में,
लज़्जते सहरा नवर्दी दूरी-ए-मंजिल में है।

अब न पगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है।

ऐ शहीदे-मुल्कों-मिल्लत, तेरे जज़्बों के निसार,
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफ़िल में है।

यूँ खड़ा मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार-बार,
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है?

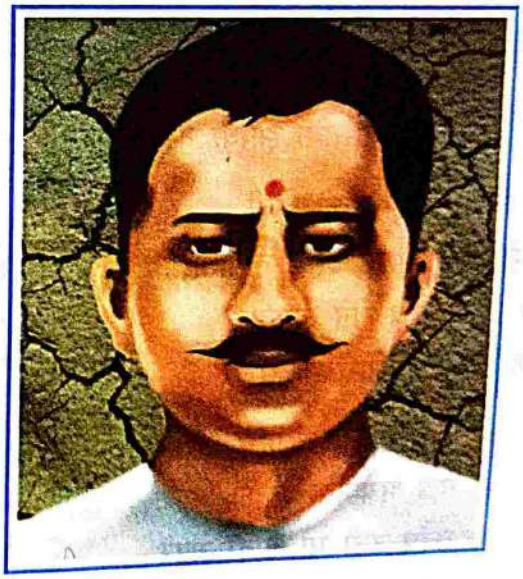

—रामप्रसाद 'बिस्मिल'

पठन हेतु

माँ और सरदी के दिन

दिन हैं गहरे जाड़े के
रात-रात-भर स्तेपी में
हिम-तूफ़ान गरजते रहते हैं।

हर चीज़ पर बर्फ़ लदी है
हिम अँधड़ों के उत्पात
सब बेचैनी से सहते हैं।

घर के भीतर जली ढिबरी
लौ काँपे है उसकी,
देती हलकी पीली रोशनी
रात ले रही है सिसकी।

माँ का रतजगा हुआ है आज
वह घर-भर में टहले जाती,
चिंतित है बेहद, मौसम खराब है
वह पलक तक झपक न पाती।

जब ढिबरी बुझने को होती
किसी किताब की आड़ लगाती,
और शिशु जब रोने लगता
लगा अंक से लोरी गाती।

तभी अचानक हिम अँधड़ का
तेज़ भयानक झोंका आया,
काँप उठी माँ भीतर गहरे
लगा उसे घर अब थर्राया।

स्तेपी में पड़ी अकेली
कौन भला मदद को आए,
थकी नज़र, चेहरा उदास है
मन उसका बेहद घबराए।

—इवान बूनिन (अनुवाद : अनिल जनविजय)

अध्याय

14.
सुदामा चरित

सुदामा-कृष्ण की मित्रता जग-विख्यात है। निर्धन सुदामा और अत्यंत वैभव व ऐश्वर्य के स्वामी कृष्ण की मैत्री पर आधारित इन पदों में कवि ने अत्यंत धार्मिक चित्रण किया है।

(1)

विप्र सुदामा बसत हैं, सदा आपने धाम।
भिच्छा करि भोजन करैं, हिये जपैं हरि नाम।।
ताकि धरनी पतिब्रता गहे बेद की रीति।
सुबुधि, सुसील सुलज्ज अति, पति सेवा सों प्रीति।।
कही सुदामा एक दिन, कृस्न हमारे मित्र।
करत रहति उपदेश तिय, ऐसो परम विचित्र।

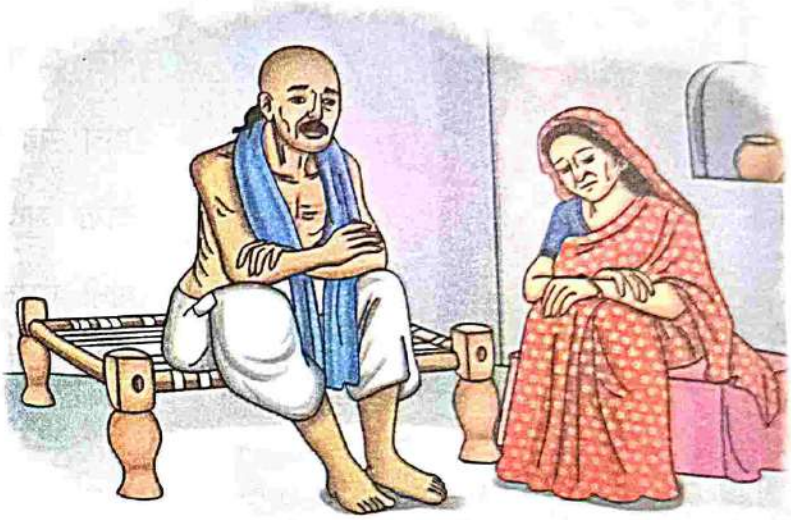

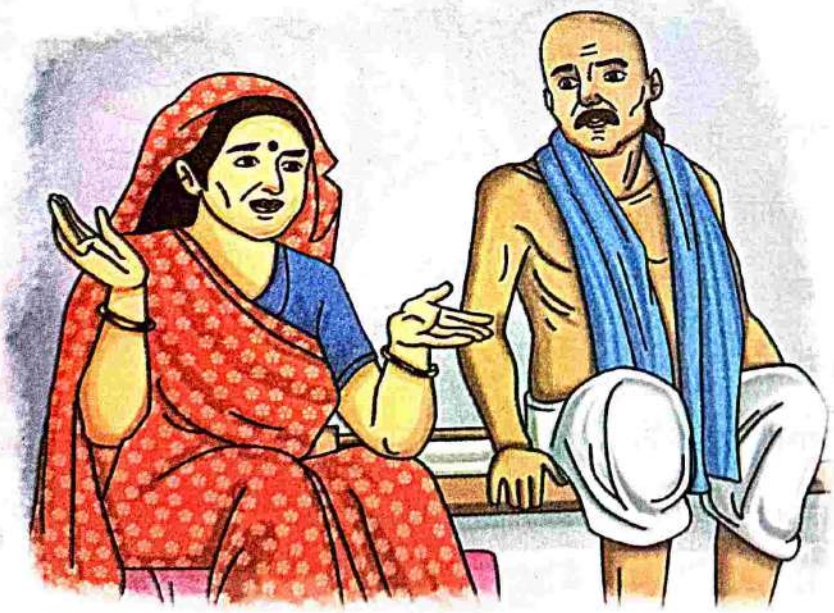

(2)

लोचन-कमल दुख-मोचन तिलक, भाल,
स्रवननि कुंडल, मुकुट धरे माथ हैं।
ओढ़े पीत, बसन गेर में बैजयंती माल,
संख-चक्र-गदा और पद्म धरे हाथ हैं।
कहत 'नरोत्तम' संदीपन गुरु के पास,
तुमही कहत, हम पढ़े एक साथ हैं।
द्वारका के गए हरि दारिद हरैंगे, पिय,
द्वारका के नाथ वे अनाथन के नाथ हैं।।

(3)

सीस पगा न झगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी अरू, पायँ उपानह की नहिं सामा।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा।

(4)

ऐसे बेहाल बिबाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय महादुख पायो सखा तुम आए इतै न कितै दिन खोए।।
देखि सुदामा की दीन दसा करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।

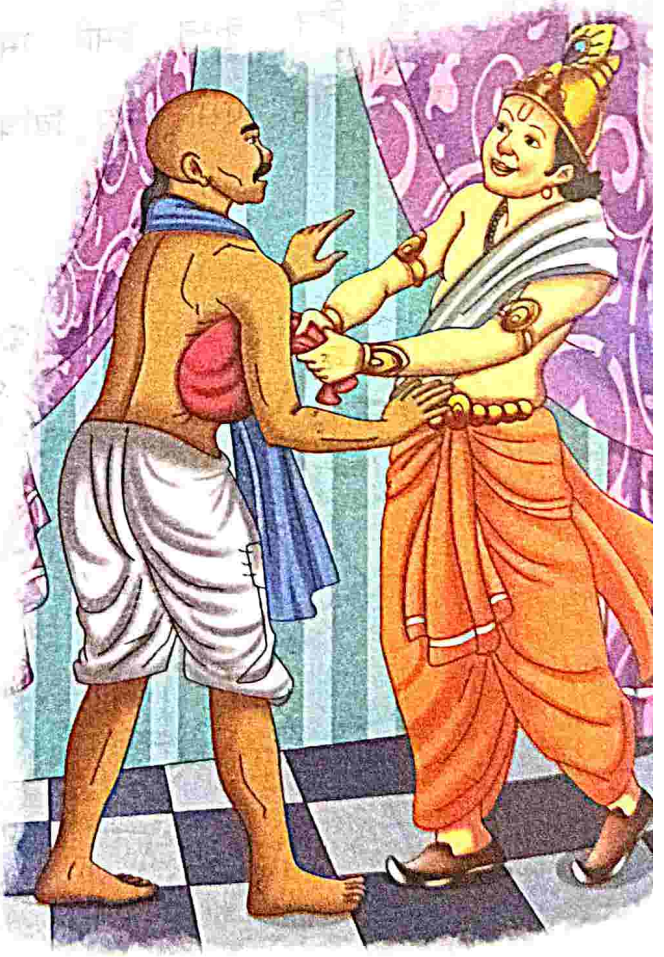

(5)

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु।।
आगे चना गुरुमातु दए तो, भए तुम चाबि हमें नहिं दीने।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सौ, चोरी की बान में हो जू प्रवीने।
पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने।
पाछिली बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हे।।

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों को दिए गए प्रसंग के आधार पर समझाइए कि मैत्री धन पर नहीं, वरन् प्रेम पर आधारित होती है।

शब्दार्थ

विप्र - ब्राह्मण; हिये - हृदय में; भिच्छा - भिक्षा; धरनी - पत्नी; सुलज्ज - लज्जाशील; कृस्न - श्री कृष्ण; दुख मोचन - दुखों को दूर करने वाले; भाल - मस्तक; स्रवननि - कानों में; बसन - वस्त्र; संख - शंख; पद्म - कमल; दारिद - दरिद्रता; हरेंगे - दूर करेंगे; सीस - सिर; पगा - पगड़ी; झँगा - कुरता; लटी - पतली; अरू - और; पाय - पैरों में; उपानह - जूता; सामा - सामर्थ्य; द्विज - ब्राह्मण; चकि - चकित; अभिरामा - सुंदर; सखा - मित्र; इतै - इतने; कितै - कितने; प्रवीने - प्रवीण, कुशल; काँख - बगल; सुधा - अमृत; तंदुल - चावल।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) सुदामा क्या काम करते थे?

(ख) सुदामा की पत्नी कैसी थी?

(ग) कृष्ण के विषय में सुदामा की पत्नी की क्या राय थी?

(घ) सुदामा की दीन दशा देखकर कृष्ण पर क्या प्रभाव पड़ा था?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) सुदामा की पत्नी थी–

(अ) झगड़ालू ⬡ (ब) पतिव्रता ⬡

(स) फूहड़ ⬡ (द) अनपढ़ ⬡

(ख) सुदामा के मित्र थे–

(अ) पड़ोसी ⬡ (ब) अनेक ⬡

(स) कृष्ण ⬡ (द) अर्जुन ⬡

(ग) द्वारिका के नाथ को सुदामा की पत्नी ने कहा–

(अ) वीर (ब) योद्धा

(स) ज्ञानी (द) अनाथों के नाथ

(घ) सुदामा के पैर में थीं–

(अ) चप्पलें (ब) जुराबें

(स) जूतियाँ (द) बिवाइयाँ

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कृष्ण ने सुदामा से क्या माँगा?

(ख) चावलों की पोटली सुदामा ने कहाँ छुपा रखी थी?

(ग) कृष्ण ने सुदामा को कौन-सा पुराना उलाहना दिया?

(घ) यहाँ अनाथों के नाथ किसे कहा गया है और क्यों?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) सुदामा की दीनदशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए–

ऐसे बेहाल बिबाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय महादुख पायो सखा तुम आए इतै न कितै दिन खोए।।
देखि सुदामा की दीन दसा करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।

(ग) कृष्ण के सामने सुदामा भेंट दिखाते हुए क्यों सकुचा रहे थे? स्पष्ट कीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) कृस्न	(i) शीश
(ख) सीस	(ii) द्वारिद्य
(ग) पाँय	(iii) पाँव
(घ) चावि	(iv) कृष्ण
(ङ) दारिद	(v) चबाना

2. **'ता' प्रत्यय जोड़कर लिखिए-**

(क) दरिद्र _____ (ख) समान _____

(ग) उच्च _____ (घ) नीच _____

(ङ) अलौकिक _____ (च) दिव्य _____

(छ) हीन _____ (ज) समर्थ _____

3. 'सु' उपसर्ग लगाकर पदों में कई शब्द आए हैं, जैसे–सुलज्ज, सुशील, सुबुधि आदि।

इसी प्रकार 'सु' उपसर्ग लगाकर पाँच नए शब्द लिखिए–

_____ _____ _____ _____ _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** अपने से बहुत अधिक धनवान मित्र के घर जाते हुए आपके मन में कैसे-कैसे भाव उत्पन्न होते हैं? व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- क्या आजकल सभी धनी व्यक्तियों के ही मित्र बनना चाहते हैं? चिंतन-मनन करके निष्कर्ष दीजिए। स्वयं को सुदामा या कृष्ण किसी एक रूप में रखकर अपने व्यवहार की कल्पना कीजिए।

क्रिया-कलाप

- विद्यालय मंच पर सुदामा कृष्ण के इस प्रकरण को नाटिका के रूप में प्रदर्शित कीजिए। स्वयं के लिए उपयुक्त वेशभूषा की व्यवस्था कीजिए।
- आप भी अपने मित्र के लिए कुछ भेंट या उपहार प्रायः खरीदते होंगे। क्या सोचकर आप उसका चयन करते हैं? एक अनुच्छेद में लिखिए

अध्याय

15. सोना

महादेवी वर्मा हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका हैं, उन्होंने अपने जीवन में अनेक पशु-पक्षी बड़े स्नेह से पाले और उनके बारे में और उनके द्वारा पाले गए एक हिरन का संस्मरण दिया गया है।

सोना अचानक आई थी, परंतु वह तब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती थीं तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी।

परंतु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। वह न किसी दुर्लभ खान के अमूल्य हीरे की कथा है और न अथाह समुद्र के बहुमूल्य मोती की।

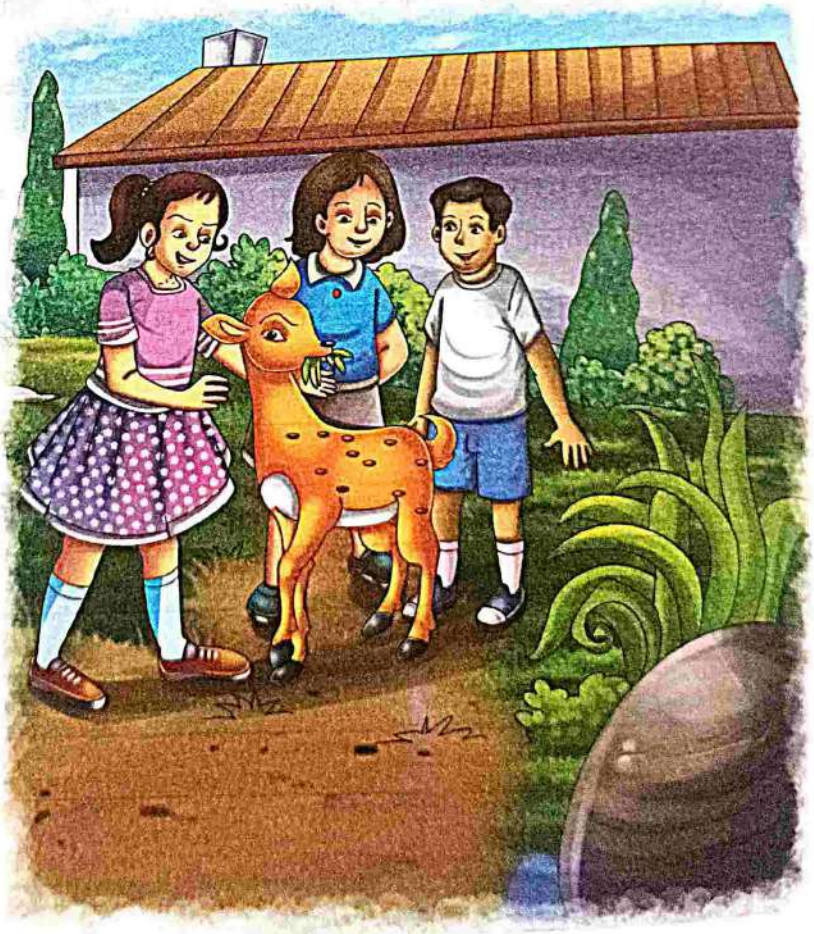

प्रशांत वनस्थली में जब अलस भाव में जुगाली करता हुआ मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ भागने में असमर्थ रही। सद्य: जात मृगशिशु तो भाग नहीं सकता था, अत: मृगी माँ ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट से सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दे दिए। शिकारी मृत हिरनी के साथ उसके रक्त से सने और ठंडे स्तनों से लिपटे हुए शावक को जीवित उठा लाए। उनमें से किसी के परिवार की सद्य गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिलाकर दो चार दिन जीवित रखा।

किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और अनाथ शावक को मेरे पास ले आई। उसके बचने के आशा भी धूमिल थी, परंतु मैंने उसे स्वीकार कर लिया। स्निग्ध सुनहरे रंग के कारण सब उसे 'सोना' कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी,

ग्लूकोज, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरंभ हुआ। उसका दिनभर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रावास के विद्यार्थियों के निकट पहले वह कौतुक का कारण रही, परंतु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गई, जिसके बिना उनका किसी काम में मन नहीं लगता था।

दूध पीकर और भीगे चने खाकर, सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती। फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे के भीतर-बाहर निरीक्षण करती। सवेरे छात्रावास में विचित्र-सी क्रियाशीलता रहती है। कोई छात्रा हाथ मुँह धोती है, कोई बालों में कँघी करती है, कोई साड़ी बदलती है, कोई अपनी मेज़ की सफ़ाई करती है, कोई स्नान करके भीगे कपड़े सूखने के लिए फैलाती है और कोई पूजा करती है।

सोना के पहुँच जाने पर इस विविध कर्म-संकुलता में एक नया काम और जुड़ जाता था। कोई छात्रा उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देती, कोई गले में रिबन बाँध देती और कोई पूजा के बताशे खिला देती।

मैस में उसके पहुँचते ही छात्राएँ ही नहीं, नौकर-चाकर तक दौड़ आते और सभी उसे कुछ-न-कुछ खिलाने को उतावले रहते, परन्तु उसे बिस्कुट को छोड़कर कम खाद्य पदार्थ पसंद थे।

छात्रावास का जागरण और जल-पान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती। मेरे भोजन का समय वह किस प्रकार जान लेती थी, यह समझने का उपाय नहीं है, परंतु वह ठीक उसी समय भीतर आ जाती और तब तक मुझसे सटी खड़ी रहती, जब तक मेरा खाना समाप्त न हो जाता। कुछ चावल, रोटी आदि उसको भी प्राप्त होता रहता था, परंतु उसे कच्ची सब्ज़ी ही अधिक भाती थी। घंटी बजते ही वह फिर प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के सामने ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरंभ करती।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे क्योंकि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था। वे पंक्तिबद्ध बड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। यह सरकस जैसा खेल कभी घंटों चलता क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरांत दूसरी कक्षा आती रहती।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के उसके कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्राय: देखने वालों को भ्रम होता था कि उसके पैरों से मेरे सिर पर चोट न लग जाए, परंतु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती थी और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई आशंका ही नहीं रहती थी।

भीतर अपने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डाँटने पर वह अपनी बड़ी, गोल और चकित आँखों से ऐसी जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती। मेरी बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमंत-बसंत, कुतिया फ्लोरा, सब इस नए अतिथि को देखकर रुष्ट हुए, परंतु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे साख्य स्थापित कर लिया।

फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते-बिल्ली उस पर उछलते-कूदते रहते। कोई उसके कान खींचता, कोई पैर और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते, तब वह अचानक चौकड़ी भरकर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते। वर्षभर का समय बीत जाने पर सोना की टाँगें अधिक सुडौल हो गई और खुरों के कालेपन में चमक आ गई। गर्दन लचीली हो गई। पीठ में भराव वाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जल कोर में नीले गोलक की दृष्टि ऐसी लगती थी, मानो नीलम के बल्बों में उजली चमक हो। इसी बीच फ्लोरा ने भक्तिन की कुछ अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गई। एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसे इतने लघु जीवों से घिरा देखकर, उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गई।

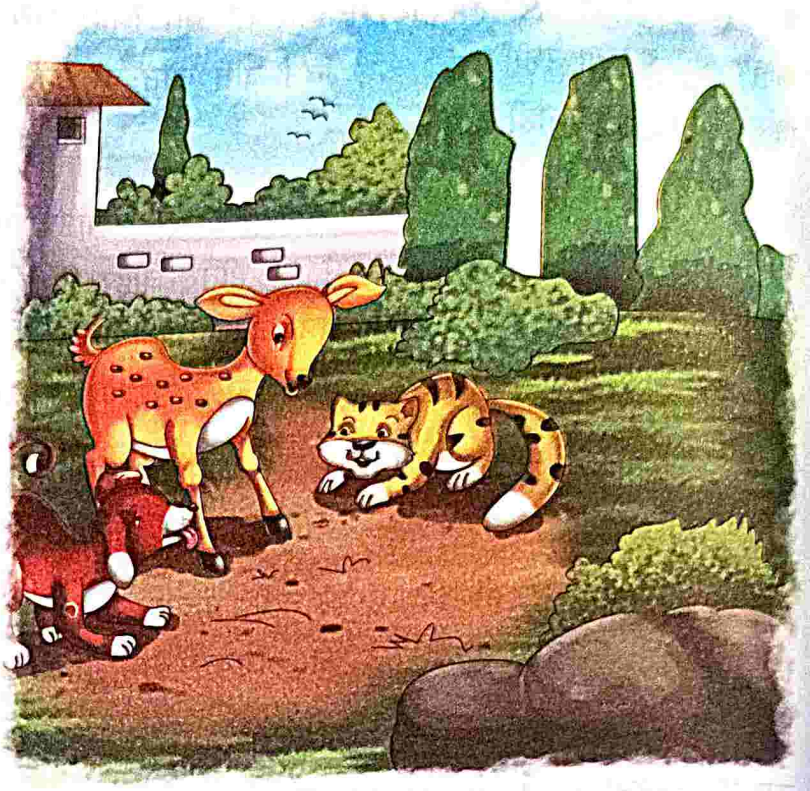

एक दिन देखा, फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गई और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिंत लेटी है। पिल्ले आँखें बंद रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे। तब से सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा, हेमंत, बसंत या गोधूली को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी, परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

संभवत: वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गई थी। पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर, सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमने वाली सेना में सम्मिलित कर लिया। उसी वर्ष गर्मियों में मेरा बद्रीनाथ यात्रा का कार्यक्रम बना। प्राय: मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ। उनकी देखरेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती।

पैदल आने-जाने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। 2 जुलाई को लौटकर जब मैं बंगले के द्वार पर आ खड़ी हुई, तब बिछड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा।

गोधूली कूदकर कँधे पर आ बैठी। हेमंत-बसंत मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष की ध्वनियों से मेरा स्वागत करने लगे, पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए, मेरे सिर के ऊपर छलाँग नहीं लगाती? सोना कहाँ है, पूछने पर माली आँख पोंछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक-दूसरे का मुख देखने लगे। वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे, परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

ज्ञात हुआ के छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर-सी वह प्रायः कंपाउंड के बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसे खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया।

एक दिन बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

—महादेवी वर्मा

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि हमारे पालतू पशु तथा पक्षी हमारे परिवार के सदस्य के समान होते हैं; अतः हमें उनकी देखभाल भली प्रकार करनी चाहिए।

शब्दार्थ

शैशवावस्था - शिशु काल; शावक - पशु का छोटा बच्चा; व्यथा - दुख; अलस भाव - आलस; अनाथ - जिसके माँ-बाप न हों; अनुष्ठान - रीति-रिवाज़; धूमिल - धुँधली; तन्मय - किसी कार्य में लगे रहना; संरक्षण - बचाव करना; सृष्टि - संसार।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) सोना लेखिका के पास किस अवस्था में आई थी?

(ख) सोना की माँ के प्राण किस प्रयास में गए?

(ग) सोना को पालने के लिए क्या-क्या एकत्र किया गया?

(घ) क्या खाकर छात्रावास सोना जाती थी?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) छात्रावास में छात्राएँ–

(अ) केवल पढ़ती थीं

(ब) विविध क्रियाएँ करती थीं

(स) केवल मौन रहती थीं

(द) खेलती रहती थीं

(ख) सोना को खाने में पसंद थे–

(अ) चावल (ब) पूरी

(स) बिस्कुट (द) हलवा

(ग) सोना ने लेखिका द्वारा पाले अन्य प्राणियों से–

(अ) घृणा की (ब) झगड़ा किया

(स) मैत्री स्थापित कर ली (द) नुकसान पहुँचाया

(घ) सोना देखभाल करती थी–

(अ) फ्लोरा के बच्चों की (ब) भक्तिन की

(स) गोधूली की (द) हेमंत की

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखिका द्वारा पाले गए कुत्ते, बिल्ली और कुतिया के क्या-क्या नाम थे?

(ख) किस स्थान की यात्रा लेखिका ने पैदल की?

(ग) सोना अस्थिर क्यों हो गई थी?

(घ) सोना की मृत्यु कैसे हुई?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) 'उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा- कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। वह न किसी दुर्लभ खान के अमूल्य हीरे की कथा है और न अथाह समुद्र के बहुमूल्य मोती की।

(ख) सोना के पहुँच जाने पर इस विविध कर्म-संकुलता में एक नया काम और जुड़ जाता था। कोई छात्रा उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देती, कोई गले में रिबन बाँध देती और कोई पूजा के बताशे खिला देती।

भाषा-ज्ञान

1. दिए गए समुच्चयबोधक शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) बल्कि _____

(ख) क्योंकि _____

(ग) अर्थात _____

(घ) वरना _____

(ङ) अन्यथा _____

2. शब्दों को उचित शीर्षक के नीचे लिखिए

कंपाउंड, तन्मय, सुडौल, लचीली, गर्दन, बिस्कुट, प्रदर्शन, रोटी, फ्लोरा, संरक्षण, कूदती।

हिंदी _____ _____ _____ _____

अंग्रेजी _____ _____ _____ _____

लोकभाषा _____ _____ _____ _____

3. 'वान' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द लिखिए

(क) दया _____ (ख) कोच _____

(ग) शील _____ (घ) धन _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** 'सोना' रेखाचित्र के माध्यम से आपको जानवरों की क्या-क्या विशेषताएँ पता चलीं?

कल्पना व चिंतन

- पशु-पक्षियों की सुरक्षा तथा देखभाल करने के लिए आप क्या-क्या उपाय करेंगे? कक्षा में चर्चा कीजिए।

क्रिया-कलाप

- महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'गिल्लू' रेखाचित्र को पढ़िए और उसमें पशु तथा पक्षियों के रूप-सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

अध्याय

16. संगीत स्वामी हरिदास

इंतज़ार की घड़ियाँ हो गई खत्म, होने वाला है आज शाम को शहर में आपका नाटक खास, संगीत का स्वामी हरिदास।

पात्र-परिचय

स्वामी हरिदास	:	संत वेश, हाथ में गुदड़ी और कमंडल
सम्राट अकबर	:	मुगलिया शाही लिबास में
तानसेन	:	अकबर के दरबारी नवरत्नों में से एक।
नट	:	युवा कलाकार, मिर्जई या कुरता, सफ़ेद चुस्त पाज़ामा, कमर में लाल रंग का फेंटा और रंगीन पगड़ी।
नटी	:	युवती कलाकार, घाघरा, कमीज़ या फरिया, पीली ओढ़नी, गले और हाथों में चाँदी के देहाती आभूषण, पाँवों में घुँघरू

दृश्य आरंभ

(नट-नटी लोकधुन पर लोकनृत्य करते हुए प्रवेश करते हैं। दर्शकों को हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं।)

नटी : ओ मेरे प्राण प्रिय स्वामी! दर्शक ध्यान लगाए बैठे हैं कि आज हम क्या खेल लेकर आए हैं?

नट : ओ मेरी नटखट नटी, तुम हो बहुत हठी। आज तो भारतीय संगीत के स्वर झंकार रहे हैं।

नटी : भारतीय संगीत के कौन से स्वर? भारत में संगीत के अनेक रंग हैं, लेकिन उनमें आनंद की लहर एक है। अब संगीत की शैली या उसका प्रकार बताओ, तो जानें, आपको नाटक का सच्चा खिलाड़ी मानें।

नट : ओ मेरी नटखट नटी, तुम हो बहुत हठी। अध्यापक का-सा रौब दिखा रही हो। खेल को विद्यालय का कमरा बना रही हो। प्रश्न पर प्रश्न किए जा रही हो।

नटी : बहाने मत बनाओ, भारतीय संगीत के प्रकार बताओ। नहीं जानते, तो हार मान जाओ।

नट : सुनो मेरी नटी, उत्तर भारत में जो शास्त्रीय राग-रागनियाँ गाई जाती हैं, उन्हें 'हिंदुस्तानी संगीत' कहते हैं जो राग-रागनियाँ दक्षिण भारत में गाई-बजाई जाती हैं, वे कर्नाटक संगीत कहलाती हैं।

नटी : मैं तो तुम्हारे अज्ञान पर तरस खाती हूँ। अब दर्शकों को बताती हूँ (लोक-संगीत की धुन बजती है। वह लोकनृत्य पर ठुमका लगाती है अचानक रुककर) मेरे प्यारे दर्शको, भारतीय संगीत में लोक-संगीत भी संगीत का एक प्रकार है, जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ से पूर्वांचल तक गाया-बजाया जाता है। हमारे नटराज ने उसका ज़िक्र ही नहीं किया।

नट : ओ मेरी नटी! तुम बात कहती हो खरी।

नटी : अब बोलो, कौन सा खेल दिखा रहे हो?

नट : आज संगीत के स्वर झंकार रहे हैं, हम संगीत-स्वामी को पुकार रहे हैं। आज सभी दर्शक देखेंगे, नाटक संगीत स्वामी हरिदास (नट नटी चले जाते हैं)

प्रथम दृश्य

(पहला पहर। कमरे में बड़े-बड़े दीप-स्तंभों का प्रकाश है। अकबर के राजमहल का दृश्य। बादशाह अकबर और तानसेन बैठे बातें कर रहे हैं।)

अकबर : तानसेन, आपके उस्ताद स्वामी हरिदास ने हमारी प्रार्थना को ठुकरा दिया। उन्होंने महल में आने से साफ़ इनकार कर दिया।

तानसेन : जहाँपनाह, मैंने पहले ही कहा था कि वे हमारी प्रार्थना को स्वीकार नहीं करेंगे। आप ही नहीं माने।

अकबर : हम हिंदुस्तान के बादशाह हैं। हम समझते थे, हिंदुस्तान में हमारी बात कोई नहीं टालेगा। क्या करें, संगीत ने हमें दीवाना बना दिया है।

तानसेन : सम्राट क्षमा करें। संगीत ही क्या, आपको तो इस देश की प्रत्येक कला से स्नेह और लगाव है।

अकबर : मगर तानसेन, हिंदुस्तान का यह बदनसीब बादशाह स्वामी हरिदास का संगीत सुन ही नहीं पाएगा।

तानसेन : जहाँपनाह, निराश न हों। स्वामी हरिदास के संगीत को सुनने का अवसर अवश्य मिलेगा।

अकबर : मौका कब मिलेगा? जब हम अल्ला मियाँ को प्यारे हो जाएँगे?

तानसेन : नहीं जहाँपनाह, कल प्रातः ही उनके आश्रम पर संगीत सुनने का मौका मिल सकता है। लेकिन आप सम्राट के वेश में चले, तो वह अवसर हाथ से निकल जाएगा।

(तानसेन अकबर से कान में कुछ कहता है और अकबर हाँ-में-हाँ मिलाते हैं। थोड़ी देर खामोश इशारों में बातें होती हैं। मंच पर अंधकार।)

दूसरा दृश्य

(प्रभात का समय, वृंदावन में 'निधि-वन आश्रम' का एक कोना, बीच में तख्त और इधर-उधर आसन बिछे हैं। आसनों पर स्वामी हरिदास के शिष्य उनकी प्रतीक्षा में बैठे हैं। स्वामी हरिदास हाथ में कमंडल लिए प्रवेश करते हैं। सभी शिष्य और उपस्थित लोग खड़े हो जाते हैं। स्वामी तख्त पर आसन ग्रहण करते हैं। पास ही कमंडल रखकर हाथ के इशारे से सबको बैठने का आदेश देते हैं। तभी तानसेन का प्रवेश साथ में एक सेवक। तानसेन उनके चरण छूते हैं। सेवक श्रोताओं के बीच बैठ जाता है।)

स्वामी हरिदास : आओ तानेसन, कल्याण हो तुम्हारा। घर-परिवार में सब कुशल हैं?

तानसेन : जी गुरुदेव।

स्वामी हरिदास : तुम्हारी गायकी की प्रशंसा आश्रम में बैठा सुनता ही रहता हूँ। बहुत प्रसन्नता होती है। सुना है, तुमने कुछ नई राग-रागनियों की रचना की है।

तानसेन : स्वामी जी, यह तो सब आपकी ही कृपा है। इसमें मेरी विशेषता कम और आपकी शिक्षा का प्रभाव अधिक है।

स्वामी हरिदास : तानसेन, गुरुभक्ति में बह जाते हो। अपनी रचना पर मेरा प्रभाव बताते हो?

तानसेन : नहीं गुरुदेव, मैं सच कहता हूँ। रचना या कृति तो आपकी ही है, मैंने उन्हें नई बंदिश दी है। सुरों को आपकी छाया में नया रूप दिया है।

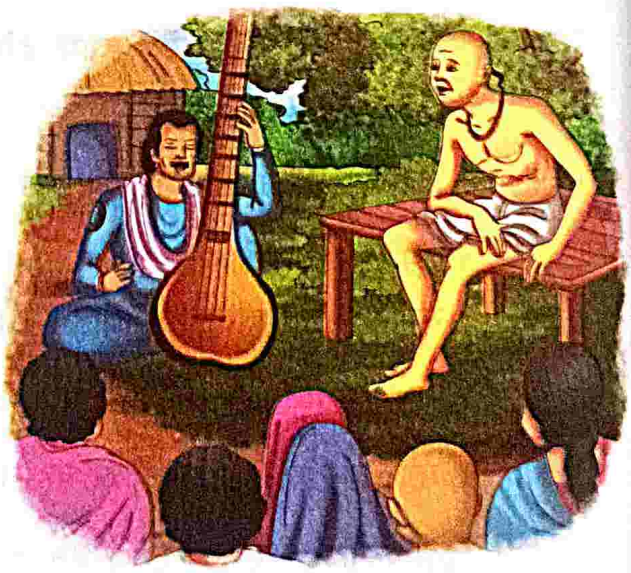

स्वामी हरिदास : चलो, विवाद नहीं करते। अल्लादीन, तानसेन को तानपूरा दो। आज इनकी नई बंदिश सुनेंगे। राजमहल गायक निधि-वन आश्रम में अपने सुरों का रंग जमाएगा। प्रभु वृंदावन बिहारी के चरणों में संगीत का आलौकिक आनंद आएगा।

(अल्लादीन तानपूरा लाकर तानसेन को देता है। तानसेन तानपूरे के तारों के स्वर मिलाते हैं और गाते हैं।)

हित तौ कीजै कमल नैन सौं,

जा हित के आगे और हित लागै फीकौ।

(स्वामी हरिदास और पूरी सभा झूमने लगती है। अचानक हरिदास के चेहरे के भाव बदलते हैं।)

स्वामी हरिदास : *(कुछ आवेश में)* बस करो तानसेन तुम्हें क्या हो गया? राग आसावरी गाने में भी कोमल-कठोर का अंतर भूल गए। इधर लाओ तानपूरा। *(तानसेन विनम्रता से उठकर तानपूरा देते हैं। स्वामी आँखें बंद करके मधुर लय में वही राग सुनाते हैं।)*

हित तौ कीजै कमल नैन सौं;

जा हित के आगे और हित लागै फीकौ।

के हित कीजै साधु संगति सौं; जावे कलमष जी को।।

हरि को हित ऐसो जैसो रंग मजीठ,

संसार हित कसूंभि दिन दुई को।

कहि 'हरिदास' हित कीजै बिहारी सौं,

और न निबाहु जानि जी को।।

(श्रोता-दर्शक झूम उठते हैं। राग बंद होता है। स्वामी आँखें खोलते हैं। तानपूरा तख्त पर रखते हैं।)

स्वामी हरिदास : तानसेन, ऐसे गाई जाती है आसावरी, समझे?

तानसेन : जी.... जी! गुरुदेव! *(अकबर को आँखों से संकेत करते हैं, हरिदास देख लेते हैं।)*

स्वामी हरिदास : अच्छा तानसेन। अपने सम्राट को सेवक बनाकर लाए हो। खूब नाटक किया है।

तानसेन : *(घबराकर)* जी, क्षमा करें गुरुदेव। आपने कैसे पहचाना?

स्वामी हरिदास : तुम्हारी आँखों के संकेत से। तुम्हारे संकेत सेवक के से लग रहे थे और तुम्हारे 'सेवक' के संकेत सम्राट के से। *(अकबर उठकर आता है और स्वामी जी के सामने विनम्र खड़ा हो जाता है। स्वामी जी आशीर्वाद देते हैं।)*

अकबर : माफ़ करें स्वामी जी! आपका संगीत सुनने का मौका और किसी तरीके से मिलना मुश्किल था। तानसेन को भी क्षमा कर दें। यह हमारी ही ज़िद थी।

स्वामी हरिदास : सम्राट! अच्छा है, आप संगीत का सम्मान करते हैं।

अकबर : स्वामी जी, हम इस हिंदुस्तान के सभी रीति-रिवाज़ों और कलाओं की इज़्ज़त करते हैं। उन्हें ऊँचा दर्ज़ा देते हैं। हमें नाज़ हैं हिंदुस्तान पर। हम इस पाक ज़मीन को सलाम करते हैं।

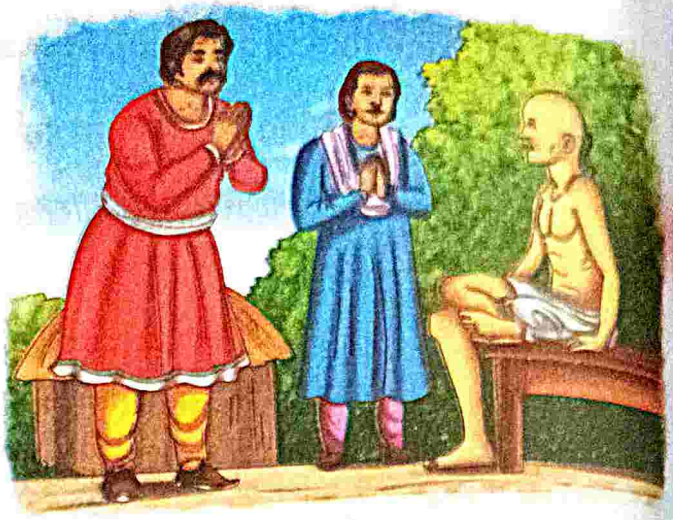

स्वामी हरिदास : आप बहुत अच्छा करते हैं सम्राट! अल्लादीन, मोहन से कहो सम्राट और तानसेन को मिसरी का प्रसाद लाकर दें और उन्हें आदर से विदा करें।

(स्वामी जी अपनी कुटिया में चले जाते हैं।)

अकबर : सचमुच, स्वामी हरिदास संगीत स्वामी हैं। उनका संगीत सुनकर दिल बाग-बाग हो गया। तानसेन, तुम्हारा गायन भी कोई कम नहीं है। लेकिन स्वामी जी के गायन का तो जवाब ही नहीं।

तानसेन : जहाँपनाह, स्वामी जी के संगीत और मेरे गायन की क्या तुलना! वे तो संसार के स्वामी को रिझाने के लिए गाते हैं और मैं हिंदुस्तान के शहंशाह की खुशी के लिए गाता हूँ। *(मोहन, सम्राट अकबर और तानसेन को पीपल के पत्ते पर प्रसाद देता है। वे प्रसाद को आदर से लेते हैं और चले आते हैं।)*

(लोक-संगीत की धुन पर नट-नटी नाचते हुए आते हैं।)

नट : अब बोल मेरी नटखट नटी, तुम हो बहुत हठी। दर्शकों को नमस्कार करो और परदा गिराओ।

नटी : नमस्कार भी करती हूँ। परदा भी गिरेगा, लेकिन एक बात कहती हूँ। दर्शक भाइयो और बहनो! अगर संगीत सम्राट बनना हो, तो लोगों को रिझाने के लिए गाओ। अगर संगीत-स्वामी बनना हो, तो परमेश्वर को रिझाने के लिए संगीत की साधना करो।

(हरिदास के पद का अनुकरण करती हुई गाती है- हित तौ कीजै कमल नैन सौं.....।

(धीरे-धीरे परदा गिरता है।)

—जयपाल 'तानसेन'

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि किसी की गुलामी करने से अच्छा आज़ाद रहना है क्योंकि आज़ादी में हम अपनी इच्छानुसार कार्य करते हैं।

शब्दार्थ

शैली - ढंग; उस्ताद - गुरु; अवसर - मौका; प्रतीक्षा - इंतजार; प्रसन्नता - खुशी; बंदिश - धुन; नैन - नयन; मजीठ - लाल रंग; पाक - पवित्र; परमेश्वर - ईश्वर; रिझाने - खुश करने।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) नट के अनुसार हिंदुस्तानी संगीत किसे कहते हैं?

(ख) कर्नाटक संगीत किसे कहते हैं?

(ग) स्वामी हरिदास ने किसकी गायकी की प्रशंसा आश्रम में सुनी थी?

(घ) किसने अकबर के महल में आने से साफ़ इंकार कर दिया?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) अकबर को भारत की हर कला से–

(अ) चिढ़ थी ⬡ (ब) प्रेम था ⬡

(स) ईर्ष्या थी ⬡ (द) द्वेष था ⬡

(ख) अकबर ने कहा कि वह भारत की पाक ज़मीन को–

(अ) सलाम करता है ⬡ (ब) ठोकर मारता है ⬡

(स) रौंद डालेगा ⬡ (द) लूट लेगा ⬡

(ग) स्वामी हरिदास ने अकबर के लिए मँगाया–

(अ) ठंडा पानी ⬡ (ब) मिसरी का प्रसाद ⬡

(स) मेवा ⬡ (द) शर्बत ⬡

(घ) नटी ने संगीत सम्राट बनने के लिए सुझाव दिया–

(अ) लोगों को रिझाओ ⬡ (ब) रात को अभ्यास करो ⬡

(स) परमेश्वर को रिझाओ ⬡ (द) रात-दिन अभ्यास करो ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) अकबर ने तानसेन के समक्ष क्या इच्छा व्यक्त की?

(ख) अकबर की इच्छा पूरी करने के लिए तानसेन ने क्या किया?

(ग) तानसेन ने अपनी प्रशंसा सुनकर गुरु जी से क्या कहा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) एकांकी का सार-संक्षेप लिखिए।

(ख) एकांकी में क्या प्रेरणा दी गई है?

भाषा-ज्ञान

1. उचित कारक चिह्नों के द्वारा वाक्य पूरे कीजिए

(क) महल _____ बादशाह पधारे।

(ख) उन्होंने तानसेन _____ बुलाया।

(ग) तानसेन ने हरिदास जी _____ दीक्षा ली थी।

(घ) अकबर तानसेन _____ गुरु के प्रति निष्ठा देखकर दंग रह गए।

2. उर्दू शब्दों का हिंदी समानार्थी शब्दों से मेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) मौका	(i) स्वीकार
(ख) मंजूर	(ii) अस्वीकार
(ग) इंकार	(iii) मंगल कामना
(घ) दुआ	(iv) संकेत
(ङ) इशारा	(v) अवसर

3. सही कॉलम में रखिए

तानपूरा, मिसरी, संगीत, बंदिश, सलाम, गायन, खुशी, प्रतीक्षा, तख्त, आसन, प्राण

स्त्रीलिंग	_____	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____	_____
पुल्लिंग	_____	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____	_____

रचना के क्षण

- *भाव-भूमि–* संगीत रचना करते समय संगीतज्ञ के मन में कैसे भाव उठते होंगे? क्या आपने कभी कोई गीत-संगीत की प्रस्तुति दी है, तब आपको कैसा अनुभव हुआ, बताइए।

कल्पना व चिंतन

- जब संगीतज्ञ अपनी रचना में खो जाता है तो उसे कितने आनंद की प्राप्ति होती होगी, कल्पना कीजिए। यदि जीवन में गीत-संगीत न रहे, तो जीवन कैसा होगा? बताइए।

क्रिया-कलाप

- इस नाटिका का विद्यालय मंच पर मंचन कीजिए।
- कुछ वाद्यों और कुछ नृत्यों के विषय में जानकारी दीजिए।

वाद्य	नृत्य
(क) _____	(क) _____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
(ख) _____	(ख) _____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

अध्याय

17. वीर अब्दुल हमीद

देश की आन पर बलिदान हो जाने वाले शहीदों की एक लंबी शृंखला है। उन्हीं में एक थे वीर अब्दुल हमीद। लेखक ने उन्हें याद करते हुए यह भाव-भीनी श्रद्धांजलि संस्मरण के रूप में दी है।

मेरे वतन में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई अलग-अलग कितने हैं यह तो मैं नहीं जानता, परंतु यह मैं अवश्य जानता हूँ कि मेरे देश में सौ करोड़ हिंदुस्तानी बसते हैं, आज मैं उन्हीं हिंदुस्तानियों में से एक ही कहानी सुनाना चाहता हूँ। उसका नाम अब्दुल हमीद था। वह एक मामूली हिंदुस्तानी किसान था।

वह पढ़ा-लिखा नहीं था, परंतु वह धान की नाचती हुई हरियाली और पके हुए गेहूँ के सोने और भुट्टे के मोतियों और गन्ने की रसीली लचक, मटर के कासनी फूलों और सरसों की पीली चुनरी और बरसात की पहली छींटों और मिट्टी की ताज़ी सोंधी खुशबू पर गुनगुनाना जानता था।

मैं भी गाज़ीपुर का हूँ और केवल यह कहना चाहता हूँ कि अब गाज़ीपुर का होना एक गौरव की बात है। आज हिंदुस्तान की हर बस्ती सोच रही है कि काश, अब्दुल हमीद उसका बेटा रहा होता। मैं यह नहीं कहता कि वह

मेरे गाज़ीपुर का था। मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं उसके गाज़ीपुर का हूँ। मैंने गाज़ीपुर को क्या दिया है? उसने गाज़ीपुर को 'परमवीर चक्र' दिया है।

उसने अपने बेटों, अपनी बेटी के लिए सौगात न भेजी, परंतु उसने गाज़ीपुर को एक बड़ी सौगात भेजी 'परमवीर चक्र'। अब्दुल हमीद के त्याग से गाज़ीपुर धन्य हो गया।

इस वक्त मेरी मेज से एक पोस्टकार्ड मेरी तरफ़ लगातार देखे जा रहा है। यह एक पिक्चर पोस्टकार्ड है। जिस पर एक छोटा-सा संदेश है। संदेश यह है-

प्रिय राही,

हम अमन चाहने वालों को यह लड़ाई बुरी लग रही थी, जो हम पर थोप दी गई थी। हवलदार अब्दुल हमीद शहीद हुआ तो लगा, यह खूनों का संगम कितना पवित्र बन गया है। मैं किसे बधाई देता और किससे अपना दुख कहता। गुलाबों की सरज़मीन पर यह कितना हसीन गुलाब खिला। किसे खत लिखता? उनके घर का पता ही नहीं मालूम। फिर याद आया कि तुम तो घरेलू ही हो उनके..... गाज़ीपुर इस शहीद के लिए तुम्हारे सिवा किसे बधाई दूँ.... और किसे शोक प्रकट करूँ.....।

देश-सेवा के लिए किसी जाति या धर्म विशेष का कोई अलग कर्तव्य नहीं। इसके लिए ज़रूरी है कि दिल में देश प्रेम की भावना का होना। इस प्रकार की भावना रखने वाले वीर शहीदों को हम शत्-शत् नमन करते हैं।

यह खत पढ़कर मेरा रोम-रोम अब्दुल हमीद के एहतराम में खड़ा हो गया। मैं सोच रहा हूँ कि आखिर इस नाम में ऐसा कौन सा जादू है कि आज हिंदुस्तान का हर आदमी उसे एक मीठी चीज़ की तरह अपनी ज़ुबान पर फिरा रहा है। बात यह है कि अब्दुल हमीद के आत्म-बलिदान ने यह साबित कर दिया है कि कौमों की बुनियाद मजहब पर नहीं होती। कौम ज़मीन पर दूब की तरह उगती है और बरगद की तरह सरबुलंद होती है। धर्म तो वस्त्र है, हिंदुस्तान के मुसलमान, हिंदुस्तान के एक अंग हैं, उनका मजहब कौमी एकता में बाधक नहीं हो सकता। अब्दुल हमीद हिंदुस्तानी किसान और हिंदुस्तानी मुसलमान का प्रतीक है। पाकिस्तान की इस्लामी सेना भारतीय मुसलमानों को हिंदुओं से अलग नहीं कर सकती थी। अब्दुल हमीद ने अपने खून से अपने देश के कई हिंदुओं और मुसलमानों की अटूट अभिन्नता को उजागर कर दिया।

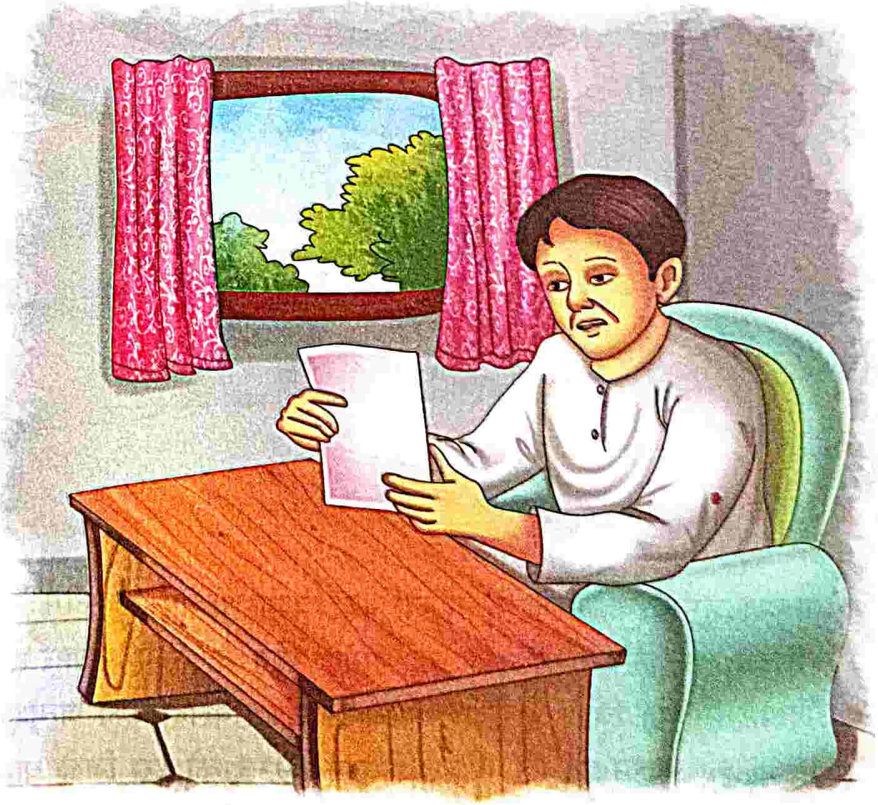

अब्दुल हमीद के मरने से पहले धामपुर (अब्दुल हमीद का जन्मस्थान) की कोई हैसियत नहीं थी। गाज़ीपुर से आज़मगढ़ की तरफ जो पक्की सड़क जाती है, उस पर बारह-तेरह मील के बाद सड़क से डेढ़-दो मील हटकर यह छोटा-सा गाँव न जाने कब बसा या बसाया गया था। यदि आपने पूर्वी उत्तर प्रदेश का कोई छोटा गाँव देखा है, तो उसका नाम बदलकर धामपुर रख लीजिए। काम चल जाएगा। धामपुर यहीं हो सकता है। यही का रहने वाला था वीर अब्दुल हमीद। जिसका नाम लेते ही धामपुर से हज़ारों मील दूर अपने देश की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर जम्मू में पाकिस्तान सेना से घमासान लड़ाई का नज़ारा आँखों के सामने नाच उठता है।

17 सिंतबर, सन् 1966 अब्दुल हमीद ने भारतीय सीमा की रक्षा के लिए, अपने देश की इज़्ज़त रखने के लिए और पाकिस्तानी हमलावर उसके देश की धरती पर अपना पाँव न जमा सके, इसके लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी। वह इस मिट्टी का सच्चा बेटा था और कोई बेटा अपनी माँ की बेइज़्ज़ती नहीं सह सकता। खुशनसीब है वह माँ बकरीदन, जिसने शान से मरने वाले तथा अपने देश के लिए कुरबान हो जाने वाले बेटे अब्दुल हमीद को जन्म दिया। बकरीद बलिदान का त्योहार है। बकरीदन के बेटे ने अपनी माँ और अपनी माँ के नाम की इज़्ज़त रख ली।

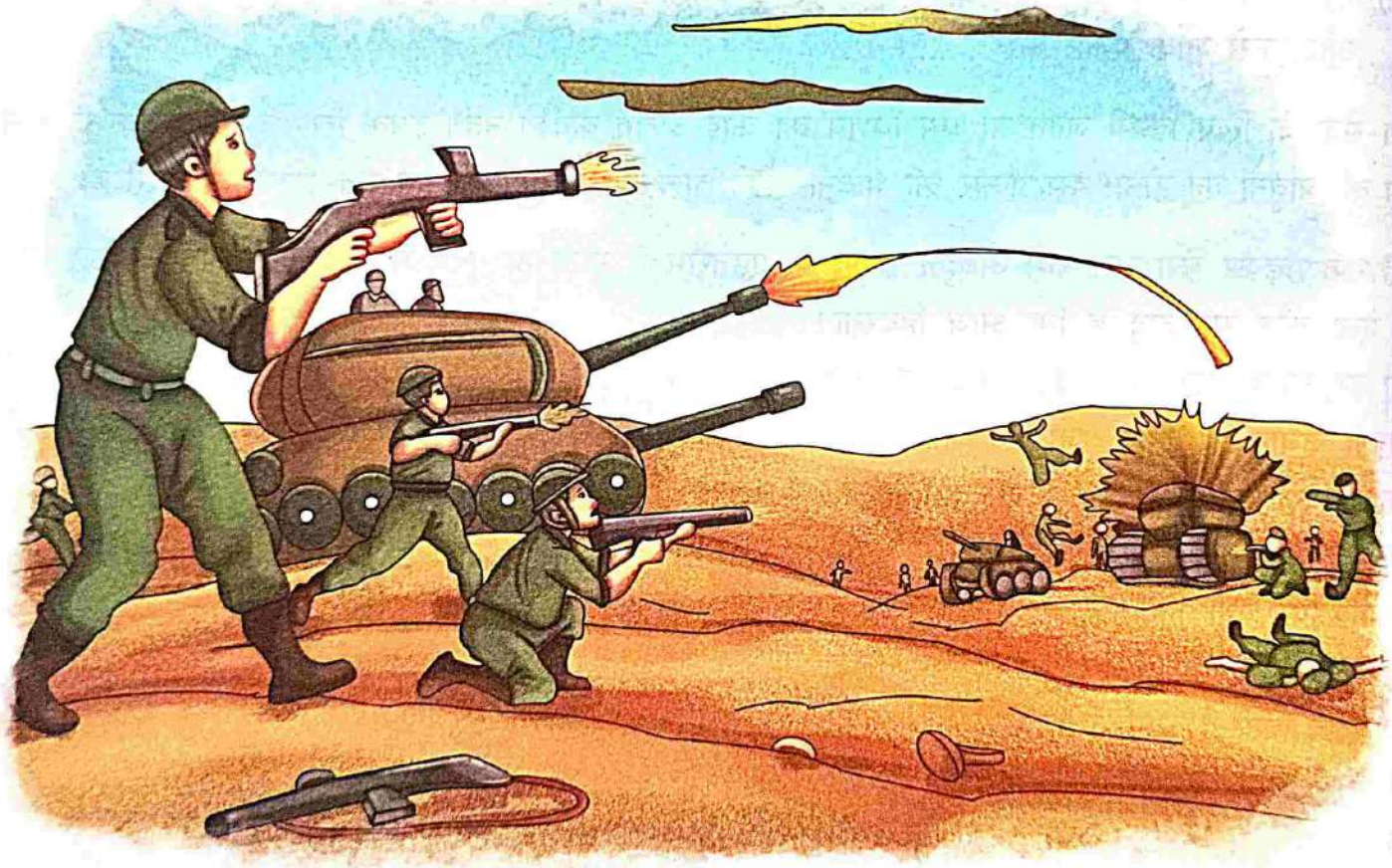

अब्दुल हमीद के मरने के पहले यह जिला गाज़ीपुर अफीम की खेती, केवड़ा और गुलाब जल के लिए ही प्रसिद्ध था, लेकिन अब तो यह हमीद रक्त के लिए मशहूर हो गया है। यह खून इस जिले की सबसे बड़ी पैदावार है। यह जिला परमवीर कंपनी क्वार्टर हवलदार की जन्मभूमि अवश्य है। हाँ, ये बातें हमें 17 सितंबर, सन् 1965 की मालूम हुई कि 1 जुलाई, सन् 1933 को इस जिले धामपुर गाँव में उस्मान खाँ दर्जी के घर एक बच्चा पैदा हुआ था और उसका मुंडन अब्दुल हमीद के नाम पर हुआ था । पर लगता है कि वास्तव में अब्दुल हमीद 17 सिंतबर, सन् 1965 को ही रणभूमि के कसूर क्षेत्र में पैदा हुआ। अब्दुल हमीद ने अपनी जान देकर भारत

और पाकिस्तान के बँटवारे वाली दो कौमों के नज़रिए की ईंट-से-ईंट बजा दी। जो धर्म को ही कौम का आधार मानते हैं, वे पागल नहीं तो क्या हैं? उन्हें कौन समझाए कि कौम का धर्म से कोई संबंध नहीं होता। हिंदुस्तान का हर नागरिक हिंदुस्तानी है, चाहे वह सिख हो या ईसाई, मुसलमान हो या ब्रह्म समाजी।

यह 'परमवीर चक्र' हवलदार अब्दुल हमीद को ही नहीं मिला, यह भारतीय सेना की इकाई और भारत और एकता को लिया। यह 'परमवीर चक्र' मिला है, हिंदुस्तान जैसे महान देश की महान जनता को।

बचपन से अब्दुल हमीद की तमन्ना एक बहादुर सिपाही बनने की थी। वह अपनी दादी से कहा करता था कि "मैं फौज़ में भर्ती होऊँगा।" दादी जब मना करती और कहती कि बाप की सिलाई चलाओ तो वह कहता कि "हम जाइब फौज़ में। तोहार रोके न रूकाइब हम। समझलू। बड़े आइल बाड़ी मसीन चलवाने वाली।" दादी को उसकी ज़िद के आगे झुकना पड़ता और कहना पड़ता कि "अच्छा-अच्छा जइहा फौज़ में।" हमीद खुश हो जाता। इसी तरह वह अपने पिता से भी फौज़ में भर्ती होने के कारण उलझता रहता और कपड़ा सीने के धंधे से मुकर जाता। खेलकूद में वह बहुत ही तेज़-तर्रार था। कबड्डी खेलने में तो गाँव में उसका कोई सानी नहीं था। उसके पिता उस्मान खेल में अपने बेटे की फुर्ती और कलाबाजी पर फूले नहीं समाते।

अब्दुल हमीद ने कक्षा चार के बाद पढ़ना छोड़ दिया और वह खेल-कूद, कुश्ती में रमा रहता। किसी तरह सिलाई का काम तो सीख लिया, पर उसमें उसका मन नहीं लगता था। वह तो फौज़ में जाने को उतावला था। फौज़ में जाने के लिए फुर्तीले बदन की जरूरत होती है। इसलिए कबड्डी और कुश्ती में उसका जी खूब लगता। उसे पहलवानी तो विरासत में मिली थी। उसके पिता और नाना दोनों ही पहलवान थे। वह तड़के ही कंधे पर लँगोट डालकर अखाड़े में पहुँच जाता। दंड-बैठक मारता। अखाड़े की मिट्टी बदन में मलता और दाँव सीखता। शाम को लकड़ी सीखता और रात को नींद में फौज़ और जंग के सपने देखता। यह देखता कि उसके हाथ में बारह बोर वाली एक दुनाली बंदूक है। वह ख्वाब में ही दुश्मनों को भून डालता और जब लाम पर से लौटता, तो सारा धामपुर ढोल-तासे के साथ उसका स्वागत करने आता। अपने इसी स्वप्न को पूरा करने के ख्याल से हमीद 22 दिसंबर, सन् 1954 को बनारस जाकर फौज़ में भर्ती हो गया। पहली ही परेड में हवलदार ने सवाल किया, "जवान, क्या तुमने परेड सीखी है?" "नहीं", जवान ने जवाब दिया। सिपाही अब्दुल हमीद इस जवान का नाम था।

"फिर तुम्हारे पैर ठीक क्यों पड़ते है?" सवाल हुआ। "हम लकड़ी सीखते हैं।", जवान ने जवाब दिया। परेड करवाने वाले हवलदार की बाज़ी मात हो गई। उस्ताद परेड के मैदान से निकलकर शागिर्द बन गया और शागिर्द उस्ताद। वह अपने साथियों को भी लकड़ी सिखाता। निशाना लगाने में तो उसे महारथ हासिल थी। वह उड़ती चिड़िया को भी आसानी से मार गिराता। उसके सभी साथी उसकी फुर्ती, बहादुरी और सधे हुए निशाने की तारीफ़ करते नहीं अघाते। फिर उसकी मिलनसार शख्सियत और दोस्ताना व्यवहार भी सभी साथियों का मन मोह लेता।

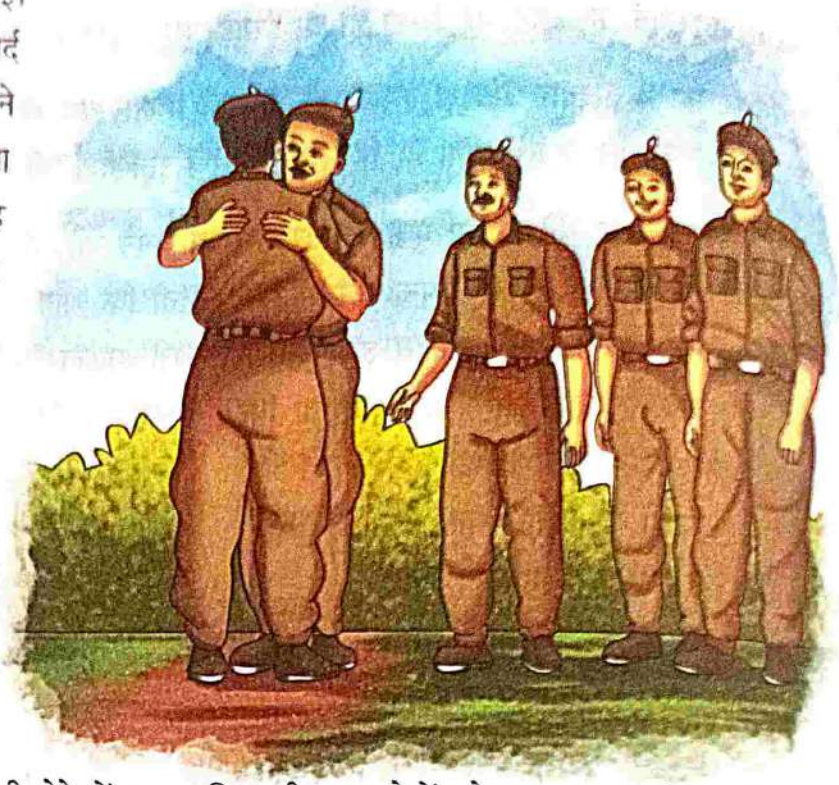

अब्दुल हमीद को अपना रण-कौशल दिखाने का मौका जल्दी ही मिल गया। सन् 1962 में हमारे देश पर चीन का हमला हुआ। हमारे जवानों का एक जत्था चीनी घेरे में था। हामिद भी था। लोगों को क्या मालूम कि यह साँवला-सलोना जवान वीर ही नहीं, परमवीर था।

यह तो उसकी पहली अग्नि परीक्षा थी। लोगों ने देखा, उसमें अपार साहस था। वह मौत और शिकस्त के मुकाबले डटा हुआ था। साथी एक-एक करके कम होते जा रहे थे। उसके बदन से खून के फव्वारे छूट रहे थेए पर उसके मन में कोई कमज़ोरी नहीं आई। न पिता की, न माँ की, न बीबी की और न बेटे की। न गाँव की, न घर की। हमीद न बाप था, न पति, वह तो एक सैनिक था, असली हिंदुस्तानी सैनिक। वह हिंदुस्तानी बहादुरी की परंपरा का प्रतीक था। उसकी मशीनगन आग उगलती रही, उसके गोले खत्म होते गए। अब वह क्या करे? क्या वह हथियार डाल दे या मैदान छोड़कर, दूसरे मैदान में जाकर लड़े? उसने मशीनगन तोड़ डाली और फिर वह बर्फ़पोश पहाड़ियों में एक परछाई की तरह सरक गया।

वह कंकरीली-पथरीली ज़मीन पर, जंगल और झाड़ियों के बीच, भूखा-प्यासा चलता रहा, चलता रहा और एक दिन उसे एक बस्ती दिखाई दी। वह थोड़ी देर के लिए ताज़ादम हुआ, मगर बस्ती में दाखिल होते ही बेहोश हो गया। यह तेजपुर था। इस मोर्चे की बहादुरी ने जवान अब्दुल हमीद को लांसनायक अब्दुल हमीद बना दिया। यह तारीख थी 12 मार्च, सन 1962; इसके बाद तो दो-तीन वर्षों में ही हमीद को नायक, हवलदारी और कंपनी क्वार्टर मास्टरी भी हासिल हुई।

जब सन् 1965 में पाकिस्तान ने देश पर हमला किया तो अब्दुल हमीद का खून खौल उठा। शायद पाकिस्तान यह समझता था कि भारत के मुसलमान पाकिस्तानी आक्रमणकारियों का खुला विरोध न करेंगे, पर उनका यह समझना कोरा भ्रम था। भारत के मुसलमानों को भी अपने देश पर उतना ही गर्व था, जितना कि हिंदुओं को। हिंदू-मुस्लिम

दोनों ही जान हथेली पर लेकर रणभूमि की ओर लपके। जिन लोगों के मन के मुसलमानों के प्रति शंका थी, अब्दुल हमीद की कुर्बानी ने उस शंका को निर्मूल सिद्ध कर दिया और साथ ही यह भी सिद्ध कर दिया कि देश पहले है, धर्म पीछे।

17 सितंबर, सन् 1965 कसूर का क्षेत्र। घमासान लड़ाई छिड़ी हुई थी। पाकिस्तान को अपनी मँगनी के पैटन टैंकों पर बड़ा नाज़ था। इन दैत्याकार फौलादी टैंकों द्वारा सब कुछ रौंदते हुए भारतीय सीमा में घुस आने का उनका हौसला बुलंदी पर था। पर यह हौसला भारतीय वीरों के सामने पस्त पड़ता गया। यहाँ एक मोर्चे पर हमीद ने अपने साथियों को ललकारा, "आगे बढ़ो।" वह आगे खुद बढ़ा। उसने देखा, दुश्मन सिर से पैर तक लोहे का है। उसकी 'ऐंटी टैंक' बंदूक ने आग उगलनी शुरू कर दी। हमीद का निशाना तो अचूक था ही।

लोहे का एक दैत्य गिरा, दूसरा गिरा, तीसरा गिरा। "आगे बढ़ो। हमीद ने ज़ोर से नारा लगाया। क्षणभर में ही तीन-तीन टैंक बरबाद हो गए। पाकिस्तानी हमलावरों को मुँह की खानी पड़ी। उस समय हमीद में न जाने कौन सी अद्भुत शक्ति भर गई थी। वह अपने प्राण हथेली पर रखकर हमला करता जा रहा था। देखते-देखते उसने तीन-तीन टैंक धराशायी कर दिए। इसी वक्त कोई चीज़ उसके सीने से टकराई। उसे दर्द का कोई अहसास नहीं हुआ। उसने यह ज़रूर देखा कि हर तरफ़ अँधेरा रेंगता बढ़ा चला जा रहा है। उसने फिर "आगे बढ़ो" कहना चाहा, मगर उसने देखा, होठों से शब्द निकलने की ताकत नहीं रह गई है। इसलिए उसने एक ऐसा शब्द निकाला, जिसमें होंठों की ज़रूरत नहीं होती - अल्लाह! यह शब्द गूँजा, इतना गूँजा कि रणभूमि की आवाज़ें दब गईं और फिर हर तरफ सन्नाटा छा गया - एक अथाह सन्नाटा, एक अनंत सन्नाटा.....।

बरसों से यहीं एक ख्वाब उसका पीछा कर रहा था- वतन के लिए मरना यह कार्य उसके लिए हँसी-खेल था और उसका यह ख्वाब पूरा हुआ। वह धर्म से मुसलमान था; पर वतन का रिश्ता खून और धर्म के रिश्ते से ज़्यादा मजबूत होता है। धर्म हमें नहीं बाँट सकता। सभी हिंदुस्तानी एक हैं, चाहे वह किसी भी मज़हब के क्यों न हों। हमीद की कुर्बानी इसकी जीती-जागती मिसाल है।

—राही मासूम रज़ा

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों को स्पष्ट करें कि पवित्र भावों का जीवन को ऊँचा उठाने में कितना अधिक महत्व है, महान पुरुषों के उदाहरण देकर इस बात की पुष्टि करें।

शब्दार्थ

वतन - देश; सौगात - उपहार; पिक्चर - चित्र; हसीन - सुंदर; शोक - दुख; एहतराम - स्वागत; साबित करना - प्रमाणित करना; दूब - घास; कौम - जाति; घमासान - भयानक; कुरबान होना - बलिदान देना; रणभूमि - युद्ध भूमि; तमन्ना - तीव्र इच्छा; मुकरना - मना कर देना; सानी - बराबरी; रमा रहना - लीन रहना; ख्वाब - स्वप्न; शागिर्द - शिष्य; बर्फ़पोश - बर्फ से ढकी।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) गाज़ीपुर का होने में लेखक क्यों गर्व अनुभव करता है?

(ख) लेखक ने धर्म की तुलना किससे की है?

(ग) अब्दुल हमीद की दादी उसे कौन सा काम सीखने को कहती थी?

(घ) अब्दुल हमीद की बचपन से ही क्या इच्छा थी?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) अब्दुल हमीद का मन लगता था-

(अ) पढ़ाई में ⬡ (ब) सिलाई में ⬡

(स) बागवानी में ⬡ (द) खेलकूद और कुश्ती में ⬡

(ख) हमीद सबसे पहले फौज़ में भरती हुआ-

(अ) कलकत्ता जाकर ⬡ (ब) बनारस जाकर ⬡

(स) फिरोजपुर जाकर ⬡ (द) पटियाला जाकर ⬡

(ग) अब्दुल हमीद ने सबका मन मोह लिया-

(अ) अपने मिलनसार स्वभाव से ⬡ (ब) अपनी वर्दी से ⬡

(स) अपनी खूबसूरती से ⬡ (द) अपनी शिक्षा से ⬡

(घ) हमीद ने दुश्मन के टैंक गिराए-

(अ) एक ⬡ (ब) दो ⬡

(स) तीन ⬡ (द) चार ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बचपन में हमीद प्रायः क्या स्वप्न देखता था?

(ख) हमीद अपनी इच्छा दादी को किन शब्दों में बताता था?

(ग) मृत्यु के समय हमीद के मुँह से क्या शब्द निकला?

(घ) हमीद ने क्या मिसाल कायम की?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) 'वह धर्म से मुसलमान था, पर वतन का रिश्ता खून और धर्म के रिश्ते से ज़्यादा मज़बूत होता है।'

(ख) 'लोगों ने देखा कि उसमें अपार साहस था। वह मौत और शिकस्त के मुकाबले डटा हुआ था। साथी एक-एक करके कम होते जा रहे थे। उसके बदन से खून के फव्वारे छूट रहे थे, पर उसके मन में कोई कमज़ोरी नहीं आई।'

भाषा-ज्ञान

1. समानार्थक शब्दों के जोड़े बनाकर लिखिए

हिंदुस्तानी, बेइज़्ज़ती, भाग्यशाली, मशहूर, ज्ञात, अपमान, मालूम, खुशनसीब, भारतीय, प्रसिद्ध

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

_____ _____

2. सही स्थान पर विराम चिह्न लगाइए

ओह तो आप भी गाज़ीपुर के हैं आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई यहाँ के एक जवान ने अपना तन मन जीवन देश के नाम कर दिया था क्या आप उसका नाम जानते हैं

3. उचित कारक चिह्न भरकर वाक्य पूरे कीजिए

(क) देश _____ कुर्बान होने वाले कभी भुलाए नहीं जा सकते।

(ख) उनका नाम स्वर्ण अक्षरों _____ लिखा जाएगा।

(ग) वीरों _____ परमवीर चक्र मिलता है।

(घ) अब्दुल हमीद _____ देश का नाम ऊँचा किया।

रचना के क्षण

भाव-भूमि– देश के प्रति अपने उद्‌गार एक अनुच्छेद लिखकर व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- यदि आज भी देश परतंत्र होता, तो कैसा वातावरण होता, कल्पना से वर्णन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- महान देशभक्तों की जीवनियाँ ढूँढ़कर पढ़िए।
- अब्दुल हमीद के समान किसी दूसरे वीर सैनिक के बारे में पता कीजिए, जिसने देश की रक्षा में अपने जीवन का बलिदान किया हो। उसके बारे में एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए-

पूर्व मध्यावधि प्रश्न-पत्र

पाठ 1 से 5 पर आधारित

बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) सृष्टि पवित्र मन वालों के कारण ही लगती है–

(अ) भयानक ⬡ (ब) मनभावन ⬡

(स) सूक्ष्म ⬡ (द) विस्तृत ⬡

(ख) पत्र पाकर बुआ जी–

(अ) रो पड़ीं ⬡ (ब) बेहोश हो गईं ⬡

(स) खुश हो गईं ⬡ (द) गाने लगीं ⬡

(ग) हज़ारों वर्ष पूर्व मनुष्य ने तय किया कि वह–

(अ) पूजा करेगा ⬡ (ब) दरिद्र नहीं रहेगा ⬡

(स) दीप जलाता रहेगा ⬡ (द) विश्व में शांति फैलाएगा ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पहाड़ पर जाते समय बुआ जी ने अपने पति को क्या-क्या हिदायतें दीं?

(ख) समाज आज किस अभिशाप से मुक्ति चाहता है?

(ग) किसके तट पर तरबूज़ों की खेती कवि को सुंदर लगती है?

(घ) ग्राम जन मन को किस प्रकार हरता है?

(ङ) हम स्वयं को चोट से कैसे बचा सकते हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पवित्र हृदय वालों के किन लक्षणों का उल्लेख कविता में किया गया है?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए– "संसार की माया से मोह रखना दुख का मूल है।"

(ग) लेखक के अनुसार दीपावली क्या संदेश लेकर आ रही है?

(घ) मनुष्य की सदा से क्या इच्छा रही है और उसके लिए कौन से प्रयत्न किए जाने की बात लेखक ने कही है?

(ङ) 'ग्राम-शोभा' कविता का उद्देश्य क्या है?

4. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए

(क) राजन _____ (ख) गायन _____

(ग) उदार _____ (घ) जुटते _____

(ङ) दूर _____

5. वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए

(क) शासन करने वाला _____

(ख) दया करने वाला _____

(ग) अत्याचार करने वाला _____

(घ) कृपा करने वाला _____

(ङ) काम में निष्ठा रखने वाला _____

(च) काम से जी चुराने वाला _____

6. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) नश्वर	(i) अमंगल
(ख) मंगल	(ii) विस्तृत
(ग) संकुचित	(iii) समृद्धि
(घ) व्यक्तिगत	(iv) अमर
(ङ) दरिद्रता	(v) सामूहिक

7. निम्नलिखित शब्दों का उनके समानार्थी शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) छोटे	(i) वाटिका
(ख) बगिया	(ii) पुष्प
(ग) दल	(iii) काया
(घ) फूल	(iv) लघु
(ङ) तन	(v) समूह

8. निम्नलिखित शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए

(क) आत्मनिरीक्षण _____ + _____

(ख) निराशावादी _____ + _____

(ग) असफलता _____ + _____

(घ) निःस्वार्थ _____ + _____

(ङ) विरोधाभास _____ + _____

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) हमेशा बची रहेगी–

(अ) धरती ⬡ (ब) मानवता ⬡

(स) हरियाली ⬡ (द) सामूहिक मंगलेच्छा ⬡

(ख) भारत के लोग संस्कृति के मामले में रहे हैं–

(अ) संकीर्ण ⬡ (ब) बदकिस्मत ⬡

(स) उदार ⬡ (द) विचित्र ⬡

(ग) लद्दाख में होने वाली एकमात्र फसल है–

(अ) गन्ने की ⬡ (ब) गेहूँ की ⬡

(स) जौ की ⬡ (द) बाजरे की ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पत्र का अंतिम भाग सुनकर बुआ जी पर क्या प्रभाव हुआ?

(ख) किसके तट पर तरबूज़ों की खेती कवि को सुंदर लगती है?

(ग) भारतीय संस्कृति में नई ताज़गी कब-कब आई?

(घ) झूठ के कौन-कौन से रूप हैं?

(ङ) हमें कब कर्तव्यपालन में कुछ भी कष्ट न होगा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय स्पष्ट कीजिए–'राजमुकुट पुराने हो जाएँगे, मठ ढह जाएँगे, बची रहेगी मनुष्य की सामूहिक मंगलेच्छा।'

(ख) भारतीय संस्कृति में बुद्ध और महावीर का क्या योगदान रहा है?

(ग) नवान सांगे का नाम क्यों प्रसिद्ध है? उनकी उपलब्धि बताइए।

(घ) गुण न होने पर भी स्वयं को गुणवान के रूप में दिखाने का क्या परिणाम होता है?

(ङ) हमें सच क्यों बोलना चाहिए?

4. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए

(क) भीख माँगने वाला _____ (ख) व्यापार करने वाला _____

(ग) सौदा करने वाला _____ (घ) लिखने वाला _____

(ङ) दान देने वाला _____ (च) पढ़ने वाला _____

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए

(क) लेखक बड़ी विद्वान है।

(ख) लोग सभ्यता के पीछे दौड़ रही है।

(ग) केवल धन सुख नहीं दे सकती।

(घ) संस्कृति मनुष्य का असली पहचान है।

6. अर्थ लिखकर अंतर स्पष्ट कीजिए-

(क) और _____

(ख) कुल _____

(ग) तक _____

(घ) कमल _____

और _____

कूल _____

ताक _____

कमाल _____

7. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) स्वार्थी _____

(ख) लज्जित _____

(ग) कुत्सित _____

(घ) निंदित _____

8. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए

(क) आसमान _____ _____ _____

(ख) घोड़ा _____ _____ _____

(ग) सिंह _____ _____ _____

(घ) हाथी _____ _____ _____

(ङ) भू _____ _____ _____

9. निम्नलिखित शब्दों को उनके उलटे (विलोम) अर्थ वाले शब्दों से मिलाइए-

(क) निर्बल

(ख) वीर

(ग) विजय

(घ) प्रत्यक्ष

(ङ) सफल

(i) कायर

(ii) अप्रत्यक्ष

(iii) सबल

(iv) असफल

(v) पराजय

उत्तर मध्यावधि प्रश्न-पत्र

पाठ 1 से 17 पर आधारित

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) कवि को गेहूँ की बालों पर हिमकन लगते हैं–

(अ) अंगारों जैसे ⬡ (ब) मोती जैसे ⬡

(स) फूलों जैसे ⬡ (द) हीरों जैसे ⬡

(ख) सांप्रदायिकता की आग भड़कने पर मौलवी साहब–

(अ) भाग निकले ⬡ (ब) डर गए ⬡

(स) रोने लगे ⬡ (द) पर रत्ती भर भी प्रभाव ⬡

(ग) स्वामी हरिदास ने अकबर के लिए मँगाया–

(अ) ठंडा पानी ⬡ (ब) मिसरी का प्रसाद ⬡

(स) मेवा ⬡ (द) शर्बत ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) हम स्वयं को चोट से कैसे बचा सकते हैं?

(ख) संस्कृति और सभ्यता में क्या अंतर है?

(ग) नाक हीटर का काम कैसे करती है?

(घ) मनुष्य की परिचर्या करने से क्या होता है?

(ङ) अकबर की इच्छा पूरी करने के लिए तानसेन ने क्या किया?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) बुद्ध के किस उपदेश की चर्चा पाठ 'ठंडा रेगिस्तान : लद्दाख' में की गई है?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए, "ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय पर्व को हृदय में छिपा न सकता था।'

(ग) सुदामा की दीन दशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(घ) एकांकी 'संगीत स्वामी हरिदास' का सार-संक्षेप लिखिए।

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए, "वह धर्म से मुसलमान था पर वतन का रिश्ता खून और धर्म के रिश्ते से ज्यादा मज़बूत होता है।"

4. दिए गए मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए-

(क) गला फाड़ना _____

(ख) चौपट होना _____

(ग) धौंस जमाना _____

(घ) गला छुड़ाना _____

5. **सुमेल कीजिए-**

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) प्यार	(i) मौत
(ख) देहात	(ii) शत्रु
(ग) मित्र	(iii) वैराग्य
(घ) अनुराग	(iv) शहर
(ङ) जिंदगी	(v) नफ़रत

6. **'ता' प्रत्यय जोड़कर लिखिए-**

(क) दरिद्र _____

(ख) समान _____

(ग) उच्च _____

(घ) नीच _____

(ङ) अलौकिक _____

(च) दिव्य _____

(छ) हीन _____

(ज) समर्थ _____

7. **उर्दू शब्दों का हिंदी समानार्थी शब्दों से मेल कीजिए**

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) मौका	(i) स्वीकार
(ख) मंजूर	(ii) अस्वीकार
(ग) इंकार	(iii) मंगल कामना
(घ) दुआ	(iv) संकेत
(ङ) इशारा	(v) अवसर

8. **उचित कारक चिह्न भरकर वाक्य पूरे कीजिए**

(क) देश _____ कुर्बान होने वाले कभी भुलाए नहीं जा सकते।

(ख) उनका नाम स्वर्ण-अक्षरों _____ लिखा जाएगा।

(ग) वीरों _____ परमवीर चक्र मिलता है।

(घ) अब्दुल हमीद _____ देश का नाम ऊँचा किया।

Practica's
SchoolEasy
School Management Made Easy

Always a teacher with you

READ
WATCH
LEARN

Scan and Watch Sample Video

Introducing
Chapterwise Video Lectures
Use our SchoolEasy ERP
Set up your school ONLINE with free pre loaded data
Complete Solution of exercises
Animations | Worksheets
Question Bank | Test papers
Online classes
and much more features of ERP to manage your school.

For Demo and Enquiry, Contact : +91-9548524525

is an innovative digital solution for teachers and students. It contains three modules delivering the content that can be used effectively with the coursebooks.

For Desktop Application

- Go to www.vardhmanbooks.com/digital library to download our UDC (Unique Digibank Code) desktop software.
- Open the software and get registered.
- Select the series and click on the Add Book Icon.
- Submit Book Series Code.
- Submit Digibank Code UDC (Unique Digibank Code) provided on the front page.
- Now, the digital version of the book would start downloading.
- Once downloaded, the digibook can be opened up inside the UDC software.

Scan QR code

For Mobile Application

Our animated e-books can be viewed and read on android mobiles as well.

How to enter in our Digital world?

- Download vardhmanbooks app from Play Store. (https://play.google.com/store/apps/details?id=com.siron.vardhman)
- Click on the Add Book Icon and then scan the QR code given here.
- Submit the book code (UDC – Unique Digibank Code) in the download panel and download your book.
- After downloading, a pop-up button appears on your app screen showing– yes or no asking for installation. When you click on the yes button, your e-book will get installed.
- Now, the e-book icon would be shown on the shelf. Click on it to explore a brighter, more active and cheerful learning world.

Web Support For Teachers

- Teacher manuals are provided for pedagogical guidance.
- Paper generator is also provided for creating and managing tests, exam papers from our pool of thousands of questions.
- Lesson Plan and Worksheets are also available on our website.
- We are also providing e-books for teacher's aid.

Vardhman Books International Pvt. Ltd.
Plot No. 16, Sector 10-C, IInd Floor, Vasundhara, Delhi/NCR-201012
Toll Free No. 1800-121-9968
info@vardhmanbooks.com
www.vardhmanbooks.com

Multimedia DVD Available on Demand

ISBN : 978-93-88513-06-7